आचार्य श्री प्रवचन

(11.07.2017 से 24.09.2017 तक)

भाग-7

गुरुवर की वाणी,

बने सबकी कल्याणी

अन्य भाग हेतु : aagamdata.blogspot.in

संकलन

मुनिश्री 108 संधानसागरजी महाराज

रात्रि विश्राम - सरांडी

7-7-17, चतुर्दशी, चर्या - माड़गी " नेमसर

8-7-17, गुरुपूर्णिमा-I " उरसरा " जांब

9-7-17, " II " हिवरा " भंडारबोडी

10-7-17, एकम " नागार्जुन रिसोर्ट, रामटेक प्रवेश 3.30 मध्याह्न

11-7-17 रामटेक क्षेत्र "मन्दिर नहीं ज्ञान मन्दिर" प्रातः 9.20

इसी आंगन में दो-तीन वर्ष पूर्व प्रतिभा स्थली के शिलान्यास अथवा भूमि-पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ था। मानस्तम्भ भी जितने रूप में देखा था अभी उसी रूप में सुरक्षित देखा। विकास का क्रम दुकानों की अपेक्षा कम है। अब वह रुका हुआ है या चल रहा है ये तो स्वयं कार्यकर्ता जानते हैं, फिर भी... उनका यह कहना है कि आपके बिना हम काम नहीं कर सकते हैं। ताली बजाने का प्रशिक्षण लगता है आपका अद्भुत है, कहां से प्रशिक्षित होकर आये हो?

वर्ष की गिनती के अनुसार प्रतिवर्ष छात्राओं की संख्या बढ़ तो गई फिर भी कम है। छोटी प्रतिभा स्थली है ना। अब रहेगी तो छोटी है। इस भांति से चलेंगे तो जो 1200 छात्राओं का स्वप्न आपने देखा है, वो कैसे पूरा करेंगे, ये आप पर आधारित है। योग डोंगरगढ़ - चन्द्रगिरी प्रतिभा स्थली

कई लोग कह रहे थे अब तो निश्चित जैसा ही लग रहा था। जैसा क्यों बोल रहे हैं इसका मतलब आप ही अनिश्चित हैं।

योग से इधर आना हुआ। ये ध्यान रखें- द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के निमित्त से ही काम हुआ करते हैं। आप लोगों के पास एक ही कार्य नहीं है। घर के कार्यों के साथ ये कार्य भी सम्पन्न करने का संकल्प लिया है। मन्दिर के कार्य में तो गति बढ़ जाती है। ये शिक्षण का क्षेत्र, संस्कारों का क्षेत्र है। इसमें आपकी छात्रायें (कन्यायें) जीवन को व्यतीत करेंगी। अतः आप पर आधारित होगा। विशेष योगदान देना होगा।

इन कार्यों में समय सबसे बड़ी बात है। समय सबसे बड़ा धन है। यदि समय नहीं दिया तो मात्र पैसे से भी काम नहीं होगा। समय पहले चाहिए। आप रात-दिन दुकान चलाते हो। रात इसलिए की मस्तिष्क तो चलता ही रहता है वो तो सरकार के डर से बंद रखते हो। योग से हमारा यहाँ आना हुआ। प्रायः कर गुरु पूर्णिमा हमारी रास्ते में ही पूर्ण हो गयी - दो पूर्णिमा थी पर दोनों रास्ते में ही हो गयी।

समय पर ही गाड़ी पहुँचती है पहले नहीं। आज का यह कार्यक्रम (प्रतिमा अनावरण) रखा था। इसमें आलस्य

न रखते हुए सहयोग करें। कहाँ से - क्या है समय पर आपको ज्ञात हो जायेगा। आप लोगों ने सहस्रकूट (1008 जिनबिम्ब) का संकल्प लिया है।

इतना अवश्य है कि एक ही नाप-तौल की बनी है। नाप-तौल के साथ इनका रूप-स्वरूप देखेंगे तो पता लगेगा सभी एक सी है। आपकी प्रतिमा यदि किसी अन्य ने ले ली तो आप उसके रूप को देखकर यह नहीं पहचान पायेंगे की मेरी कौनसी है? शिल्पकार कितना भी नाप-तौल से बनाये फिर भी चहरे में एकपना नहीं आ सकता। कुछ न कुछ अन्तर जरूर आयेगा पर इनमें ऐसा नहीं है। सभी 1008 के चहरे एक से रहेंगे। कार्यकर्ताओं ने जो आप लोगों को संकेत दिये है इस पर गौर करने का प्रयास करेंगे।

कल सुबह आ जाने पर नागपुर तो भीषण गर्मी में प्रसिद्ध है। कल ही मौसम एकदम परिवर्तित हो गया। मन्द-मन्द सुगन्ध पवन के साथ पानी। ज्यादा वर्षा हो जाती तो वह आश्चर्य नहीं होता। पंच आश्चर्य में यह हुआ। सामायिक में बैठे उससे पूर्व कुछ नहीं ज्यों ही सामायिक पूर्ण हुयी एकदम से परिवर्तन हो गया।

आप लोग अपनी स्थापना कलशों के माध्यम से कभी भी करें स्वतन्त्र है। हमारा तो - कब-

कैसा बता दिया जायेगा। डोंगर वालों ने संयम दिवस मनाया। संयम नहीं ले सकते तो संयम-दिवस तो मना ही सकते हैं। एक दिन न जाने में भी कैसे वहाँ बैठ गया। उस दिन मैंने प्रसंग के अनुसार कहा था अभी हमारे पास 15 दिन है। योग से 3-4 दिन और मिल गये।

संघ ने भी सोचा अब तो पक्का है-यहीं चातुर्मास। हमने देखा होता है तो अच्छी बात है। और वह हो गया किन्तु इस समय का बहुत अच्छे ढंग से सदुपयोग करना है। विशेष रूप से जो महत्वपूर्ण कार्य हैं उनको व्यवस्थित करना है। पाठ्यक्रम के अनुसार भर्ती तो होते जायेंगे। 12वीं के बाद निकलना होता है। 10वीं के बाद भी निकल सकते हैं पर बढ़ते क्रम में संख्या बढ़ती ही जायेगी।

कार्यकर्ताओं और प्रबंधकों का कर्त्तव्य है इसे व्यवस्थित करें। मन्दिर एवं सरस्वती मन्दिर में यही अन्तर है। मन्दिर में भगवान को विराजमान कर दिया बस चल जायेगा। इसके लिए वैसा नहीं पूरी व्यवस्था चाहिए। ये भी ध्यान रखें-हम लोगों को एकान्त बनाये रखें। हमारे लिए यही व्यवस्था है। नागपुर का बाजार बन गया तो। विद्यालय भी चलता है। भीड़ तो आती है पर चातुर्मास के लिए योग साधना का स्थान सिद्ध हो। बस इतना ही कहकर अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

13-7-17 "आशीर्वाद" प्रात: 9.25

आप लोग बड़े चतुर हो। एक-एक बात करते हो। पहले कहा- यहाँ बैठ जाओ, हम बैठ गये। फिर पावों का प्रक्षालन कर लिया फिर पूजन करने के उपरान्त कहा- महाराज! आशीर्वाद दे दो। पूजन की थी ही हमारा आशीर्वाद है। नहीं महाराज मुख से बोलकर- "आशीर्वाद"।

आशीर का अर्थ होता है मंगल/शुभ। मंगलरूप वातावरण के लिए हमारा आशीर्वाद है। आप सभी लोगों का जीवन मंगलमय हो- शुभ हो। शुभ जो शुद्ध के लिए कारण होता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

14-7-17 "बच्चे सुनते नहीं" प्रात: 9.20

आप लोगों को ज्ञात होगा कि विवाह के योग्य होने पर कोई भी व्यक्ति धर्म-अर्थ पुरुषार्थ के बाद काम पुरुषार्थ को धारण करता है। काम पुरुषार्थ के उपरान्त पुत्ररत्न की प्राप्ति हो जाये यह भाव रखता है। इसी अपेक्षा-उद्देश्य को लेकर विवाह करता है। योग से उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति भी हो गयी। अब वह छोटे से बड़ा हो गया।

योग्य संस्कार आदि सब कुछ हो गये किन्तु माता-पिता के प्रतिकूल होने लगा। योग से वही कोई

महाराज का आना हुआ। माता-पिता उस पुत्र को भी साथ लेकर आये। महाराज से कहा - बड़े योग से यह पुत्र प्राप्त हुआ है किन्तु.... किन्तु क्या? किन्तु महाराज यह सुनता नहीं है।

सुनता नहीं है मतलब बोलता भी नहीं है। गुंगा है, बहरा है। नहीं महाराज बहरा नहीं है- गुंगा भी नहीं है। महाराज यह बात नहीं सुनता है। देखो! बच्चों ने पकड़ लिया। अब क्या करें महाराज आप ही बताओ? महाराज क्या करें। बच्चे तो आपके ही है। आपने इसको इधर-उधर की बात सुना दी इसलिए अब आपकी बात नहीं सुनता।

इसीलिए यहाँ पर प्रतिभा-स्थली की स्थापना कराई गयी है। उसमें प्रत्येक प्रान्त से आपकी कन्याऐं/छात्राऐं शिक्षा ग्रहण कर रही है। आप सभी अच्छे-अच्छे मकानों में रहते है, वो सभी यहाँ रह रही है। विचार करो! वो सभी सोचते हैं कि यहाँ रहने से जीवन सुधर जायेगा और जिसका जीवन बिगड़ जायेगा उसका जीवन भी इनके द्वारा सुधर जायेगा। इसी प्रकार का विद्यालय पहले जबलपुर फिर डोंगरगढ़ तथा ये रामटेक ऐसे तीन स्थानों पर हो गया। तीनों जगह मिलाकर लगभग हजार-बारहसौ बच्चियाँ शिक्षा ले रही है।

गृहस्थ में संतान की प्राप्ति धर्म-

प्रवाह हेतु आवश्यक है परन्तु अच्छी संतान का होना भी परम आवश्यक है। आप सभी का पुण्य समझो जो इस प्रकार के विद्यालयों की स्थापना हुयी। देश में हजारों की संख्या में शिक्षा के केन्द्र खुले है और खुल रहें हैं पर आज शिक्षा का फल क्या मिल रहा है? आप जानते है। सभी विदेशी शिक्षा के प्रचार में लगे है।

हवा बहती है तो ध्वजा का रुख भी बदल जाता है। जैन धर्म भी एक ध्वजा लेकर चलता है। संतान संस्कार से रहित होगी तो ध्वजा का रुख बदल देन्गे। देश से विदेश जाने की बात करेन्गे। शिक्षा में संस्कारों का होना अति आवश्यक है, तभी वे अपने लिए अपने माता-पिता के लिए अपने समाज एवं देश के लिए कुछ कर पायेन्गे। सुख और शान्ति की स्थापना इसी शिक्षा पद्धति से होगी।

यहाँ सभी प्रान्तों से बच्चियाँ पढ़ती है फिर भी हिन्दी भाषा में पढ़ रहें है। चाहे महाराष्ट्र से हो चाहे कर्नाटक अथवा नागालैण्ड से हो। सभी एक ही राष्ट्र भाषा में पढ़ रही है। इन्हीं संस्कारों से बाद में जीवन को भी विषमता से समता की ओर ले जाने में सफल होगी इसी आशा और विश्वास के साथ समाज अर्जित धन में से कुछ निकालकर ये कार्य कर रही है।

कल नहीं परसों यहाँ कलशा की

स्थापना, हमारी तो स्थापना हो चुकी है। अब ये मत समझना की महाराज कहीं चले न जायें अब तो हम अपनी स्थापना कर चुके हैं अब कहीं नहीं जा सकते हैं।

धर्मध्यान के साथ सभी को यह योग मिले इसी भावना से इस वक्तव्य को विराम देता हूं। सही बात तो आपको यह याद रखना है - "बच्चे सुनते नहीं" डीमापुर - मणिपुर वहाँ के बच्चे भी यहाँ पढ़ते हैं। ये सभी बच्चे अपने - अपने माता - पिता को प्रसन्न रखेंगे इसी भावना के साथ!

अहिंसा परमो धर्म की जय।

गुरु विचार -

- महाराज बन गये किन्तु बच्चों की तरह खिलौनों पर ही ध्यान रहता है यथा - कमण्डल कैसा, पिच्छी, पैन - कॉपी, डायरी आदि इन सभी के विकल्प से ऊपर उठना चाहिये फिर गाथा सुनायी - भिक्खं चरवस रण्णे....
- प्रकाश बैशाखिया ने कहा - हमारे सामने अथवा फोन पर किसी भी व्यक्ति से दान लिखवाने में बहुत जोर लगाना पड़ता है आप लोगों के सामने सहज में अधिक दान दे देता है। आ. श्री. - यही विदेशी संस्कृति का प्रभाव है।
- आज बच्चों पर पढ़ाई का इतना दबाव डाला जाता है तथा 12 महिने साग - सब्जी (Storage वाली) खाने से मानसिक रुग्णता की मात्रा बढ़ गयी है।

" चातुर्मास स्थापना समारोह "

16-7-17 " गुरुवर होले-होले आयेंगे " प्रातः ९.२०

आज रविवार का ये पूर्वार्ध है। पूर्वार्ध समझते हो? अभी जनता आधी है। इसका ये अर्थ है। जब ये पूर्वार्ध पूर्ण हो जायेगा तो फिर उत्तरार्ध आयेगा। पूर्वार्ध वाले कहेंगे हमने तो जगह पकड़ ली, किन्तु आप तो अभी चले जायेंगे और वो लोग करके आ जायेंगे तथा यहाँ बैठ जायेंगे। फिर तो आपको... घबराओ नहीं जगह तो मिलेगी, बस थोड़ी खिसका-खिसकी करनी पड़ेगी।

गत साल को याद करो। भोपाल में संघ का चातुर्मास स्थापित हुआ था। वहाँ के लोग भी आये हैं तुलना करने को। ध्यान रखो वह मध्य प्रदेश था तो यह भी महाराष्ट्र है। धार्मिक अनुष्ठान किसी न किसी निमित्त को लेकर होते हैं। यहाँ के प्रबन्धकों एवं भारतवर्ष की जनता ने विद्या/शिक्षा का जो रूप देने का संकल्प किया है। कल कहा था अब संस्कार सहित शिक्षा की आवश्यकता है।

आज ऐसी शिक्षा की पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। कारण क्या है? सब लोग जानते हैं। कारण को जान, प्रमाद को दूर कर नींद को खोलकर इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। केवल पैसों से ही काम नहीं होगा, भविष्य की ओर ध्यान देने पर ही शुद्ध कर सकते हो। ये भी

व्यवस्था की बात है। [माइक खराब होने पर] एक व्यक्ति बोलने वाला हो और लाखों सुनने वाले हो तो बोलने वाले पर नहीं सुनने वालों पर जोर तो पड़ता ही है। ————

आप व्यवस्थित हो जायेंगे तो हम बोलेंगे अन्यथा अपने भावों को आप तक नहीं पहुँचा पायेंगे। भावों को आप तक पहुँचाने का भाव तो रहता है। अभी भजन में कह रहे थे। अब उस समय तो सुनना ही होता है, जब हमारा नम्बर आयेगा तभी बोल पायेंगे। बोल रहे थे - थोड़ा ध्यान लगा - गुरुवर दौड़े- दौड़े आयेंगे। ताली भी बजा दी समर्थन में। ————

———— गुरुवर कभी भागते हुये आयेंगे क्या? यह कड़ी कैसे जुड़ गयी? एक- आध बार व्याख्या तो करना पड़ेगी हमने सोचा। दौड़े- दौड़े तो आप आते हैं। हम तो होले- होले ही आते हैं। बोलो, सही है ना। सही है तो सही बोलना चाहिए। थे तो उड़ते- उड़ते भी आ जाते हैं। हमें भी जब कभी ऋद्धि मिलेगी तो उड़कर आ जायेंगे। उस समय ऋद्धि से काम होगा। सुनने वाला हो तो सुनाना सार्थक होता है। ————

———— पता लगा है आप लोग क्या- क्या तैयारी से आये हैं, हम तो तैयार ही बैठे हैं। आप सभी लोग उत्साह के साथ जिस उद्देश्य के साथ यह कार्यक्रम रखा गया है उसे सम्पन्न करें। इससे महती

प्रभावना कर तन-मन-धन लगाकर एक पुरुषार्थ सभी को करना चाहिए।

अभी इतना ही, पूजन के लिए आप लोगों ने बुलाया था। जिस स्थान पर यह कार्य (प्रतिभास्थली) होना है अभी हमें भी वहाँ पर ले गये। उत्साह के साथ सब लोग एकत्र हुये थे। मध्याह्न में कार्यक्रम तो है ही लेकिन ये भावना नहीं होना चाहिए की वर्षा न हो।

वर्षा नहीं होगी तो किसान क्या करेगा? ये भावना रखो की हमारा भी और किसान का भी काम हो जाये। आप लोग तो एयरकंडीशनर में बैठे रहते हैं। सब काम मिलकर सम्पन्न करो। राग-द्वेष किये बिना देखने का अवसर प्राप्त करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

कुछ हटकर →

- मंत्रों का प्रयोग मुनिराज पर भी होता है। उल्टी में काँच निकलते हैं। पेट में बाल जा नहीं सकता काँच कैसे जायेगा। इन सब चक्करों से बचकर रहना चाहिए।

संस्मरण - बात टड़ा की है, सर्दी का समय, आ० श्री की वैयावृत्ति कर रहे थे। एक मुनिराज ने तेल कुछ ज्यादा ले लिया। बस कुछ दिन आ०श्री० ने वैय्यावृत्ति ही नहीं करवायी। अपव्यय से बहुत नाराज रहते हैं गुरुजी।

16-7-17 "लक्ष्मी चली सरस्वती के पास" मध्याह्न ५.५।

हमने सुबह ही सोच लिया था कि ये याद रखना है। क्या याद रखना है? माइक देरी से मिल पायेगा अतः सबसे पहले जो पीछे खड़े होकर कार्यक्रम देख रहे हैं, सर्वप्रथम उन सभी के लिए हमारा आशीर्वाद पहुँचे। उन सभी को पृथक-पृथक आशीर्वाद और ये आगे बैठे हैं सभी को मिलाकर एक बार हमारा आशीर्वाद है। अब सुनिये - आपके यहाँ बोलियाँ हो गई, हमारी बोलियाँ चुप-चुप चलती हैं। हम सामने नहीं करते दिमाग में लाना चाहते हैं।

हमने पहले ही ये सब प्रतिभास्थली के लिए तैयार कर रखा था। पचास शिक्षिकायें पहले संकल्प लें तब तक नहीं खोला जा सकता। आज आप लोगों के सामने खोल रहा हूँ क्यों कि आप बहुत बोल रहे हैं। यहाँ की प्रबन्ध समीति, युवकों की टीम तैयार हो गयी पर ये सोचना चाहिए करेगा कौन? कहाँ से आयेगी इतनी शिक्षिकायें? इतनी संख्या में अविवाहित रहकर व्रती जीवन धारण कर छात्राओं हेतु समर्पित होकर अपने आपको समर्पित कर दिया।

तालियाँ क्या? गड़गड़ाहट के साथ होना चाहिए। अभी लगभग २००-२५० बहनें व्रती जीवन का संकल्प ले इस क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। वर्तमान की दशा को देखकर यह संकल्प लिया। व्रती जीवन भी ऐसा कि हम किसी से कुछ भी

मांगेंगे नहीं बल्कि छोटी-छोटी बच्चियों को संस्कारित कर विशेष रूप से तैयार करेंगे। इन्हें पुण्य क्या? पाप क्या? जन्म-मरण क्या? क्या हेय है-क्या उपादेय है? तत्त्व क्या? जीवन कैसे जियें? आदि-आदि शिक्षा के साथ सीखाया जाता है।

जो बातें आपके भी दिमाग में भी नहीं आती उन्हें बतायी जाती है। हाँ सुन-सुनकर थोड़ी बहुत आ जाती है। यह मन्दिर ऐसा मन्दिर है जिसमें मूर्ति नहीं है, किन्तु ज्ञान का मन्दिर-सरस्वती मन्दिर है। बड़े-बड़े लोग जज-वकील आदि जिन्हें पढ़े-लिखे मानते हो वे भी आज की शिक्षा-पद्धति को लेकर चिन्तित हैं।

आज ही पढ़ा था- बच्चों को कौनसी शिक्षा कैसे मिलनी चाहिए? भोपाल में भी कहा-बहुत बार कहता ही रहता हूँ क्यों की बिना कहे जागृति नहीं आती। उन संपादिका महोदया का कहना था कि हम जो शिक्षण दे रहे हैं वह पर्याप्त नहीं है। सम्पादकीय लेख था- लर्निंग कर्व (Learning Curve) उसमें लिखा पढ़े लिखे होने के बाद भी मात्र परीक्षा, शिक्षण, अंकज्ञान ही पर्याप्त नहीं है।

अब पुनः लौटकर श्रम से अपने जीवन को उन्नत बनाना है। आज पढ़े-लिखे होकर श्रम से दूर जा रहे हैं। तो क्या करें?

उसे ऐसी ही शिक्षा दी गयी है। बस बाबू बना दो - क्लर्क बना दो।

आपके पास ऐसी क्षमता है, पंचासों व्यक्ति को खड़ा कर सकते हो। आप बुरा नहीं मानना। मैं बुरा को भी बुरा समान मानता हूं, क्यों की जब बुरा लगता है तो आंखो में पानी आता है और बुरा आता है तो मुंह में पानी आता है। इसलिए बुरा न मानियो। हम अपने इतिहास को भूल चुके हैं। माता - पिता भी उस इतिहास की जानकारी से वंचित हैं। अपने पन्नो को पलट दिजिए।

हमारा अतित क्या था? उसमें सिखा श्रम तो सीखाते ही नहीं नहीं। परम्परागत व्यापार अथवा उद्योग नहीं करते। पहले भी बताया, सुनकर आश्चर्य होता है मात्र 5-6 हजार रु. की चपरासी की नौकरी हेतु M.A, M.Com, Phd. इंजीनियर आदि आवेदन कर रहे हैं। लाखों की संख्या में पद है मात्र 600। यह दशा म० प्र० की ही नहीं सभी प्रान्तों की है।

महाराष्ट्र में रोजगार की कमी है फिर भी यहां श्रम करना सीखाया जाता है। बम्बई जैसा शहर जहां कितने भी आदमी आ जाये तो भी - - । सागर भी समा जाता है। एक क्वाटर होता है। उसमें भी एक के ऊपर एक तीन लोग सो जाते हैं। उसमें भी जो दिन में काम करता है रात में सोता है, रात में काम करता है उसी स्थान में दिन में सोता है।

ऐसे लोग काम करते हैं। श्रमिक लोग काम की तलाश करते-करते पहुँच जाते हैं।

उस लेख के लेखक/सम्पादक लिखते हैं- अब समय पलट गया है शिक्षा के साथ दायित्व भी सीखना चाहिए। पहले लोग दायित्व कुमार के बारे में पहले बताते थे। गुरु जी ने भी कहा था। राजस्थान में अभी भी है या नहीं? पता नहीं। पूछता हूं तो ये लोग हव कहते हैं। राजस्थान में कितना भी बड़ा क्यों न हो उसे अपरिचित के यहाँ दुकान आदि में लगा देते हैं। हाँ "नौकर - जो कहे सो कर।"

जो कहते हैं वह करना पड़ता है। उधर से पिताजी पूछते रहते हैं - लड़का कैसा है? वह कहता है कुशल होता जा रहा है। आपकी दरकार नहीं- हम अपना घर बसायेंगे। दो मंजील नहीं २०० मंजील बनायेंगे। आज माता-पिता की कमाई खा रहे हैं। गुरुजी ने कहा था - आप कमाई- बाप कमाई है। जो स्वयं कमाता है उसे धीरे-धीरे खर्च करता है, जो ले तेल एक साथ डालदिया किन्तु तील-तील करके जलता रहता है वह अपव्यय नहीं करता है।

भारत में सबसे बड़ी बिमारी अपव्यय करने की है। आप ही देख लो- बच्चों को देते चले जाते हैं। वह अच्छे संस्कारों को कैसे दिमाग में रख पायेगा? पहले के लोग यदि 100रु कमाते

थे तो 10 रु. धर्मार्थ कार्य में लगाते ही थे। आपको बोलने के उपरान्त भी आगे-पीछे देखते रहते हो। कर्ज थोड़े ही लिया है ऐसा सोच लेते हैं।

कर्ज नहीं यह कर्त्तव्य है।

आय का स्रोत नहीं है उनके पास भी यह धन पहुँच जाता है। गरीबी है ही नहीं यदि कर्त्तव्य की ओर दृष्टि हो तो। इस इतिहास को पढ़ो- मांगने की जरुरत नहीं। यहीं पर भामाशाह की कमी नहीं रहेगी। बुलाने की भी जरुरत नहीं। हम करके दिखायेंगे। ऐसा युवाओं ने संकल्प लिया।

वे लोग कह रहे थे आपको हाथ पर उठना है महाराज! JBC (JCB) को तो उठा सकते हो पर हमारा हाथ नहीं उठा सकते हो। भगवान पर विश्वास है। आपके संस्कार बाप-दादा ने इस प्रकार के नहीं दिये। इन्होंने कहा हम 11 महिने में बनाकर बतायेंगे। पुष्टि के लिए बम्बई के आर्किटेक्ट को भी लेकर आये थे। मन हमारा - माया इनकी रहेगी। फिर जगह का भी प्रबन्ध हो गया।

लग तो रहा है, अभी भरोसा नहीं है। जब तक कार्य पूरा न हो तब तक पूर्ण मानना गलत हो सकता है। जैसे- जहाज भरा हुआ है। बस किनारे/तट तक पहुँचने पर भी डूब जाता है। आप लोग एक कदम भी चले नहीं कि पूरा मान लेते हो।

बस दो-तीन घण्टे में जय-जयकार लगा लिये और चल दिये।

जिन्होंने सिख लिया उन्हें अब रात-दिन एक करने की जरूरत होगी। पुरे के पुरे कार्य को समय में पुरा करना है। कम्पनी से लाभ लेना है। ऐसा काम कार्यकर्ताओं से कहना चाहता हूं। क्यों की इनको (जनता को) तो सुनना है ही नहीं। यहाँ आप द्वारा दिये दान से कैसे भवन तैयार हो जायेंगे जिसमें 1200 से भी अधिक छात्रायें रह सकती हैं।

हम आपके इस धन को नहीं जीवित धन को देखना चाहते हैं। छात्रायें भी कहें - हम तो नहीं जाकर रहेंगे। हमसे आकर कहती हैं- आप ऐसा आशिर्वाद दे दो हम तो प्रतिभा स्थली में ही रहेंगे, आगे भी प्रतिभा स्थली में ही रहेंगे। अभी पढ़ रहे हैं फिर पढ़ायेंगे। माता-पिता कहते हैं-आप ही संभालो इनको- ये आपकी हैं।

अभी बच्चियों ने कहा- "ये रामटेक की प्रतिभास्थली है" एक बार नहीं तीन बार मैंने सुना। "प्रतिभास्थली तो हमारी एक ही है।" तालियाँ कम बज रही है। रुक जाओ। अब छात्रायें क्या [illegible] बतायेंगी। वे छात्रायें चाहे रामटेक की हो या डोंगरगढ़ की हो या जबलपुर की हो अथवा अन्य किसी पुर की हो। और भी नाम आ रहे हैं। हव। हम तो आप हमारे पास

जीवित धन कितने भेजते हैं, यह देखते हैं। बूढ़ों को लेकर हम क्या करें?

हाँ वे अनुमोदना कर सकते हैं इस कार्य में। वे कह सकते हैं- आश्वासन दे सकते हैं कि हमारे बच्चों को रख लो। अब कहते हैं महाराज बच्चे पढ़े या न पढ़े बस संस्कारित हो जायें। बड़े हो रहे हैं बच्चे अब चिंता हो रही है। हमारे बाद क्या होगा इस पीढ़ी का? कुछ नहीं आप वहाँ से भी जाकर देख सकते हो। (स्वर्ग से) चर्चा कर सकते हो।

पालन-पोषण तो यहीं से होगा। ऐसी यह नींव तैयार हो रही है जिसकी परम्परा आगे तक चलेगी। आप लोगों ने केले का वृक्ष देखा होगा। केले का वृक्ष एक बार फल दे चुकने के बाद उसे निकाल दिया जाता है क्योंकि वह दुबारा फल नहीं देता। किन्तु यह एक ऐसा वृक्ष है जो नारंगी (संतरा) का है। एक वर्ष में भी दो बार फल देगा साथ ही वर्षों तक वह वृक्ष फल देता रहता है।

प्रतिभा स्थली में भी ऐसे ही संस्कार दिये जा रहे हैं जो कहीं गायब होने वाले नहीं हैं। नींव पक्की होनी चाहिए। अब आगे से नहीं कहना कि हम रामटेक के हैं। हम तो ... प्रतिभास्थली के हैं। ताली बजाकर बता दो। आदर्शमती जी को भी बता देना। शिक्षिकाओं को भी बता देना। बच्चों को भी ऐसी शिक्षा न दें। आपने

प्रतिभास्थली में प्रवेश पाया है। हजारों बच्चे भी क्यों न हो जायें सिद्धान्त सभी के लिए एक ही रहता है। क्यों की प्रतिभास्थली एक है।

आज्ञा भंगी है, माता - पिताओं की भी विकल्प नहीं रहता। हमारी बच्ची सुरक्षित रहेगी। ऐसी महाराज। छात्राओं को भी एवं उनके अभिभावकों को भी विश्वास हो जाता है। पूर्व भूमिका तैयार करने हेतु कुछ बहनें ब्रह्मचर्य व्रत लेकर अध्ययन कर रही है। पूर्व पीठिका नाम रखा उसका। लगभग 75-75 की संख्या में med - bed कर रही हैं। आदर्शमती के सानिध्य में इन्दौर में अभी भी काम कर रही हैं।

एक मिनिट भी नहीं मिलता उन्हें। चौबीसों घन्टे ऐसा कार्यक्रम से रहे हैं। वहाँ जैन कॉलोनी की समाज की समाज सब प्रबन्ध कर रही हैं। वे लोग बहुत अच्छे से व्यवस्था कर रहे हैं ताकि कोई दूसरा न बुला ले जाय। पढ़कर आती है, समय पर भोजन - पानी की व्यवस्था हो जाती है। लोग कह रहे हैं हमारे लिए भी मिलें - हमारे लिए भी मिलें। माला फेरो" बहुत कठिन है। मेरे हाथ में कुछ भी नहीं।

मैं तो मात्र निमित्त बना हूं। गुरु महाराज ने कहा था - "संघ को गुरुकुल बनाना" बस उनकी आज्ञा का पालन कर रहा हूं। कितना बन पाया है ये तो गुरुजी जाने। मैं तो अपना

कर्तव्य कर रहा हूँ।

पाँच बजकर सात मिनट हो गये हैं। कार्यक्रम तो हो गया। माथा ढील रहा है। टोपियाँ मजबूती के साथ पहनना। कार्यकर्ताओं से कह रहा हूँ। शान्तिनाथ भगवान हैं। आप लोगों ने अपनी लक्ष्मी दी है उस लक्ष्मी को भी शान्ति मिलेगी। यहाँ अशान्ति की कोई बात ही नहीं। किसी प्रकार की GST की आवश्यकता नहीं है। हाँ! यदि GST चाहते हैं तो वह अलग प्रकार की है।

डोंगरगढ़ में भी कहा था G का मतलब गोम्मटसार, S का मतलब समयसार और T का मतलब तत्त्वार्थ सूत्र। इन तीनों सूत्रों के माध्यम से अपने आपको कसेगा - बांधेगा - व्यवस्थित करेगा तो अवश्य शान्ति मिलेगी। लक्ष्मी को देख लेना, उसे शान्ति के साथ सरस्वती की सेवा करना है। ये देख लो। आजकल हमने उपदेश की मात्रा कम कर दी है। सुनने वाले सुनते हैं और पल्ला झाड़ - झूड़ कर चले जाते हैं। फिर भी सुना दिया। अन्त में गुरुजी को याद करते हुये -

तेरा ही ज्ञान सागर गुरु - तारो मुझे ऋषीश।
करुणाकर करुणा करो, कर से दो आशीष॥

अहिंसा परमो धर्म की जय। जै

17-7-17 "आनन्द भीतर में है" प्रातः 9.20

अभी पूजन चल रही थी। किसी ने कहा आनंद खड़े में नहीं बैठने पर मिलता है। मेरा ध्यान मेरे बाजू में रखी दोनों मूर्ति पर गया [एक खड्गासन है और एक पद्मासन है।] एक प्रभु बैठे हैं और एक खड़े हैं। दोनों के मुख की ओर देखें - आनंद की लहर बह रही है।

भीतर की ओर देखोगे आनन्द की लहर देखोगे एवं बाहर की ओर देखने में वह आनंद नहीं आयेगा। दोनों भगवान नासा दृष्टि हैं, ऐसी आपकी दृष्टि बन जाये, ऐसी भगवान से प्रार्थना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

प्रज्ञापराध →

"षट्खण्डागम के साथ-साथ यह शब्द "चरक संहिता" आयुर्वेद ग्रन्थ में भी पृष्ठ 427 पर देखने को मिला। उसमें तीन कारणों में सभी को समाहित करते हुए कहा - धी (बुद्धि), धृति (धैर्य) और स्मृति (स्मरण) इन तीनों के दुरुपयोग से प्रज्ञापराध होता है। प्रमाद में आना सबसे बड़ा प्रज्ञापराध है। बुद्धि का गलत प्रयोग जो आज सबसे अधिक हो रहा है। धैर्य नहीं रखने से - चंचल बाबा मत बनो तथा स्मरण ही नहीं की मेरा क्या कर्तव्य है / दायित्व है तो क्या करेंगे। स्वयं का भी और दूसरों का भी अहित करेंगे इस प्रज्ञापराध के द्वारा।"

14-7-17 "विषयों की इमली से बचें" प्रातः 9:20

प्रसंग है भोजन के समय का। माँ ने भोजन तैयार कर लिया है। लड़का अभी आ नहीं रहा है। वह आवाज दे रही है- वह कहता है आ रहा हूँ। आने से डर भी रहा है। माँ ने कहा- विलम्ब क्यों हो रहा है। माँ को तो ज्ञात है ही गड़बड़ी क्या है? फिर भी आवाज दे रही है। भोजन परोस देती है- वह प्रारम्भ कर देता है किन्तु धीरे-धीरे खाने लगता है। खाने में कुछ असुविधा करने लगा। अब कहता माँ खाया नहीं जा रहा है।

माँ भी विलम्ब क्यों कर रहे हो- चबा नहीं रहे हो? बच्चे समझ गये होंगे। चबाना नहीं हो पा रहा है। दांत तो है किन्तु--- समझ में आ गया। चबा तो तब सकते है जब दाँत गुठिलाये गये न हो। इमली खाने से, वह भी छिली के साथ नहीं साबुत वैसे ही खाने से दांतों की यह दशा हो गयी। अब दलिया में दूध मिलाकर घुटक लो।

बच्चों को कह रहा हूँ तुम खा नहीं पाओगे, खायेगा तो फिर घर का नहीं खा पायेगा। मां ने कहा- तुम्हें लड्डू मिलेगा परन्तु शर्त हमारी ये है कि अब इमली नहीं खाना। इस ढंग से सीधे इमली नहीं खाना। हाँ! मिलाकर दे दे तो अलग बात है। ये नियम लो तो हम लड्डू दे देंगे। हौले बच्चे ने कहा- अब नहीं खायेंगे। उसकी दोनो जेब की तरफ देखा बिल्कुल साहस भरी हुई अब वह संकोच में पड़ गया। धीरे-धीरे बाहर

बाहर निकालकर रखा, देर लग गया।

माँ कहती है बिमार पड़ जाओगे उसे नहीं खाना - फिर भी लोभ छोड़ नहीं पा रहा है। छोड़ना तो पड़ेगा। माँ छुड़वाकर रहती है। इसी प्रकार जिनवाणी माँ भी हमें बताती है बस वह छुड़वा नहीं सकती है। माँ सुना भी सकती है और छुड़वा भी सकती है। परन्तु माँ के हाथ में बच्चे हों तो। आज के बच्चे माता-पिता की परिधी से दूर हो चुके हैं।

आपको संस्कारित करेंगे होंगे तब जाकर बुरी आदत से भविष्य को उज्जवल कर सकते हैं। इस प्रकार माँ ने नहीं खायेंगे ऐसा नियम दिलाया। नहीं खाओगे तो समय पर खाने के लिए भी देना होगा। माता-पिता को चाहिए वह बच्चों को समय दें। समय पर सेवन भी कराना होगा। आज यह नहीं हो रहा है।

हमें पुण्य से हमारे गुरु, जिनवाणी माँ ने ऐसा शिक्षण - ऐसा सम्बोधन मिला। उनकी वाणी में दम है, ओज है, प्रभावक है। उनकी बात मेघ से कम नहीं - सुनने वाले को मंत्र मुग्ध कर देती है। भव्य जीव उस वाणी को सुनकर अपने जीवन को उज्जवल बना सकते हैं। बच्चों को भी इसी माध्यम से पुण्य मिलेगा। आप तो आते हो और चले जाते

हो परन्तु बच्चों को तो यहीं रहना है। सुनकर वे भी बदल सकते हैं।

अभी 8-10 वर्ष (साल) तक संस्कार पायेंगे फिर अन्य लोगों को भी दिशा बोध देने में सक्षम होंगे। आप लोगों की बुरी आदतें - बुरे संस्कार छुड़वा पायेंगे। माता-पिता ने भी ये सभी बच्चे सार्थक हो इसीलिए इस ओर भेजा है। उनके सपनों को साकार करेंगे। ये उन पर एवं स्वयं पर उपकार होगा।

"परस्परोपग्रहजीवानाम्" रट तो रखा है। किन्तु वास्तव में इसके माध्यम से जीवन में उपकार कर सकते हैं। यह सब निमित्त है - व्यवहार है फिर भी इसी के द्वारा अपने आपके ऊपर भी उपकार कर रहे हैं। स्वयं को समझना है। दूसरे के निमित्त से होता है - वे जो कुछ कर रहे हैं अतः धन्यवाद के पात्र हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

असमीक्ष्याधिकरण →

"बात डोंगरगढ़ की है। गर्मी का समय था। कक्षा लगने वाली थी। आ० श्री ने कुछ समय एवं कहा इधर धूप आ जायेगी। एक-दो महाराज बोले नहीं ये तो अभी चली जायेगी। कक्षा प्रारम्भ हो गयी - धूप नहीं गयी। कक्षा के मध्य में कहा देखो! ये होता है असमीक्ष्याधिकरण। दोष लगेगा आपको। पहले से जाँच-पड़ताल करलो फिर करो। जल्दबाजी नहीं करना चाहिए।

19-7-17 "प्रभु का राग- बुझायेगा आग" प्रातः 9.20

एक व्यक्ति अपने ही हाथों से एक पात्र में पानी भरकर के सिघड़ी के ऊपर रख था। गरम पानी उसे इष्ट था। जब वह पानी गरम हो गया, उसे ज्ञात हो गया कि इससे मेरा काम हो जायेगा। जिस प्रकार जिन हाथों से ऊपर रखा था उन्हीं हाथों से नीचे उतारना है, उसे ये याद नहीं रहा की पात्र गरम होगा। आप सुन रहे हैं। जी।

जिन हाथों से सिघड़ी पर रखा उस समय हाथ भी ठण्डे थे और पात्र भी ठण्डा। अब जिस समय उतारना है हाथ तो ठण्डे हैं पर पात्र/पानी गरम है। भूल गया और उतारने लग गया। पात्र जो था उसकी गरमी एवं वाष्प की गरमी के कारण उसने छोड़ दिया। नीचे गिर गया, नहीं नीचे नहीं गिरा सिघड़ी पर ही गिरा दिया। अब जो दहकते हुये लाल सुरख कोयले थे जिन्होंने हाथ को भी जला दिया पानी के माध्यम से, तो कोयले गरम होने चाहिए। ऐसा नहीं हुआ। जो कोयले लाल थे वे काले हो गये।

अपने हाथ जल गये थे पर उन कोयलों को देख विस्मृत हो गया। ये क्या मामला है? गरम कोयले पानी उबल रहा है, उस पानी से अग्नि कैसे बुझ गयी? बल्कि और जलना चाहिए। नहीं। जल के पास जलाने की क्षमता है, गरम हो तो किन्तु अग्नि को जलायेगा नहीं, अग्नि को तो बुझायेगा ही। पक्का ही

गया ना ?

इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति हो अथवा वो व्यक्ति समझ में आ गया। शास्त्र की बात एवं गुरुओं की बात समझना चाहिए। रागपूर्वक यदि पंचेन्द्रियों का सेवन करेंगे वो तो जलाने का ही काम करेंगे जब की रागपूर्वक भगवान की भक्ति करेंगे वह बुझाने का कामकरेगी। ताली क्यों ? तो वह राग को जलायेगा अथवा राग को बुझायेगा।

भगवान की भक्ति से बुझायेगा तथा पंचेन्द्रिय के सेवन से द्विगुणित करेगा (बढ़ायेगा)। आप क्या करना चाहते हैं ? राग को छोड़ना चाहते हैं, भगवान से राग कर लो। वह राग बुझाने के ही काम आयेगा। समय की कटौती है। आप लोगों के पास भी अधिक समय नहीं है और हमारे पास तो समय रहता ही नहीं है। हमने आप लोगों को दे दिया जिससे आप लोगों के हाथ न जलें और उस राग से पंचेन्द्रिय के विषयों को बुझाने का कर्म करें। इस हेतु वितराग देव-शास्त्र-गुरु का ही सहारा लेना होगा जिसके द्वारा आप अपना कल्याण कर सकते हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

विशेष -

- ऐसी क्रान्ति किस काम की जिसमें हमारी शान्ति भंग हो।
- मिथ्यात्व एवं अज्ञान में अन्तर है।
- उपादान के अनुसार ही कार्य हो - एकान्त से ऐसा नियम नहीं है।"

20-7-17 "कैसे उतरे पपड़ी परिग्रह की" प्रातः9.20

कोई व्यक्ति जल्दी में था। भाग रहा था और ज्यादा वेग से भाग गया और नीचे देख नहीं पाया और ठोकर लग गयी फिर क्या हुआ ? गिर गया। तो ऐसा गिरा कि अब अपने आप उठने की हिम्मत नहीं कर पा रहा है। दूसरे ने सहारा देकर उठाया। उसके कंधों पर हाथ रखकर किसी प्रकार से उठा। अब घुटनों पर घाव हो गया, इलाज चला। पूरा ठिक नहीं हुआ। धीरे-धीरे घाव पुर गया।

अभी चमड़ी नयी-नयी है। उसे पपड़ी बोलते हैं। वह पपड़ी जम गयी धीरे-धीरे वह भी निकलने को है। अपने आप निकल रही है। ऐसा करें, उसे अपने से निकाल दिया जाय। नहीं-रक्त आ जायेगा। हाँ उस खाल का एक प्रकार से हड्डी-माँस से एकाकार है। वह तो अपने आप ही निकलेगी आप नहीं निकाल सकते हो। यदि गलती से थोड़ा सा धक्का भी लग जाता है तो आँखो मे पानी आ जाता है। जैसे-जान निकल रही हो।

सुन रहे हो कि नहीं। जी आचार्य श्री सुन रहे हैं। (बच्चे) आप लोग कम समय में चाहते हैं, इसलिए हम और कम कर रहे हैं। धक्का लग गया, तो चिकित्सा जो कि थी वह खराब अब पुनः घाववदार बन गया। ये उदाहरण इसलिए दिया जा रहा है, आप

लोग परिग्रह को पीछे लगा रखे हो यदि थोड़ा सा खिसक जाता है तो 12 बजे भी तारे दिखने लग जाते हैं, क्या होगा?

इतने दिन मेहनत करके कमाया है। अतः कैसे छोड़ दें। इसीलिए आचार्यों ने कहा है कि परिग्रह छोड़ो। हाँ, महाराज इतना आसान नहीं है। आपने तो कभी परिग्रह रखा नहीं, जो छोड़ते। कुछ लोग पूछते हैं महाराज! आपने तो परिग्रह कभी रखा नहीं फिर ये कैसे शांत हो गया? मैं कहता हूँ- आप लोगों की शक्ल देखकर शांत हो गया कि हम ही अच्छे हैं।

चिपका कर पुनः चिपकाना तो और कठिन। भागने वाले भागो हम तो चलकर ही आयेंगे। आप यहाँ आकर भी नहीं पहुँच पायेंगे। इस बात के लिए आप भी स्वतन्त्र हैं, हम भी स्वतन्त्र हैं। मानना है तो मानो ये आपकी मर्जी। जल्दी न करिये। घबराना भी नहीं। धक्का नहीं लगना चाहिए। दूसरे के पदार्थ हैं दूर से देखियो। हम तो पहले चले जाते हैं कुछ ऐसा सोचते हैं।

उत्तम कार्य है पहले बाद से मतलब नहीं। जब जागे - तभी सवेरा। धीरे-धीरे परिग्रह/मोह की चिपकन को ढीला/कम करते जाइये। ताकि वह चमड़ी पुनः [redacted] जायेगी, पता भी नहीं कि

यहाँ पर कोई था।

घाव बहुत दिन के हैं, भरने में समय तो लगेगा फिर भी मरहम - पट्टी लगाकर ठीक कर लो। आज तक पूजन वाले ही शामिल अब तो अभिषेक वाले भी शामिल होने लगे हैं। धारा करने वाले हैं। उन्हीं के माध्यम से शान्तिधारा होगी। हमें भी उस धारा में से कुछ मिलेगा।

कृत - कारित - अनुमोदना का प्रभाव तो देखने में मिलेगा। सब अपनी - अपनी दुकान को आगे बढ़ाने में तत्पर रहते हैं। हमारे नाम से कर रहे हो, ध्यान रखना। नाम तो हमारा दिया हुआ है। धार्मिक भाव इस निमित्त से बनते हैं तो हमें कोई बाधा नहीं है। सुरक्षित क्षमनिकाल लेना चाहिए। घाव को याद रखीयो। ये मुख्य बिन्दु हैं - उदाहरण है इसको ध्यान रखने वाला ही अपने घाव को साफ कर सकेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

Notes -

- मुनिराज (साधु) को अष्टपाहुड़ में किसी अपेक्षा से दर्शन, तीर्थ, सिद्ध, अरिहन्त, आचार्य, उपाध्याय कहा। अतः हमें अपनी योग्यता पहचानने की आवश्यकता है। दृष्टि सदैव आत्म केन्द्रित रहना परम आवश्यक है।

श-7-17 "बचें कषाय की कणिका से" प्रात: 9.20

कल एक उदाहरण प्रस्तुत किया था उसी प्रकार उसी विषय को प्रकारान्तर से लेकर एक दूसरा उदाहरण दिया है। रुई के ढेर हैं, आपने उसे साफ सुथरा बनाया। पहाड़ की भांति लगी है किन्तु कब-कैसे असावधानी हो गयी पता नहीं किसने आग लगा दी और देखते ही देखते एक सेकण्ड में वह रुई का ढेर साफ हो गया। उसी समय हवा भी चलने लगी सो वह राख भी उड़ गयी।

करोड़ों की कीमत वाली वह रुई कहाँ चली गयी पता ही नहीं चला। यह असावधानी है वह किसी विज्ञ (विद्वान) की नहीं अज्ञानी की ही असावधानी कहलायेगी। विद्वान ऐसा नहीं करेगा। एक छोटी सी कणिका भी क्षण मात्र में उस ढेर को साफ कर सकती है। इसी तरह कषाय की छोटी सी कणिका भी क्या नहीं कर सकती। आप सोचें मैं तो सुबह से शाम तक भगवान का ही नाम लेता हूँ, छोटी सी कषाय से कुछ नहीं होगा, ऐसा मानना गलत होगा।

इसी प्रकार का उदाहरण कल दिया था। कल व्रण (घाव) के बारे में बताया। घाव हो गया चिकित्सा कर रहे हैं, थोड़ी सी हाथ लग गयी सुखी पपड़ी उखड़ गयी। पुनः घाव पूर्ववत् तैयार हो गया, उसी

प्रकार कषाय का स्वरूप है।

बहुत कषाय की आवश्यकता नहीं। वह आपको कहां ले जायेगी कोई पता नहीं। ये उदाहरण देकर गुरुदेव ने हम लोगो को समझाने का प्रयास किया है और सावधानी की ओर ले जाने का पुरुषार्थ है। हम चाहे वे आकर बचा दें ऐसा नहीं। भगवान- गुरुदेव सब जान रहे है। आगम अनुसार हमें सब बता देते है अब हमारी सावधानी हमें रखना होगा।

जैसे अग्नि से सावधानी, जब तक ठीक नहीं होता तब तक सावधानी की आवश्यकता है, उसी तरह कषाय से सावधान रहना जरूरी है। कषाय नहीं करते. ऐसा नहीं कह रहा- सावधान कितना, रहते है यह जरूरी है। कौन कितनी कषाय करता है। बाद में पश्चाताप करते है।

दुनिया की यह रीत है काम के बाद पश्चाताप करना जब की ज्ञानी (मुमुक्षु) की रीत है काम के पूर्व सावधानी रखना, पश्चाताप की आवश्यकता नहीं। करने के उपरान्त भी करता चला जाता है। उसके बारे में कुछ कहना ही नहीं है। आप लोग उस श्रेणी में तो नहीं है फिर भी जिस श्रेणी में हैं उसे कम करेंगे तो अवश्य ही भविष्य में नजदीक (पास) पहुँच सकते है, जहां महावीर भगवान

पहुँच गये हैं।

इसका अर्थ ये हो गया हमारी ये ध्वनि बिना माइक के भी दूर तक पहुँच जाती है। (लाइट जाने पर) इस प्रकार सावधान हो जायेंगे तो अनंतकालीन कषाय को तोड़ सकते हो। साधन-सामग्री व्यवस्था करने वाले उपलब्ध कराते हैं किन्तु पराश्रित होने के कारण ये होता है। आप अपने मन को, कानों को उपयोग में लेकर खड़ा कर सकते हो। अन्य इन्द्रियों के व्यापार को रोक सकते हैं।

इस प्रकार छोटी ध्वनि से भी बड़े सार की बात समझ में आ सकती है। यह दूसरे के सामने रख सकते हैं। पहले के लोग इस प्रकार स्पीकर के माध्यम से नहीं अपितु आवाज पकड़ने का प्रयास करते थे। आज ध्वनि यंत्र को कानों में लगाने के बाद भी फर्क नहीं पड़ता। इस निद्रा से बचाने वाला कोई नहीं। निरन्तर पुरुषार्थ अपेक्षित है।

ध्वनि में क्या अर्थ है, क्या प्रयोजन है, क्या भाव है ये गुरुदेव नहीं आपको पकड़ना है। जो व्यक्ति इसके आशय को पकड़ लेता है, अपने जीवन में लाता है उसकी सफलता हो जाती है। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ कि यह कर्मों के कारण जो

कुछ भी उपलब्ध है वह भी कम नहीं हैं। आगे बहुत सामग्री होने के उपरान्त भी कानों की क्षमता कम होगी फिर ये लाउडस्पीकर भी काम के नहीं। कानों में आकर भी आवाज पकड़ने की क्षमता नहीं तो क्या समझा सकेंगे।

सूरज ढल चुका है- अंधेरे के पहले अपने घर में आ जाओ। अन्यथा कितनी भी लाइट क्यों न जला लो उसमें आँखो की रोशनी भी कोई काम की नहीं रह पायेगी। अतः कषाय की कणिका में असावधान न रहो। सावधानी से उस कणिका को भी साफ करने का अवश्य ही पुरुषार्थ करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

Notes Date

ॐ

अतिशय क्षेत्र - रामटेक
श्री गुरवे नमः
चातुर्मास 2017

24-7-17 "नियन्त्रण हो वेग पर" प्रातः 9.20

शास्त्रकारों ने हम लोगों के भावों / परिणाम की पहचान के लिए बहुत पुरुषार्थ करके हमारा ध्यान उस ओर आकृष्ट किया है। ये बात अलग है कि हम उसको कहाँ तक समझ पाते हैं। हमारे परिणाम किस प्रकार के होते हैं। ये परिणाम ही हमारी मन-वचन-काय की चेष्टा में तथा हमारी वृत्ति में फलीत होते हैं। उनके माध्यम से हटाना चाहें तो हटा सकते हैं, उसमें हमारे पुरुषार्थ की आवश्यकता है।

आचार्यों ने बताया कुछ कर्म बांधते समय ऐसे परिणाम होते हैं जो वज्रलेप की भांति होते हैं। वज्रलेप का मतलब वह बहुत दिन तक नहीं मिटता। जैसे हजारों वर्ष तक भी मूर्ति आदि पर जो वज्रलेप होता है, उसका कुछ नहीं बिगड़ता। ऐसे ही परिणामों के समय बांधा, जिसके उदय में फल भोगना ही पड़ता है। इसका कारण भीतर तीव्रता के साथ बांधा है। परन्तु जब से हमें ज्ञान हो जाता है तो अब वे बांधे गये कर्म बहुत दिन तक ही रहे ऐसा एकान्त नियम नहीं है।

चाहे तो समाप्त कर सकते हैं, समाप्त करने की क्षमता आपमें विद्यमान है। उदाहरण के लिए जैसे - मोटर गाड़ी है, उसमें माइलेज की पहचान के लिए मीटर लगा होता है। उससे पता लगता रहता है कि एक घण्टे में कितनी दौड़ सकती है। मान लिजिए 70 की स्पीड से आप गाड़ी चला रहे हैं अर्थात एक घण्टे में 70 किमी.

की स्पीड आपने दे दी।

अब आपको गाड़ी नियन्त्रण में लाना है तो धीरे-धीरे कम करके एक किमी. की स्पीड से भी नीचे ला सकते हैं। सुन रहे हैं आप लोग। जी। हमने स्पीड दे दी अब नियन्त्रण कैसे करें। ऐसा नहीं है, सब व्यवस्था है। 70 किमी. की स्पीड को एक किमी. पर लाना हँसी-खेल नहीं। यदि सही तरीके से न करें तो कई उसमें ही गुलाटी खा जाते हैं। दूसरा जब गति तेज होती है तो आनन्द आता है। वही गति इतनी नीचे की एक किमी. पर भी आते हैं जिसमें व्यक्ति चलती गाड़ी से उतर भी सकता है और वापस बैठ भी सकता है।

कौनसी गति चाहिए आपको बोलो। अभी वह कह रहे थे न बोली कौन लेना चाहता है। इतना नियन्त्रण कर सकते हैं ऐसा हम भाव कर सकते हैं। आप तेजी में भगा देते हैं। जब बात समझ में आ जाती है तो परिणामों में शान्ति आती है। कुछ परिणाम मंदता से तीव्रता की ओर एवं कुछ परिणाम तीव्रता से मंदता की ओर जाते हैं। यदि आप इन परिणामों के प्रति जागरूक हैं तो कोई भी आपको उत्तेजित नहीं कर सकता है।

श्रावक धर्म में तो पूरी कषाय मिटती ही नहीं, मुनि महाराज के भी पूरी कषाय नहीं मिटी, परन्तु उसमें हल्कापन - गाढ़ापन बना रहता है। आपके परिणामों के अनुसार लेखा - जोखा होता रहता है। इतनी स्पीड कम हो सकती है - परिणामों के द्वारा। तब जाकर सम्यग्दर्शन की योग्यता बनती है। उन परिणामों में और ऊपर बढ़ जायें तो देशव्रती तथा और अधिक तैयारी है तो मुनि भी बन सकते

है।
इस प्रकार कषायों की तरतमता के बारे में जाने। आप लोग रात-दिन तो कषाय करते ही रहते हैं। एक सेकण्ड भी वह नहीं छुटती। यदि दुकान पे बैठे हो तो दान की बात दिमाग में आती ही नहीं। क्यों? ठीक कह रहा हूँ न मैं? यदि ठीक नहीं हो तो कह दो। और जब रामटेक की ओर आ जाते हैं तो - देखा जायेगा। छोड़ दो। ये तो होता रहता है।
इसलिए हम कहते हैं ऐसे क्षेत्रों में आप अपना धन नहीं भी लगाना चाहे तो भी लगा देते हैं। परिणामों का खेल है। कंजुस भी आगे बढ़ जाते हैं। सब मिलकर उसको एक-आध बार ऊपर चढ़ा ही देते हैं। जब वह होश में आता है तो - मैं इतना आगे बढ़ गया। विश्वास नहीं कर पाता है। इस तरह प्रभु के चरणों में आने से वर्तमान के भी और अतीत के भी परिणामों पर नियन्त्रण आ जाता है।
धार्मिक अनुष्ठान का यही लाभ है। पूर्वजों ने इस प्रकार के क्षेत्रों का निर्माण किया आज लाखों की जनता धर्म लाभ ले रही है। यहाँ हमारा कौनसा चातुर्मास हो रहा है - पाँचवा पहला। हाँ! प्रतिभास्थली की अपेक्षा यह पहला चातुर्मास हो रहा है। आगे भी भूमिका बन रही है। पहले के लोगों ने किया आज उपलब्ध हो रहा है अब आज आप कुछ कर जायेंगे तो आने वाली पीढ़ी उसका लाभ लेगी।
पंचवर्षीय योजनायें बनती हैं, आने वाली सरकारें भी उस कार्य को पूर्ण करने में लगती हैं। कोई भी स्थायी नहीं। जीवन मिला तो हमें पुरुषार्थ करना चाहिए। रोड पर गाड़ी चलाते हैं स्पीड एते Top पर भी चलाते हैं, किन्तु नियन्त्रण में रखते हैं। इतनी

कुशलता पूर्वक चलाते हैं कि जब चाहे रोक भी सकते हैं।

चालक (ड्राइवर) भी वही कुशल माना जाता है जो वेग को नियन्त्रण में कर लेता है। गिरना स्वभाविक है। दूसरो को बचाना पुरुषार्थ गम्य है, आप सभी का पुरुषार्थ इसी दिशा में हो। इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

25-7-17 "कर्म वेग में बहना नहीं" प्रात: 9-20

तैराक है तैरना जानता है। नदी है नदी में पानी भी है किन्तु तैराक कह रहा है इस समय मेरी तैरने की कला काम नहीं आयेगी क्यों की ये सावन का महिना है। सावन में पानी बाहर नहीं किन्तु वेग बहुत अधिक है। इतने वेग में मैं हाथ भी नहीं पैर भी नहीं चला सकता। अत: नदी पार करना कठीन है। फिर कब पार करेंगे? वह कहता है- वेग कम होने दो, फिर पार करेंगे।

अभी बाढ़ है, पानी का वेग बहुत तेज है। तैरना भी जानता है। सब कुछ है पर तैरा तब जाता है, जब पानी थोड़ा कम हो। वेग क्या वस्तु है? बुद्धि से आप लोग सोचिएगा। अब वह प्रतिक्षा करने बैठा। पानी कम नहीं हुआ, वेग में कमी अवश्य आ गयी, वह कहता है अब मैं तैर सकता हूँ। नये तैराक अभी भी नहीं तैर सकते।

इसी प्रकार हमें भी यदि सम्यग्दर्शन की, चारित्र की प्राप्ति करना है तो जिस समय कर्मों की बाढ़ आती है उस समय कर्मों की काट (निर्जरा) नहीं कर सकते हैं। इसलिए जो समझदार होते है वो क्रोध उबल रहा है, पारा गरम हो रहा है, उस समय

चुप रहना ही ठीक है।

दुकान पर ग्राहक आता है, सौदा लिया किन्तु काफी बाते करने लगा तेज आवाज में किन्तु आप कुछ नही कहते क्यों की गड़बड़ हो जायेगा, माल लेना बंद कर देगा। वह तेजी से भी बोलता है तो भी आप कहते हैं "दद्दा"। भले ही नाती के बराबर उम्र का हो। काम चलाना है ना।

इसी तरह कार्यकर्ताओं को समझना चाहिए। दद्दा - दद्दा, कहकर अपना काम निकालना चाहिए, अन्यथा चातुर्मास में काम कैसे ले पायेंगे। हमेशा तेजी में ही रहे ऐसा नहीं है। क्रोध आया है तो हमेशा ही रहेगा ऐसा भी नहीं। देखकर काम लेना है। हर समय कामियाब हो ऐसा नहीं है चाहे कोई भी हो। अन्तर्मुहूर्त के बाद अलग परिणाम होते हैं।

जब विशेष उदीरणा का काल हो तो उस प्रसंग को टाल करके थोड़ी बहुत प्रतिक्षा करके फिर पुरुषार्थ करना चाहिए। हर क्षेत्र में यह पुरुषार्थ करिए सूत्र हमें काम में लेना चाहिए। कर्म करने से पूर्व भी क्षेत्र - काल देखना जरुरी होता है। ये इस क्षेत्र - काल में फले ही ऐसा नहीं है। भिन्न - भिन्न क्षेत्र एवं भिन्न - भिन्न समय पर भिन्न - भिन्न फल मिलता है। यही सम्यग्ज्ञान की महिमा है।

हम तो अब व्रती बन गये हैं सब कर लेंगे - ऐसा नहीं है। बीच में खांसी - ठसका भी आ सकता है। जैसे - मिर्च का कोई सामान आने पर ठसका लग गया अथवा छींक आ गयी। कभी-कभी छींक आने पर अन्न भोजन नलिका की जगह श्वास नलिका में चला जाये, मान एक कण तो...। ऐसे में कभी - कभी आंखे भी सफेद हो जाती है। इसलिए आचार्यों ने कहा भोजन के समय मौन से।

भोजन करें। इस समय हंसना नहीं, नहीं तो दुनिया आप पर हंसेगी। भोजन के समय ध्यान इधर-उधर नहीं देना चाहिए।

भावी कर्मों की बाढ़ लगी है, यह सोचकर हमेशा अपने को सतर्क होकर कर्म करना चाहिए। जैसे - बोली चल रही है तो मंदी के समय आप भाग पार हो जाते हो - देखना पड़ता है। इसी प्रकार कर्मों में भी देखना पड़ता है। आपने विचार किया तो बंध भी आपको ही होगा। अब आप हठात कुछ नहीं कर सकते। कर्मों का भी अपना जोर रहता है, आपको बिल्कुल दबा देगा।

जैसे वृषभनाथ भगवान को केवलज्ञान की प्राप्ति में एक हजार वर्ष लगे, भगवान महावीर स्वामी को 12 वर्ष एवं भरत चक्रवर्ती को मात्र अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान की प्राप्ति हो गयी। कितना अन्तर आ गया। कारण तो भगवान ही जानते हैं। इसी तरह सम्यग्दर्शन को लेकर बैठे हो। कषायों में आकण्ठ (आपूरित) डूबे हो। अंत में हार जाओगे। कर्मों के वेग को समझना अति आवश्यक है। सुचारित्र धारण करना है तो उसके लिए पहले कुछ मर्यादायें होती हैं इनका पालन करना आवश्यक है।

गाड़ी हमारी है, सड़क भी हमारी है, सब कुछ आपका है फिर भी झपकी आ जाए तो कुछ भी आपका नहीं। ड्राइवर अपने बाजु में सोने वाले को कभी नहीं बैठाता। भले ही मालिक भी क्यों न आ जाए। तो चालक (ड्राइवर) कहता है पीछे बैठियो हमारे साथ नहीं बैठना। निद्रा कब आ जायेगी पता नहीं। ऐसे ही इस क्षेत्र में भी कर्म कब आपको मुक्ति दिला देगा पता नहीं। पुरुषार्थ तो आपको करना ही होगा। इस

कर्म से राजा - रंक हो जाता है, माली - मालामाल हो जाता है।

जो ज्ञानी होता है वह इस कर्म सिद्धान्त को जानता है। जो सही होता है उसको ग्रहण करता है। इतना ही पर्याप्त है। नाव में बैठकर पार होना अलग वस्तु और तैरकर पार होना अलग वस्तु है। आप सभी पानी के वेग को देखो फिर तैरने की कला को काम में लेवो।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

२५-7-17 "प्रज्ञापराध" मध्याह्न 11:40

जो "प्रज्ञापराध" शब्द षट्खण्डागम में आया उसी का अनुकरण जैनेतरों ने भी किया। "चरक संहिता" के पृष्ठ - ४२३ पर बहुत विशद रूप में दिया। भोपाल के चिकित्सक सम्मेलन में हमने यह शब्द डाक्टरों के लिए दिया था। यहाँ तो उससे कई गुना अधिक खुलासा कर दिया। तीन बातें प्रमुख बतायी - धी, धृति एवं स्मृति।

(1) धी अर्थात बुद्धि बिगड़ जाये तो कुछ भी नहीं रहेगा।

(2) धैर्य के खोने से ही हम प्रज्ञापराध करते हैं।

(3) स्मृति = याद ही नहीं रहेगा तो हम क्या कर सकेंगे।

यह प्रज्ञापराध शब्द बहुत व्यापक है; जो सभी क्षेत्र में लागु होता है। चाहे वह किसी भी समय में हो अथवा किसी भी स्थान का हो। इसे जानना परम आवश्यक है। यदि हमने बेमेल आहार लिया तो इन्द्रीयाँ तो होगी ही। जिम्मेदार कौन होगा? यह प्रज्ञापराध है। अपनी बुद्धि का सही प्रयोग नहीं करते तो प्रज्ञापराधी है। धैर्य - विश्वास होगा तो बिमारी को भी रुकना पड़ता है। अभी नहीं आ सकती मूलाचार में भी आया - जिसे द्रव्य - क्षेत्र - काल - भाव का ज्ञान नहीं वह मुनित्व को सुरक्षित नहीं रख पायेगा।

आगम में प्रज्ञापराध

के साथ ही "परिणाम पत्थे[illegible]" ये भी मिथ्या।
"तद्व्रत मचारितस्य यत्र न संशय गुभामारोहति शरीर मनसी।" "यद् निष्ठये तद्भवये" ये सब सूक्तियाँ इसी का संकेत करती है कि हम प्रज्ञापराध से बचें।

स्मृति का अर्थ मन-गुप्ति से भी लगा सकते है। जिसके मन गुप्ति नही वह अहिंसक भी नही होगा। वचन गुप्ति भी अहिंसक होने के लिए जरूरी है।

यदि शरीर को ध्यान में रखकर आहार-पानी नही करते तो इपघात का दोष लगता है। ऐसा व्यक्ति अकाल मरण कर रहा है। अतः त्रिदोष शमन वाला ही आहार लेना चाहिए साथ ही ऐसा आहार हो जिससे व्याधि शमन हो क्योंकी आहार ही औषधी है। आहार-विहार और निहार का ज्ञान मोक्षमार्ग में चलने हेतु अति आवश्यक है।

जब आहार लेते है तो उस समय कफ की मात्रा शरीर में बढ जाती है, पचते समय पित्त की मात्रा बढती है और बाद में वात की मात्रा। वैसे ही किशोर अवस्था में कफ बहुलता, युवावस्था में पित्त बहुलता तथा वृद्धावस्था में वात बहुलता होती है।

निश्चिंतता से नींद अच्छी आती है।
निद्रा विजय के दो कारण - किये गये कार्यों को याद करना एवं तत्त्वों का चिंतन-मनन करना।
ज्यादा याद रखने से भी पागल हो जाते है। अयन का मतलब स्मरण में अधिक रखना। अकालमृत्यु का हेतु कहा। अ[illegible] मो चिंतय कहा। दीर्घ श्वास लें - छोडे नही। जांच कराना ठिक नही क्योंकि मशीनों में बहुत अन्तर आ जाता है। रिष्ट/नाडी[illegible] जांच सबसे अच्छी होती है।

26-7-17 "बंध काटने का साधन अनुबंध" प्रात. ७.३०

यहाँ पर कोई भी ग्रुप को बुलाना चाहते हैं तो नीचे ही रखें। चाहे वह वीरा ग्रुप हो या प्यारा ग्रुप। अभी पूरा मंच हिल रहा था। दूसरी बात सामने जनता बैठी है, जो यहाँ आ जाये और आपको नीचे बिठा दिया जाए तो क्या होगा। इसलिए ध्यान रखें। माइक पर जो नाम लेकर बुलाते हैं वे बड़ी सावधानी रखकर बोलें। वे नहीं बुलाते तो वे नहीं आते।

पहले मैं नहीं कहने वाला था, फिर भी कह दिया ताकि अवगत हो जाये। दूसरे को भी शांत हो जाए। आगे से सावधानी के साथ हम कार्य करें।

प्रसंग एक बैल को उसके मालिक ने चरने के लिए अपने खेत में छोड़ दी और वह चरता-चरता उस खेत को छोड़कर के दूसरे के खेत में हरी-हरी मुलायम घास आदि को खाता चला गया। मालिक ने बैल के मालिक से शिकायत कर दी। उसने कहा आज के बाद शिकायत नहीं होगी आज हो गयी सो हो गयी, अड़ोस-पड़ोस को भी कह दिया।

दूसरे दिन उस बैल के गले में एक लम्बी रस्सी बांध दी तथा खेत के बीच में एक खूंटी गाड़ दी। अब वह चरता-चरता जाता है। दूसरे की हरी-हरी घास में मुँह मारना चाहता है किन्तु रस्सी इतनी ही। हमारी सीमा यहीं तक है वह बैल समझ जाता है। सीमा का झगड़ा चल रहा है न, अभी। चीन का, भारत का आदि। वह खाता जाता रस्सी का छोर ज्यों ही आता, त्यों ही उसे घूमना पड़ता। ऐसे खलियान में आपने देखा होगा। अब आप सब बनिया लोग हैं किसान होते तो जानते कि खलियान कैसे

कहते है।

राउण्ड पड़ गया। उसे अपनी सीमा का बोध हो गया। क्यों मेरे गले में रस्सी बांधी। इसी सीमा में हमारे खाने योग्य है, बाहर का हमारे खाने योग्य नहीं है। बैल को एक बार में ही समझ में आ गया। ये हमारे मालिक का है, वो पराया है। उसे खाने से मेरे मालिक पर भी अड़चन आ सकती है।

ये बन्धन नहीं है, सब प्रकार के कष्टों से बचने के लिए अनुबन्ध है। आप लोग भी अनुबन्ध करते हो ग्राहक से अनुबन्ध, खरीददार से अनुबन्ध, सरकार से भी आपका अनुबन्ध होता है। स्वीकार करते हो यदि दुकान चलाना है तो। ये बंध नहीं है अनुबंध है। बंध में कष्ट होता है, अनुबंध राजी-खुशी स्वीकार कर लिया जाता है। हम बंध की बात नहीं कर रहे, अनुबंध की बात कर रहे हैं। अपने मनचलेपन से अनादि से जो बांध लिया है यदि उस बंध को छोड़ना चाहते है तो हमारा अनुबन्ध स्वीकार करलो।

अच्छा लगा है, नहीं तो हमें लगेगा अभी इनका इधर ध्यान नहीं है। बंध-अनुबंध को एक मानते है। बैल दूसरो के यहां नहीं गया, क्यों की गले में रस्सी बांध दी इसी तरह आप लोगों के लिए GST लागू कर दी। राष्ट्र के लिए अच्छा होगा। राष्ट्र के हित में आपका हित तो निहित ही है। इस तरह जब सब जगह अनुबन्ध को स्वीकार कर लेते है तो धार्मिक क्षेत्र में भी अनुबन्ध को स्वीकार कर लेना चाहिए तभी इस बंध से मुक्त होंगे।

मन से, वचन से, काय से, कृत-कारित-अनुमोदना से, समरम्भ-समारम्भ-आरम्भ से कहीं भी बैठकर इस अनुबन्ध को भूलना नहीं चाहिए। अनंतकालीन बंध को

मिटाने में कारण होगा। यह एक ऐसा अनुबन्ध है जो मात्र भारतीय आचार संहिता में ही लिया जाता है। इस अनुबन्ध को स्वीकार करते ही जो पतन हुआ उससे ऊपर आना प्रारम्भ होता है।

एक-एक सीढ़ी ऊपर चढ़ेंगे तभी तो ऊपर आ पाओगे। बोलो नीचे बैठना चाहते हो या ऊपर आना चाहते हो। आज रामटेक में सुना है महोत्सव मनाने आ रहे हैं, पर्व पूर्व इसी स्थान पर दीक्षा-महोत्सव हुआ था। उन लोगों ने तो अनुबन्ध को स्वीकार कर लिया आप मात्र दीक्षा महोत्सव मनाकर बरी हो गये। यहाँ आने पर वो भी याद आ गया।

उन लोगों ने जीवन पर्यन्त के लिए यह अनुबन्ध स्वीकार कर लिया। शांतिनाथ भगवान के चरणों में सबको ज्ञान हो गया कि बंध को काटने के लिए अनुबन्ध को स्वीकार कर लेना चाहिए। आप लोगों का भी अनुबन्ध हुआ है। विवाह हुआ है न। उसमें अनुबन्ध हुआ सात फेरों के रूप में। क्या-क्या अनुबंध हुआ ये याद रखे हो और कुछ याद नहीं। इसके अनुसार ही चलेंगे क्यों कि इसी में हित निश्चित है। अनुबन्ध से आनाकानी करोगे तो बंधन से मुक्त नहीं हो पायेंगे।

बंधन से मुक्त होना चाहते हो तो अनुबन्ध को स्वीकार करो। संक्षेप से अनुबन्ध का मतलब अनुकूल-नियमों को स्वीकार करना। ये सीढ़ियाँ हैं। पथ का निर्माण किया गया है। ऐसा पथ जिसमें रात में भी चल सकते हैं थोड़ी सी रोशनी के सहारे भी। आपको यह नहीं सोचना कि कहाँ पाँव रखना है। बस पैर आजीवन के लिए रखेंगे। अब भले ही देर हो चेतना मार्ग से ही देर हो सकती है। हम लोगों का यह ध्यान

है-शरीर इसमें दुर्घटना नहीं होती। बस होते-होते चलते जाना है।

दौड़-धूप से चलने वाले आप लोग हैं। सारा आपसे कोई अनुबन्ध नहीं। आप स्वीकार करना चाहते हैं तो हम भी बता सकते हैं। आगम में यही रखा गया है हमारे सामने कि श्रावकों के साथ, कैसे अनुबन्ध रखें? तो वह संबंध नहीं छोड़ना। श्रावक के घर प्रतिदिन जा सकते हैं। कहीं भी चले जाना किसी एक से बांधा नहीं। गुरुजी ने कहा था वह अनुबन्ध कहीं के भी श्रावक का हो सकता है, बस हाथ जोड़कर निवेदन की मुद्रा में खड़ा हो। यदि निमन्त्रण देता हो तो? (आहार न होने पर)

सुन रहे हैं आप। डाइरेक्ट एवं इनडाइरेक्ट अनुबन्ध देने वालो! आप बुलाते क्यों हो? हम तो आयेंगे ही क्योंकि हमने ऐसा अनुबन्ध स्वीकार कर लिया है। संक्षेप में अभी इतना ही पर्याप्त है। मध्याह्न में आज नये-नये महाराजों का दीक्षा दिवस मनायेंगे। व्यवस्थित कार्यक्रम रखना होगा।

आप सब सोच लो, बंध को तोड़ने का एक मात्र उपाय अनुबन्ध है। जहाँ से भी आये हो इसे ले जायें अन्य लोगों तक भी पहुँचा सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। है

Notes -
- "पथ्ये सति किम् औषधं, पथ्येऽसति किम् औषधं"
- "जब तक आवास नहीं मिलता तब तक प्रवासी बने रहें।"
-

passion

28-7-17 "आस्था का गन्धोदक" प्रातः 9.30

अभी गन्धोदक कह रहे थे। गन्धोदक क्या है? हमने तो ये समझा एक गन्ध है और दूसरा शब्द है उदक अर्थात पानी। गन्ध और पानी मिला दो, क्या इससे गन्धोदक बन जायेगा? इसी को अपने सिर पर लगा लो। फिर गन्धोदक निर्व. स्वाहा बोल रहे है।

दो ही तो चीज है, बाकी के लिए तो बताना पड़ेगा। हाँ, ये दोनों मिलाकर जिस किसी को लगा दिया तो ठण्डक तो मिल जायेगी। पर जिस तरह गन्धोदक लगाते हो वह भावना नहीं रहेगी। कई लोग सम्मेद शिखर जी, गिरनार, पावापुरी आदि क्षेत्रों पर वंदना हेतु जाते है वहाँ से घी का गन्धोदक बनाकर ले जाते है। कहते है महाराज यह बिल्कुल शुद्ध गन्धोदक हम वहाँ की यात्रा से लेकर आये है, पहले आप ले लो।

हमारे मन में भी भाव आ जाते है। यहीं बैठे-बैठे वहाँ के चरणों का गन्धोदक है, और क्या चाहिए। ये भाव हो जाते है। जो नहीं जा सकते उनके लिए यह प्रसाद है। भाव है ये मात्र गन्ध और पानी नहीं। आप बोलते है न कैसा है? "पापनाशनं"। मुनिमहाराज भी इस गन्धोदक को लेते है। स्वर्ग का इन्द्र भी पैटी (रत्नों की) में रखकर अच्छे ढंग से सभी के मस्तक पर लगा देता है।

आस्था प्रबल हो जाती है और इसी बल पर असंख्यातु गुणी निर्जरा कर लेते है। निर्जरा के लिए चारित्र के साथ आस्था भी होना चाहिए। श्रद्धा से आचरण में अनुष्ठान आता है। तभी भविष्य उज्जवल होगा।

मात्र गंधा को पानी में डाल दो ऐसा नहीं।

वितराग देव-शास्त्र-गुरु के प्रति समर्पण का नाम आस्था है। इन्हीं से बेड़ापार होने वाला है। यह आस्था आने वाली पीढ़ी के लिए कर्णधार का काम करेगी। उनका भी निस्तार करेगी। केवल गंधोदक कहने से काम नहीं होगा। आप लोग भी इसे समझें। जब बोलते हैं तो कोई भी द्रव्य चढ़ाते समय उसके अर्थ की ओर भी ध्यान देना चाहिए। कोई भी द्रव्य चढ़ाते समय उसमें भावों का खेल है - भक्ति का खेल है।

वस्तु तो बाहर है पर भाव भीतर है। आप इन भावों का महत्व समझें। गन्धोदक कहते ही मन में आ जाता है- निर्विघ्न प्रलय शान्ति.... इसे लगा दो सब शान्त हो जायेगा। यह आस्था का विषय है। जितनी आस्था बढ़ायेंगे उतनी जल्दी संसार से निस्तार होने वाला है। केवल नमोऽस्तु करने मात्र से निस्तार नहीं। अभी ऊपर-ऊपर की परिक्रमा में ही मन अटका हुआ है, बाहर निकाल दो सब ठीक-ठाक हो जायेगा।

द्रव्य के साथ भावों का होना जरूरी है, तभी उस द्रव्य का भी मूल्य हो जाता है। केवल घी की महक से ही काम नहीं बनता। उस गंध के जैसे भाव भी होना चाहिए। बिना भक्ति के सम्भव नहीं। भक्ति के बिना शक्ति नहीं आती और शक्ति के बिना मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो पाती। इतना ही पर्याप्त है। आपको तो समय मिलता ही नहीं और हमारे पास तो समय है ही नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय

29-2-17 "अब क्रान्ति की जरूरत है" प्रात: 9:20

आज पार्श्वनाथ भगवान को निर्वाण की उपलब्धि हुई है। ये मुकुट सप्तमी का पर्व सभी अपने रूप में एक पर्व में मनाते हैं। आज एक अनन्तकाल से भटकने वाली आत्मा को मुक्ति की प्राप्ति हुयी है। इसे देख यह सोच सकते हैं कि प्रत्येक आत्मा के पास मुक्ति की सम्भावना विद्यमान है। बस आवश्यकता पुरुषार्थ करने की है।

अभी समय हो गया मध्याह्न में यदि अनुकूलता होगी तो देख लेंगे। अभी यह कहना जरूर चाहता हूँ कि कल नहीं परसों भी कुछ युवा लोगों का समूह मेरे पास आया था। आज फिर एक समूह (महिलायें) एक ही वेषभूषा में (सहलगासे) आये हैं। उन्हें देखकर कहना चाहता हूँ कि प्रबंधन होना कठिन कार्य नहीं, अब क्रान्ति में बदलने का अवसर आ गया है। जब स्वतंत्रता मिली तब भी युवावर्ग का विशेष योगदान था और अब इस क्रान्ति (हथकरघा) में भी युवाओं का योगदान है।

इससे कार्य असफल होने की तो बात ही नहीं होती। बनती कोशिश बहुत वैभव के साथ यह होगा। संसारी प्राणी वैभव से प्रसन्न होता है। सही उपलब्धि सही वैभव का धारण करती है। हमारी अहिंसा, सत्य आदि सम्पदा जहाँ है, वहीं वैभव है। अभी ब्रह्मचारी (वैभव भैया) ने संक्षिप्त सम्यग्दर्शन के बारे में बिल्कुल ठीक कहा। सम्यग्दर्शन के आठ अंग होते हैं। यदि वात्सल्य, स्थितिकरण, प्रभावना अंग नहीं तो वैसा ही हो गया जिसके न पूँछ है न सींग।

आस्था-आस्था की रट तो बहुत लगाते हैं किन्तु रास्ता है ही नहीं। मात्र रास्ता भी सम्यक् नहीं सम्यग्ज्ञान नहीं। आस्था के साथ खड़ा हो जाता है इस [illegible]

Notes   Date:

सम्यग्दर्शन में।

यह कोरी कल्पना का विषय नहीं। प्रयोग का विषय है। अब समय आ गया है शान्ति लाने का। आठ अंग वाला सम्यग्दर्शन भिन्न-भिन्न क्रियाओं के लिए अनिवार्य है। भूख मिटाना है तो भोजन बनाना जरूरी है, जो उस भोजन से वंचित है वहाँ तक पहुँचाना भी है। उस तक पहुँचाने से भी सुख शान्ति हो जाती है।

अपनी ओर देखने से परिणाम आकुलित होते हैं, दूसरे की ओर देखने से शांत हो जाते हैं। (भूख को देखने पर) इतिहास देखने की जरूरत है। जैन लोगों का ऐसा ही इतिहास रहा है जो दूसरों की भूख मिटाने का सदैव प्रयास करते रहे हैं। हो या न हो हमारा कर्त्तव्य प्रारम्भ हो जाता है। सामने वाला इससे जुड़ता चला जाता है।

असंभव कोई वस्तु नहीं, सही दिशा की ओर कदम बढ़ जाता है सब सम्भव हो जाता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो।

संस्मरण -

बात पुरानी है। जब निष्पक्ष सागर जी एवं निस्पृह सागर जी भी ब्रह्मचारी थे। गुरुजी का विहार रामटेक से गोंदिया की ओर चल रहा था। किसी स्थान पर संघ रुका। ब्र. बिन्दु भैया एवं इन दोनों ने दूध में शक्कर की जगह गलती से कपूर मिला दिया। सोचा कपूर क्या नुकसान करेगा सो पी लिया। थोड़ी ही देर में चक्कर आने लगा। उल्टी होने लगी, बिन्दु गिर गया। ये दोनों जल्दी से गाड़ी में घुसकर बैठ गये। अभी एक दिन जंगल से आते समय गुरुजी ने कहा "कपूर मत लेना"। आचार्य श्री ने चुटकी लेते हुए कहा किसी से कहियो नहीं।

Notes [रविवार] Date:

30-7-17 "बच्चों ने जगाया बड़ों को" प्रात: 9:20

आज वैसे रविवार है। महयालु में समय दिया गया है फिर भी आज अभी मरक सामने रख दी तो....। अभी आप लोगों के सामने छोटी-छोटी बच्चियों के माध्यम से अपनी मातृ भाषा में भजन सुनने को उपलब्ध हुयी। ये महाराष्ट्र कहलाता है, यहाँ की मीठी भाषा मराठी कहलाती है। एक-एक छंद ये नन्हीं-नन्हीं बच्चियाँ जमकर बोल रही थी।

सब लोग आपस में मीठी बात करते हैं अपनी-अपनी भाषा में, कर्नाटक से भी बहुत सारे लोग बैठे हैं। कहीं तो पाश्चात्य संस्कृति (भाषा) का बोलबाला एवं कहाँ हमारी मातृ भाषा के ये गौरव के संस्कार इन बच्चों को दिये जा रहे हैं। हम सभी भाषा के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति करते हैं जिसकी अच्छी प्रस्तुति करना चाहते हैं। छोटे होने के बावजूद भी इनके द्वारा साहित्यिक भाषा में वो भी संक्षेप में एवं सारगर्भित बोलकर कम समय में अच्छी प्रस्तुति करी।

ये सब इन सभी के माता-पिता के कारण हुआ। गुरुदर्शन एवं पाठशाला से भी ये संस्कार इन बच्चों को प्राप्त हुए। बीच-बीच में जो संबोधन कर रहे थे वह भी महत्त्वपूर्ण था। इस प्रकार इन सभी ने धार्मिक संस्कारों का परिचय दिया उन्हें आगे बढ़ाया। भाषा के बिना भावों को दूसरों के सामने रख पाते हैं। भगवान ने भी इसी का प्रयोग किया और कोई रास्ता नहीं है।

जब भाषा गौण अथवा मौन हो जाती है तो फिर संकेत का प्रयोग करते हैं। आँखों से अथवा अंगुलियों से या चुटकी के माध्यम से हम समझाते हैं। जैसे बहरा और गूंगा होता है उसे इशारे से, संकेतों से काम निकालते हैं। आज

भारत की भी यही दशा हो गयी है। बोलने वाले गूंगे होते जा रहे हैं और सुनने वाला भारत बहरा होता जा रहा है। अर्थात- गूंगा - बहरा हो गया है। हम सुन भी रहे हैं फिर भी बहरे बन रहे हैं। बहरे ही नहीं बोल नहीं रहे तो गूंगे भी बन गये हैं। ऐसे में भारतीय संस्कृति की रक्षा कठिन सी हो गयी है। अब जागने की जरूरत है सोने की नहीं। संक्षेप में इतना ही पर्याप्त है। मातृ-भाषा का प्रयोग कर अपने भावों का आदान-प्रदान करें तभी अपनी संस्कृति की रक्षा कर पायेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

31-7-17 "खुशबु भारत की" प्रात: 9.20

आपने एक पौधा लगाया बहुत दिन का विचार था कि एक ऐसा पौधा लगाऊं, जिसमें फूल खिले उस प्रकार का पौधा लगाया। उस विचार को साकार बना दिया। उसके योग्य वातावरण तैयार कर दिया। समय-समय पर खाद-पानी आदि देते गये। इसी के साथ अपने भाव भी देते गये।

मेरे परिणाम हुए हैं कि इस पौधे में फूल खिले और दूर तक के व्यक्तियों को इसकी गंध का लाभ मिले जिससे राहत महसूस करें। कोई न कोई व्यक्ति मुझे याद करे। हम यहां बैठे हुए भी दूर बैठे व्यक्ति तक अपने भावों को पहुंचाकर सुख-एवं शांति का महसूस कर सकते हैं। वाहन से घूमने वाले तो आप लोग हैं। आप वाहन से कभी भी कहीं भी पहुंच जाते हैं। हमारे पास तो वाहन है नहीं हमने त्याग कर दिया। हमने सोचा, बिना वाहन के भी हम यहीं से बैठे-बैठे कर लेंगे। उन्होंने से पैरों से किया।

हमने अपने मन को ही सक्रिय बना दिया। उसी से वहाँ तक पहुँचा देते है। आप लोग बीच-बीच में गाड़ी मे तेल डालने आते रहते है। हम भी बिना टैक्स लिए आपके वाहन मे तेल डाल देते है।

तेल में बाती को भी हाथों-हाथ अंगुठा एवं तर्जनी से मीड़ कर डाल देते हैं। उस बाती से चारों ओर प्रकाश फैल जाता है। बाती को धुव तक पहुँचा देने से चलती रहती है। हरेक व्यक्ति को इसी तरह समर्पित होना चाहिए। धर्म के लिए, राष्ट्र के लिए जहां पर रहते है वातावरण तैयार करे, सुरक्षित कर्तव्य है।

फल-फूल वाले पौधे लगाना, तप करने वाले विरले होते है, बगीचे में बैठने वाले तो बहुत होते है। खुशबु चारों तरफ फैलाते रहे। मन की शान्ति बिना तत्व-चिंतन की गहराई में नहीं पहुँच सकते। फूल खिलने लगे। आधार मजबूत हो गया। हमने पूछा फूल का पौधा कैसा लग रहा है। वह कहता है- ऐसी खुशबु हवा के माध्यम से तरंगायित कर देती है। फिर भी...। फिर भी क्या? महाराज कई फूल तो खिले है। दो-तीन अभी कलियाँ ही है, खिली नहीं।

हम भगवान से प्रार्थना करते है कि ये कलीयाँ खिल जाये। मेरी अंगुली के द्वारा तो नहीं खिलेगी। हां उम्र/समय के हिसाब से ही खिलेगी। ऐसी प्रार्थना करें कि जल्दी-जल्दी खिल जाये तो ये प्रार्थना भी गलत है। 70 साल से यही प्रार्थना जल्दी-जल्दी हो जाये सो गलत है। उसी का होब इण्डिया बना दिया। गलती को दूर करने की आवश्यकता है। जिस देश को स्वतंत्र मांगा था। उन्होंने इसको

स्वतंत्र तो कर दिया पर नाम ही बदल दिया।
मतलब आपकी कुण्डली ही बदल दी।
आप आज आये हैं। [struck] तो नाश्ता ही मिलता है, कल आते तो पूरा मिलता। उनका निश्चय नहीं है, आप व्यवहार वाले हो। आपके रवेजी के नाम से व्यापार किया जा रहा था। चल रहा था। जो कुछ भी हो रहा था। अब इसे बदल दिया है। इतिहास भी बदल दिया।
इण्डिया के कारण ऐसा हो रहा है। नामकरण के ये संस्कार हैं। हमारे यहाँ नाम के अभाव में अज्ञात रखना नहीं चाहते अत: नामकरण पहले किया जाता है। विश्व में यदि भारत नाम रहेगा तो विश्व की कुण्डली सुरक्षित रहेगी। यहाँ से खुशबु चारों ओर फैलती है। कलियाँ अभी खिलने से रह गयी हैं क्यों की भाग्य अभी नहीं खुला है। समय की जरूरत है।
परकाल की प्रतीक्षा में बैठे नहीं रहना है। इण्डिया की आरती नहीं उतारना है भारत को याद करो। भले ही हाथ में आरती हो या न हो। जिस देश में हुए हैं उसमें भक्ति करने का अवसर प्राप्त हो जाए, जो महापुरुष इस धरती पर हुये उन्हें याद कर सकें।
सभी जीव-जन्तुओं के दु:खों को दूर करने का प्रयास करेंगे। प्राणी मात्र की रक्षा करना ही परमधर्म है। इन्हीं शब्दों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हैं

passion

1-8-17 "आओ बनें भविष्य वेत्ता अपने" प्रात: 9-20

आप लोग इस विषय से परिचित हैं। विषय क्या है? समझ लीजिए। सब लोगों के नाखून हैं, जिसमें खून नहीं रहता है उसका नाम नाखून है। तभी तो जब नाखून बढ़ जाते हैं, उन्हें निकालते हैं तो आप लोगों को दर्द नहीं होता। जब खून से संबंध होता है, उसमें से कट जाता है तो आंखों में पानी आ जाता है, इससे स्पष्ट है नाखून में खून नहीं।

नाखून के सम्बन्ध में अन्य दूसरी बात यह है कि जब भी वैद्य लोग परीक्षा करते हैं तो नाखून को भी देखते हैं। अभी यहां डॉक्टर साहब आये उनसे पूछ लो। कैसे परिक्षण करते हैं? नाखून को देखकर, भीतर की विकृतियों के बारे में जान लेते हैं। आगे चलते हैं। नाखून को देखकर बोध हो जाता है की भीतर खून नहीं है अर्थात खून की कमी है। मरणासन्न है, विषैली वस्तु खा ली है या सर्प ने डस लिया है तो भी नाखून से परीक्षा हो जाती है।

पता चल जाता है कि ये व्यक्ति खतरे में आ गया है। नाखून में खून रहता है तो निरोग रहता है आदि-आदि का परीक्षण करके बता दिया कि घबराने की कोई बात नहीं है। विकृति नहीं रहती तो लाल रहता है, मतलब जीवन खतरे में नहीं है। जब वह नीला पड़ जाता है मतलब रक्त (खून) संचार से मुक्त हो गया। रक्त-संचार में कमी आ जाने पर नीला हो जाता है। संचार होना अनिवार्य है।

संचार रुक जाता है तो जीवन को खतरा है, मतलब जीवन रवाना होने वाला है। रवाना होने के पहले इस प्रकार के संकेत देखने को मिलते हैं। वैद्य जी भी नाखून अथवा नाड़ी देखते हैं क्यों की अब जाने वाला

है। नाड़ी मान लो पकड़ में नहीं आ पा रही है तो चलो नाखून देख लो। नीले पड़ गये उसके बगल की चमड़ी में भी नीलापन आ गया तो वह कहते हैं अब अर्थी तैयार कर लो।

आत्मा है तभी तक जीवन है अन्यथा हटाओ, देर नहीं करना है। इसी प्रकार व्यवहार में गड़बड़ी हो गयी तो क्या कहते हैं? ये ठीक नहीं हैं। वैद्य लोग आपके शारीरिक अंगों को देख घोषणा करते हैं कि ये ठीक नहीं है, हमारे आचार्य आपके व्यवहार को देख घोषणा करते हैं कि भविष्य ठीक नहीं है। भविष्य उज्जवल नहीं है।

बोलो! बोली थोड़ी भुला रहे हैं। हव तो कहो। अपने व्यवहार को बदल दो। यदि तुम्हें भविष्य की वास्तव में चिंता है तो, व्यवहार को बदलना होगा। आज के व्यवहार को सुधारेंगे तो हमारी दृष्टि सुधरेगी। दृष्टि में सुधार होगा तो ज्ञान मे सुधार होगा जब ज्ञान में सुधार होगा तो अतीत का पाप भविष्य के पुण्य के रूप में परिवर्तित हो जायेगा। इस प्रकार व्यवहार के साथ गतिविधियाँ लगी हैं।

संक्षेप में इतना ही रखना था। नाखून के माध्यम से जैसे पता लगा लेते हैं उसी प्रकार मन-वचन की चेष्टा से अपने व्यवहार को पकड़ सकते हैं। दूसरों के नहीं अपने भविष्य की जानकारी ले सकते हैं। दूसरों के नहीं स्वयं के भविष्य वेत्ता बन सकते हैं। दिल क्या कह रहा है? इसके माध्यम से अपना भविष्य वेत्ता बन सकते हैं/होते हैं। इसी प्रकार अपने व्यवहार में सुधार लाकर आगे बढ़ जाते हैं। मन-वचन-काय में पुरुषार्थ करके सुधार कर लें, नहीं तो अंधकार तो होना ही है।

"अहिंसा परमो धर्म की जय"

3-8-17 "धान के भीतर चावल" प्रातः 9.20

आप लोग किसी भी मांगलिक कार्य में चावल चढ़ाते हैं। पहले जल फिर चन्दन और उसके बाद क्रम चावल का आता है। प्रश्न उठता है चावल ही क्यों चढ़ाते हैं? धान भी तो चढ़ा सकते हैं। नहीं चढ़ा सकते। इसमें रहस्य है। आप लोग मतलब किसान लोग खेती करते हैं, तो चावल क्यों नहीं बोते। चावल बोयेंगे तो क्या चावल की प्राप्ति नहीं होगी? क्यों नहीं होगी? चावल की खेती नहीं होती! तो फिर पूजन चावल से कैसे होगी?

चावल नहीं बोया जाता है, धान बोया जाता है। चावल में योनि स्थान नहीं रहता है अतः चावल को बोने से वह उगता नहीं, धान को बोने से धान उगकर आता है। बाली आती है उपरान्त चावल निकालकर काम में लेते हैं। धान के रूप में रहता है तब तक पुनः-पुनः जनम होता है। समझ में आ गया, हम चावल ही क्यों चढ़ाते हैं? जितनी बार बोयेंगे पुनः धान के रूप में आयेगा। धान के भीतर चावल सुरक्षित रहता है। चावल में योनिभूत स्थान नहीं रहता है। इसलिए चावल की खेती नहीं होती, धान की खेती होती है।

धान के पेट में चावल रहता है। चावल के लिए धान को कूटकर छिलका अलग करना होता है। पेट को भी एवं पेटी को भी गायब करना है। हम भी पेट भरते हैं। पेट भरकर आयेंगे तो भगवान भजन भी अच्छा होगा, तभी आवश्यक अच्छे से होंगे। इसलिए 28 मूलगुण में से एक मूलगुण ही रखा - एक बार भोजन करना किन्तु जब आवश्यक हो तब लेना नहीं तो नहीं लेना। खड़े होकर ही लेना, श्रावक के घर जाकर ही करना, साथ में लेकर नहीं आना। इसलिए

माध्यम से श्रावक की दुकान अच्छे से चलती है। होती ना!

प्रतिष्ठा होती है या नहीं होती? निमन्त्रण होता है या नहीं होता? दुकान तो चलती है। ध्यान रखो! महाराज तो कम हो दुकान ज्यादा हो तो क्या होगा? भावना होनी चाहिए इससे ज्यादा नहीं। इस प्रकार धान योनिभूत सचित्त है अतः पुनः उग जाता है, चावल पुनः जन्म नहीं लेता। इसीलिए पूजन में अक्षत चढ़ाते हैं। अक्षय पद की प्राप्ति हेतु अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा कहते हो। अक्षय का अर्थ ही है, जो क्षय को प्राप्त नहीं होता।

जैसे चावल जन्म को धारण नहीं करता वैसे ही हम भी इस संसार में अब पुनः नहीं आवें) ऐसी भावना के साथ प्रभु जिन्होंने इस अक्षय पद को पा लिया उनके गुण गाते हैं। "णमो अरहंताणं" का भी उच्चारण इसी भावना से करते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में "अजैर्यष्टव्यं" शब्द आता है। अज का अर्थ भी चावल होता है। जो अब उत्पन्न नहीं होगा ऐसा धान(चावल) चढ़ाया जाता है।

यह हमारी पुरानी परम्परा है जिसे रिवाज कहते हैं। यह ग्रन्थों की वाणी है। अज का अर्थ मांस नहीं अज का अर्थ चावल है। भगवान जिनका अब पुनः संसार में जन्म नहीं उनके चरणों में चावल चढ़ाते हैं। चावल के थाल भरकर सजोकर, सिद्धचक्र आदि विधान-पूजा करते हैं। धान से भूसा भी प्राप्त और चावल भी प्राप्त होता है शरीर भूसा है आत्मतत्त्व, चावल है इस आत्म तत्त्व को प्राप्त करने के लिए पूजन करते हैं (ये रहस्य है। मोह त्याग कर पूजन करेंगे तो विशेष निर्जरा (प्रतिदिन पूजा दिखकर) इस प्रकार के भावों की अनुमोदना करते रहना चाहिए। अहिंसा परमो धर्म की जय।

Notes Date

5-8-18 "आओ भीतर चलें" प्रात: 9.20

आपने देखा होगा चित्र में, भले ही सामने देखने पर कंपकंपी आती है। चित्र में कंपकंपी नहीं आती। सर्प जब आपके सामने चलता है तो कैसे चलता है सीधा नहीं चलता। मतलब रास्ता तो सीधा ही होता है पर वह सीधा नहीं चलता क्यों की उसका स्वभाव है। अच्छा कब चलता है जब बिल से बाहर आता है तो टेड़ा-मेड़ा चलता है और जब बाहर से भीतर बिल में जाना हो तो सीधा चलता है।

मैं आपके मुख से सुनना चाहता था। तो क्या हुआ, बाहर टेड़ा-मेड़ा एवं बिल में सीधा प्रवेश करता है। ये उदाहरण मैं इसलिए दे रहा हूँ कि जब आप लोग बाहर आते हैं तो अनेक प्रकार की टेड़ी-मेड़ी चाल चलते हैं। बोलो ना। बाहर आते ही रंग-रोगन की ओर ध्यान जाता है। आत्मा के भावों पर भी बाहर का रंग-रोगन आये बिना नहीं रह सकता। इसलिए आचार्यों ने कहा बाहर नहीं, भीतर रहो। इस उदाहरण के माध्यम से आचार्यों ने संयम की प्रेरणा दी है। आ. कहते हैं कि जो भी प्रवृत्ति करो वह समिति पूर्वक करो।

कौनसी समिति? चातुर्मास समिति, महासमिति अथवा भारतवर्षीय समिति। ये सब तो तात्कालिक किसी कार्य विशेष हेतु बना देते हैं। आगम में पांच मात्र समिति बताई, उन्हीं के अनुसार व्यवहार कीजिए/चलिए। ईर्यापथ समिति - चार हाथ प्रमाण जमीन देखकर चलिए, टेड़ा-मेड़ा मत चलिये, जीव-जन्तु को बचाकर चलिए। स्वयं को भी बचाकर चलिए

अभ्यास हो जायेगा।

बोलो तो हित-मित-मिष्ट वचनों का प्रयोग करें जिससे किसी को कष्ट न हो ऐसे वचन प्रयोग कर सकते हैं, करें ही ये नियम नहीं। आवश्यक हो तो वचनों का प्रयोग करें नहीं तो वचन गुप्ति में बैठें। इसी प्रकार भोजन (आहार) ऐषणा समितिपूर्वक ग्रहण करें। मल-मूत्र त्याग करें तो प्रतिष्ठापन समिति तथा शास्त्र रखें-उठावें तो पिच्छी से परिमार्जन करें इसे आदान-निक्षेपण समिति बोलते हैं।

इन पाँच समिति का प्रयोग हमेशा करें ऐसा नियम नहीं। आसन लगाकर गुप्ति में बैठ जाते हैं तो फिर इनकी जरूरत नहीं। उदाहरण दिया सर्प का जब चाल में रहता है तो टेढ़ा-मेढ़ा पर प्रवेश के समय सीधा हो जाता है। आप लोग सीधे नहीं हो पाये क्यों की गुप्ति का प्रयोग नहीं करते। गुप्ति जानते हो? मुक्ति नहीं-गुप्ति। मन-वचन-काय की चेष्टा को शांत करना। भगवान की तरह बैठ जायें। मुनिमहाराज भी सामायिक में ऐसे ही बैठते हैं। आप वस्त्रधारी भी मुनि महाराज की तरह आगम में "चेलोप सृष्टमुनिरिव" कहा जैसे मुनिराज ध्यान में बैठे हैं किसी ने वस्त्र डाल दिया तो वे वैसे की वैसे ही रहेंगे ऐसे श्रावक भी बैठता है।

अभ्यास चलता रहता है मुनियों की भांति। तीन गुप्तियों का पालन करते हैं, दूसरे को किसी प्रकार कष्ट न पहुंचे ऐसी चर्या मुनिराज करते हैं। गुप्ति में लीन हो जाते हैं फिर सिंह आदि क्रूर जानवर भी आ जाते हैं तो बिना हिले-डुले बैठे रहते हैं ठूंठ की भांति। सिंह सोचता होगा ये सब कुछ भूल जाते है वह भी भूल जाता है।

चेष्टा नहीं करते। दोनों अपने में रहते हैं।

चेष्टा करते हैं तो हमारे स्थान पर क्यों बैठ गये? दोनों ओर से गडबड हो जाती है। दुकान पर कोई आ जाता है, ग्राहक नहीं है तो आपके मन में आता है ये कौन आ गया? कहीं छापामारी वाले तो नहीं? सामने वाला कौन है? आप नहीं देखते तो वह भी नहीं देखता भले ही क्रूर भी क्यों न हो तो भी कुछ नहीं पूछेगा। हाथ-पैर हिलायेंगे त्यों ही वह धावा बोल सकता है। इस आत्मा की ये चेष्टायें होती हैं, जिन्हें समिति-गुप्ति से सावधान कर देते हैं।

प्रतिकार भी नहीं करते हैं। सर्प का उदाहरण याद रखना। हमने हाथ हिलाकर टेढ़ा-मेढ़ा-सीधा जो बताया उसे भी ध्यान रखना। जो नहीं आया है उसे भी बता देना महाराज जी ने ऐसा कहा है। दूसरे के बिल में नहीं अपने ही बिल में। अपनी ही आत्मा में प्रवेश करना है। भीतर में पूछताछ की जरूरत नहीं। बाहर आते हैं तो हम बैठना चाहते हैं तो पूछना पड़ता है कि हम इधर से गुजरना चाहते हैं, कहीं कष्ट न पहुँच जाए।

यदि ऐसा करते हैं तो उसका संसार निकट आ रह जायेगा, जल्दी मुक्त हो जायेगा। मुक्त नहीं तो भी सीमित हो जायेगा। सिंह आदि पर भी निश्चेष्ट अवस्था का इतना प्रभाव पड़ता है। जवाब नहीं देता, प्रतिकार नहीं करता, मारता नहीं है। जब हम अपने स्वभाव में आत्मस्थ हो जाते हैं तो न स्वयं प्रभावित होते हैं न ही दूसरा प्रभावित होता है। वह भी शांत बैठ जाता है। हम सुख-

दुःख का अनुभव करते हैं तो कर्म भी उस अनुरूप फल देते हैं।

हम देखते हैं तो फल देते हैं नहीं तो नहीं। हम भी अपने में वो भी अपने में। वो भी चला जाता है। जल्दी जाओ अन्यथा खर्चा करना पड़ेगा। मेहमान घर में आते हैं क्या सोचते हो? जल्दी चला जावे। और यदि दो-तीन दिन रुक जाए तो आप सोचते हैं दुकान भी छूट गयी तो कमाई भी गयी उल्टा खर्चा और हो गया। माता-पिता भी ऐसे बच्चों को जो स्वयं कार्य करते नहीं और उनको करने देते नहीं उनको यही सोचते हैं जाओ, जल्दी जाओ।

भगवान से यही प्रार्थना करो कि हे भगवन्! ये आत्मा आप जैसी बन जावे। सर्प का उदाहरण भूल मत जाना। जब बिल में जाता है तो सीधा जाता है। इसी प्रकार सामायिक के समय गुप्ति में शान्त बैठ जाते हैं। शान्ति के साथ जितना कर सको उतना कर सकते हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

कुछ हट के -

- अब आय पर ~~कर~~ नहीं व्यय पर कर लगना चाहिए तभी अपव्यय से बच पायेंगे। अनर्थदण्ड से बचना है तो खर्चे पर Tax लगाओ।

- दूसरों की संकलित पाँच ~~पुस्तकें~~ पुस्तकों से भी ठीक नहीं जबकि स्वयं की छोटी सी मौलिक रचना भी अच्छी मानता हूँ।

passion

4-8-17, "जीवन्त मंत्र है वात्सल्य" मध्याह्न 3.30

ये (रक्षाबंधन) एक पर्व के रूप में मनाया जाता है। इसे रक्षाबंधन इस नाम से पुकारा जाता है। दो शब्द हैं एक रक्षा दूसरा बंधन। रक्षा के लिए बंधन को स्वीकार करना। ये बंधन अखरता नहीं क्यों की ये स्वार्थ के लिए बंधन नहीं है। स्वार्थ का बंधन ठीक नहीं, रक्षा के लिए प्रतिज्ञा करते हैं। विवाह के समय भी इसी प्रकार का दृश्य आ जाता है। किन्तु विवाह भारतीय संस्कृति के अनुसार हो Love-marriage नहीं हो।

ठीक कह रहा हूँ ना। हाँ कह दो। भारतीय संस्कृति के अनुसार विवाह का बंधन, बंधन नहीं है किन्तु प्रतिज्ञा ली जाती है। जीवन पर्यन्त उस प्रतिज्ञा को याद रखेंगे। विवाह उपरान्त आजन्म उसका पालन करते हैं। प्राणों को भी एक तरफ रखते हैं, उसको भूल नहीं सकते। अभी भजन गा रहे थे कि खूब हँसाया- अब रुलाना नहीं। लेकिन ये बात हमें समझ में नहीं आयी। रोना तो बच्चों के लिए आरोग्य का सूत्र माना जाता है। यदि बच्चे नहीं रोते तो चिंताजनक मानते हैं। अब दोबारा नहीं कहना, ठीक है ना।

चिंताजनक है, भीतर की संवेदना की अभिव्यक्ति नहीं होती। भले ही आप विकास मान रहे हो। बुद्धि ठीक नहीं, रोना सीखो दूसरे की पीड़ा देखकर। जो दूसरों की पीड़ा देखकर के रोता है वह अपना दुःख भूल जाता है। सारी पीड़ायें उसे होने लगती हैं। प्राण नहीं निकलते तब तक यही सोचता रहता है कि कैसे जीवों की रक्षा करना है। संसार के अनन्त जीव ऐसे जिनके पास न ज्ञान है न रास्ता। मुझे तो रास्ता मिल गया। उनका उद्धार कैसे होगा। उनकी व्यथा का अनुभव अपनी

व्यथा में करने लगता है।

अच्छा देखने लग जाओगे तो फिर देखो सारी सामग्री प्राप्त होने लगेगी। वे अभावों में भी जी रहे हैं, इसलिए यह प्रतिज्ञा करो। आज प्रतिज्ञा दिवस है - वात्सल्य प्रतिज्ञा दिवस। सम्यग्दृष्टि के आठ अंग होते हैं। एक भी अंग कम हो तो वह विकलांग होगा अतः सकलांग बनो विकलांग नहीं। पंगु बनना ठीक नहीं।

आज का जन्मा बछड़ा वत्स है। उस वत्स के प्रति भाव वात्सल्य है, आप सहज बने कृत्रिम नहीं। ट्यूशन द्वारा शिक्षा नहीं होती, प्राचीनकाल से ट्यूशन की परम्परा नहीं। ट्यूशन नहीं इन्ट्यूशन हो। शिक्षा सहज हो। उसी का नाम शिक्षा है। वात्सल्य जिसके पास तो सम्यग्दर्शन सहज है। सुरभि जिसे कहते हैं, मकरंद बोलते हैं। फूलों से बनता है खुशबू चारों ओर फैलकर नासा में घुस जाती है, मकरंद का भंडार है, रात-दिन बिखरता रहता है।

सम्यग्दर्शन भी ऐसा ही होता है। छुपाकर भी रख दो तो भी गाँठ के बाहर आकर बताता है। तब पता चल जाता है अरे ये तो सम्यग्दर्शन है। गंध आये बिना रहेगी ही नहीं। दुखी जीवों का दुख करुणा बाहर आना ही चाहिए। स्वार्थ में आँखें को गीला करते हैं। अपने नहीं दूसरों के दुखों में आँसू बहाओ तो बात सही है।

नूतन बछड़ा जनम लेता है तो गाय उसे चाटती है, जिससे बछड़ा निरोग रहे, प्रदूषण रहित रहे। चिपकन समाप्त हो जाती है। वह गाय उसे आँखों से एवं दूध पिलाकर वात्सल्य देती रहती है। अंतिम समय तक वह बछड़ा भले ही बैल भी क्यों न हो माँ को सदैव स्मृति में रखता है। [illegible]

Notes Date:

धर्म है कोरा रखा-रखा नहीं है, जब जीवन में वात्सल्य हो। चाहे वह कैसा भी सम्यग्दर्शन क्यों न हो चाहे निश्चय-व्यवहार हो या सराग-विराग हो। सर्वत्र वात्सल्य रहता है। उसे स्थान दिया है।

जो वात्सल्य को अपने पास रखता है, वह निश्चय से सम्यग्दृष्टि है। मोक्षमार्ग को सुरक्षित रखकर विकसित रहता है। ऐसे साधन का नाम वात्सल्य है। वात्सल्य नहीं तो सम्यग्दर्शन की गंध नहीं आ सकती। अपने ही कान में इत्र लगाये रहते हैं। सामने वाला कहता है आपके पास इत्र हो सकता पर नाक तो नहीं। नाक काट कर तो दे नहीं सकते, इतनी उदारता करो। अर्थ यह है कि अपने साथ-साथ अड़ोस-पड़ोस को भी इत्र में डुबो दे।

यह प्रभावना का अंग हो जाता है, हम उसे जीवन्त वस्तु मानते हैं। जीवन के लिए अनिवार्य मानते हैं। सभी प्रकार से पुद्गल करके जीवित रखना चाहिए। एक-एक महत्वपूर्ण है। अंगों के बिना शरीर क्या? जो लोग सम्यग्दर्शन को मात्र चर्चा-वाचन तक सीमित रखते हैं, उन्हें जीवन्त पर ध्यान देना चाहिए। अजीवों का अंबार लगाये हुए हो घर में। गुणों का अंबार होना चाहिए। स. द. के साथ वात्सल्य अंग हो वह भी परोक्ष नहीं साक्षात् हो, जीवन्त इसी का नाम है।

साक्षात होने से जीवन की व्यथा समाप्त हो जाती है, मुस्काने पल्लवीत हो जाती है। रोंगटे खड़े हो जाते हैं इस अंग के कारण। वातावरण ऐसा ही तैयार हो जाता है। रात के 12 बजे भी करंट बरकरार चालू रहता है। बंधन ऐसा देना हो जिससे रोंगटे खड़े रहे। तालीयों में ही करंट रहता है आप लोगों में। बिना ताली भी प्रेम-वात्सल्य प्रकट हो।

के पास पहुँच जाये।

करुणा की बूंद आँखों से टपकने लगी। इठलाना / इतराना नहीं है। दो मित्र बिछुड़े हुए मिले, कुछ नहीं बोलते तो भी आँखों में पानी आ जाता है। प्रौढ़ अवस्था में भी आँसू आ आते हैं। भले ही बेशुमार न हों (हर्ष) कण्ठ अवरुद्ध हो कोई बात नहीं आँखें साथ देती हैं। संवेदना एक-दूसरे में वात्सल्य लाती है।

काव्य ख्याति में भी महत्त्व होता है। बिना रस भी रस आने लगता है यह नव रस का कमाल है। भोजन में रस नहीं हो तो भी रस मुँह में पानी आ जाये। कवियों की संगोष्ठी भी फीकी पड़ जाती है। सावन को फीका करने वालों से दूर रहें। कश्मीर का हृदय तैयार कर ले ऐसा वात्सल्य हमारे जीवन में आये ऐसी भावना के साथ।

अनमोल पाना है तो... अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

5-8-17

9·20

... आपने क्रम क्रम से अपनी अपनी थालियों में ले आए थे, कौन सी वस्तु है? बार-बार कहने की आवश्यकता नहीं! वह अनर्घ को लेकर के आए! आप लोगों को ये ज्ञात तो है ही, अर्घ का अर्थ होता है मोल वाला पदार्थ। मूल वाला जो पदार्थ उनको तो आप लोग चढ़ा रहे हैं और मांग किसकी कर रहे हैं? अनर्घ व अनमोल चाहते हैं; हिसाब बनेगा नहीं। मोल को चढ़ा करके अनमोल लेंगे या तो आप घाटे में जा रहे हैं जिसका कोई मोल नहीं है, नहीं महाराज। ऐसा नहीं, हम उसका मोल कर ही नहीं सकते। ऐसे पदार्थ को हम चाहते हैं और चढ़ाते हैं कितने भी दिन तक आप चढ़ाते जाओ, अनमोल पदार्थ की प्राप्ति आपको नहीं होती। हां महाराज अनमोल पदार्थ तो चढ़ा ही नहीं जा सकता हम क्या करें? समझौता कर लो आप भले ही मोल के पदार्थ को चढ़ाओ, लेकिन जितने हैं उतने पूरे पूरे चढ़ाओ। तो अनमोल तो मिल सकता है। समझे नहीं समझे। जितने भी आपने इकट्ठा किया है मन से, वचन से काय से, उसको पूरा चढ़ाओगे, तो हम भगवान से प्रार्थना कर लेंगे कि महाराज इन का सौदा कर लो। लेकिन आप लोगों को विश्वास ही नहीं। पूरे चढ़ाएं हाथ का जो था वह भी चला गया नहीं मिला तो तो ऐसी बात नहीं। विश्वास रखेंगे तो ही मिलेगा। यदि विश्वास नहीं रखेंगे यह कहना पड़ेगा आप लोग अनमोल पदार्थ से लगाव कम रखते हैं। और मौलिक पदार्थ ही आप लोगों के लिए अच्छा लग रहा है देख लो अच्छा नहीं हम जबरदस्ती तो कहते नहीं। हां और हमारे पास कुछ भी नहीं है, खाली हाथ है लेकिन हमारी ओर भगवान जल्दी देखते हैं और आपकी ओर नहीं। देख लो। अहिंसा परमो धर्म की जय ॐ

Notes Date

विशेष कुछ हटकर -

5-8-17 को प्रातः 8.15 से 7-8-17 को प्रातः 8.15 तक 48 घण्टे का गुरु आशीर्वाद/आज्ञा से प्रतिमायोग धारण किया। बेला के साथ अद्भुत अनुभूति हुई। अतः प्रवचन दूसरे से ले लिया।

वर्तमान काल - चाल - हाल सभी विपरित है फिर भी निहाल होना चाहते हैं ये बड़ी बात है।

राखी को राखी रहने दो इसे झांकी मत बनाओ।

6-8-17 "आओ बचें महाभारत से" प्रातः 9.20

आप लोगों को ज्ञात होगा,सब पदार्थ अपने आप में अपने अपने गुणों को लेकर के चलते हैं ; फिर भी उनका परिपाक , भिन्न भिन्न समय में और भिन्न भिन्न क्षेत्र के अनुसार ऐसे ही विपरीत और ऐसे भी अनुकूल फल दे सकते हैं| जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते क्योंकि हमारी दृष्टि एक प्रकार से वहां तक नहीं पहुंच पाती | जैसे हमारी अवधारणा होती है और हमारा ज्ञान काम करता है उसी के अनुसार हम सब कुछ समझ लेते हैं| जैसे राजधानी की स्थापना के बाद पांडवों के यहां, निरीक्षण हेतु कई लोग पहुंचे |संभव है उन में कौरवों का भी नंबर आया होगा| और जब 1-1चीजें देखते जा रहे हैं और विस्मय हो रहा है सब लोगों को, यह राजधानी जो बनी है पांडवों की ,अद्भुत बनी है | जब भिन्न-भिन्न वस्तुओं के अवलोकन के साथ उस स्थान पर पहुंच जाते हैं ,जिस पर जिस स्थान पर जाते ही ,विभाव हो जाता है कि भैया यह तो पानी है| और पानी है तो थोड़े से धोती को ऊपर कर दिया |और बस ,सब लोग हंस गए| हंस क्यों गए? इसलिए हंस गए ,कि जिसको इन्होंने पानी समझा, वह पानी तो है नहीं ,किंतु वहां पर इस ढंग से स्थान बना गया था जाते समय हम किसी के सरोवर को अथवा पानी के स्थान को लांघते हुए जा रहे हैं |और पानी ज्यादा हो जायेगा तो हमारी धोती गीली हो जाएगी ,तो इस प्रकार समझ कर के वह चले गए, धोती थोड़ी सी ऊपर उठा ली |बस इसी में लोग हंस गए संभव है उस समय किसी ने व्यंग किया होगा और वो व्यंग कैसा हुआ आप समझो |जिरा मनोरंजन के साथ , उत्साह के साथ आए थे और वो सब भूल गए और अब इसका तो जवाब देना ही होगा | आप समझ रहे हो ,कहां का है यह दृश्य? पांडवों के द्वारा कौरवों के साथ घटित हुआ | "अरे यह तो बात है अंधों की संतान तो अंधी हुआ होती है "|बस यह एक पंक्ति ठंडे खून को भी क्या बना देता है? गरम बना देता है उबलने लगता है ; उबलने लगा | नहीं समझे खून जो था ,खौलने लगा |खौलना समझते हो|कभी उकावली बनी हो तो देख लो कैसे खौलती है ?उकावली ,नीचे को ऊपर ,ऊपर के नीचे ,यूं होता रहता है तो उसी प्रकार

उन लोगों का खून खोलने लगासंकल्प हो गया और उसी का नाम आगे जाकर के महाभारत पड़ा .कहां की भूमिका? कहां की घटना? कहां के शब्द? और किसके मुख से ? और किसके लिए ? बस यह शब्द वैचित्र नहीं भाव वैचित्र का संपादन करता है | हमें अवश्य सोच करके ही चलना चाहिए | इसका अर्थ हमेशा हमेशा मांडा होता है | और इसका अर्थ हमेशा-हमेशा सौहार्द्रपूर्ण होता है। हम यहां पर भूल जाते हैं कि आप एक शब्द भी महाभारत की रचना कर सकता है |कवि महोदय कविता लिखना चाहे वर्षों . जिंदगी कर दें तो भी कविता पूर्ण नहीं हो पाई। और एक शब्द बोलते ही महाभारत की रचना, महाकाव्य की रचना हो गई। कैसे हो गई ? शब्दों में यह क्षमता रहती है लेकिन शब्दों में जो क्षमता आती है वह भावों के जामुन देने से ही शब्दों में यह दही जम जाता है , नहीं समझे ;शब्दों का वह दूध दही के रूप में जब जम जाता है , तो समझ लेना उसमें थोड़ा सा भी जामुन क्या होता है ? धोलो , राब जमा देता है तरलता भी सब मिट जाये . जम जावे और ऐसा महाभारत जम गया ,तो भारत को तो कोई भी नहीं जानता, लेकिन महाभारत को तो विश्व ही जानने लगा। ऐसा कोई कार्य करो जिसके द्वारा सब लोगों के जीवन में सुगंधि का विस्तार हो। किंतु हम लोगों में स्वार्थ जब आ जाता है। और मैं ही सब कुछ हूं, सामने वाला कुछ है ही नहीं ,तो फिर वह भी कहता है कि भैया आप ही सब कुछ है ऐसा नहीं .हम भी तो कुछ है। यह हमेशा हमेशा हम को ध्यान में रखना चाहिए, कि जब हम अहिंसा के उपासक हैं तो कैसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए? किसके साथ कैसा करना चाहिए ?उसके लिए हमेशा हमेशा सावधानी की आवश्यकता होती है। गोद का लड़का भी कुछ समझता है |तुम तुम सब कुछ समझो ऐसा नहीं | अभी वह कुछ बोलना नहीं जानता लेकिन जो बोलता भी नहीं जानता जो बोला जा रहा है वह किसके लिए क्या-क्या कहा जा रहा है ? यह जानता है |नहीं समझे | शब्द बोलना नहीं जानता लेकिन शब्दों की भाव भंगिमा वह तौल सब पकड़ लेता है आप मौन भी हो जाओगे ! हां स्वार्थ के कारण आप मौन हो रहे हैं तब वह आप को मौन नहीं. वाचाल बनाकर रखेंगे, ख्याल रखो और आपको उस कविता के ऊपर विपरीत तालियां ~~बजवायेंगे बजे आएंगे नहीं समझे~~ |हां – सोच कर के कविता लिखियो .बोलिओ |बड़ा कठिन होता है, कैसा लग रहा है आप लोगों को ? अच्छा लग रहा है ,महाभारत बन रहा है और अच्छा लग रहा है |ताली तो बजा दी |मतलब यह तो सोचो ताली बजवाने के लिए नहीं कह रहे हैं ? मतलब आप लोगों के शब्दों में यदि भाव ~~[illegible]~~ आ जाता है उसका परिणाम किस ~~[illegible]~~ प्रकार निकल सकता है | इसीलिए पांडवों को जो व्यक्ति विशेष रूप से जानना चाहता है उसके लिए सोचना चाहिए कि उनका अहिंसा पक्ष का कितना काम हुआ है? वह महत्वपूर्ण है पुराण ग्रंथ में कई पात्र होते हैं तो एक एक पात्र जो है वह भिन्न भिन्न काम कर जाता है और मूल सूत्रकार कौन है हम नहीं बता सकते | क्योंकि हमें दोष लग जाए इसलिए किसी पक्ष को न कह करके। इस प्रकार घटना घटी थी और वह महाभारत बना | तो इसके कौन सूत्रकार है एक बार पांडव पुराण पढ़ लो तो कहां से ये कथा जुड़ जाती हैं। बहुत अच्छा होगा नहीं समझे इसके माध्यम से आप कम से कम तो आप पांडव पुराण पढ़ लेंगे और वह सूत्र महत्वपूर्ण निकाल लेंगे और आगे जाकर के इस प्रकार के सूत्र वचन हम अपने मुख से ,नहीं समझे यह सूत्र वचन है 1-1 वचन के द्वारा महाभारत की रचना हो जाती है |तो कभी-कभी आप लोगों के मुंह से भी ये शब्द निकल जाए तो बहुत बड़े-बड़े ग्रंथों की आवश्यकता नहीं पड़ती और उसके द्वारा किसी का बुरा भी हो सकता है , और किसी का भला भी हो सकता है |इसीलिए आपने बलों का प्रयोग करते समय सावधानी बरतेंगे | अहिंसा परमो धर्म की जय ! ॐ

Notes रक्षाबंधन Date

7-8-17 "स्वाश्रित भक्ति करें" प्रातः 9.20

आज श्रेयांसनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक आप सभी ने मनाया। पूजन के साथ वात्सल्य के धनी की भक्ति की। हमारी ये भक्ति ही मुक्ति में परिणत हो जाये। क्यों मुक्ति नहीं बन सकती? हम एक-एक क्षण भक्ति करें तो बन सकती है। किन्तु मन का स्वभाव विपरीत है। मन का स्वभाव है तो आप एक बार मन की बात सुन लो, एक बार मन को कह दो कि हे मन! बात मान ले।

हम यूं ही बैठे रहेंगे। साथ नहीं हो रहा हो तो अपने आप ठिकाने आ जायेगा। किन्तु मन आपका ठिकाने है ही नहीं। यदि ठिकाना पाना है तो मन को छोड़ दो। अपने आप बछड़ा-गैया के पास जैसे आ जाता है वैसे आ जायेगा। सखा-प्यासा आयेगा कहाँ? क्यों की हमने पाल रखा है, इसे बांध भी सकते हैं।

ये बांधने की प्रक्रिया है। एक बार मन को बांध लो तो आपका बेड़ा पार हो जायेगा। बेड़ा पार की रट तो लगा रहे हैं। (भजन गाने वाले) बेड़ा क्या है उसे समझो। मैंने देखा ढोलक की आवाज तो आ रही है पर बजा कौन रहा है, दिख ही नहीं। आवाज सुनाई दे रही है। आजकल ऐसा हो गया वही वादक भी है वही गायक भी है, वही नर्तन करने वाले नूपुर की आवाज करने वाला भी है। बिल्कुल व्यवस्थित कर रखा है और सब कुछ वो ही करते हैं।

आपको ज्ञात नहीं हो पाता। अभी बीच में कहा गया: ढक आवाज में भक्ति के साथ अच्छा लगा। मैंने देखा ज्यों ही वह बंद हो गयी - थिरकन समाप्त क्यों की वह P.T.O.

बंद हो गया। ऐसी पराश्रित भक्ति हमें समझ में नहीं आयी, आपको भर आ गयी। तालीयाँ भी बजा दी। भक्ति तो ऐसी हो कि दुनिया के सारे सेकेन बंद भी हो जाये तो भी भक्ति चलती रहे - चलती रहे। मैं हमेशा कहता हूँ एक बार ऐसी झालर बजा दो और बंद कर दो जिसकी ध्वनि युगो-युगो तक सुनाई देती रहे। कानभर बंद मत करो बाकी सब ठीक है।

झालर तो झालर होती है। गुरु महाराज ने जो झंकार सुनाई वह आज भी ज्यों की त्यों चल रही है। युगो-युगो का समय बीत गया फिर भी तीर्थंकरो की ध्वनि आज भी सुनाई दे रही है। हम सुनेंगे ध्यान से तो ही सुन पायेंगे। हम उस मन को इस ढंग से तैयार करें ताकि उद्देश्य प्राप्त कर पायें।

जब तक वह तैयार नहीं होता तब तक मोक्षमार्ग भी मिलेगा नहीं। मन के विजेता बनना जरूरी है। मन के विजेता नहीं तो कितनी भी गिनती करो अथवा विनती करो कोई कार्य होने वाला नहीं। जैसे गिनती का महत्व तभी जब अंक का प्रयोग। शून्य का महत्व तभी है। आज मध्याह्न में भी विशेष कार्यक्रम रखा है। विष्णुकुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि मुनिराजो की पूजा का कार्यक्रम भी रखा है।

कहा गया बड़ी धूमधाम से यह कार्यक्रम करना है। घर से यहाँ आने पर भी धाम साथ में चल रहा है। आज सोमवार है - श्रावण मास का अन्तिम सोमवार। आये थे तब भी सोमवार

था। श्रावण मास का प्रारम्भ हुआ था। आज श्रावण एक वर्ष के लिए विदाई ले रहा है। इस प्रकार एक मास समाप्त ही गया। अब चातुर्मास नहीं तीन मास ही रह गया।

"समय को बचाना तो संभव है पर रोकना संभव नहीं।" समय से रुकने को कहा तो समय ने कहा ये भर नहीं कर सकते बाकी सब कर सकते हो। हमारे पास भी बहुत से प्रार्थना-पत्र आ गये। शिकायत होगी हमारी बात देखी भी नहीं गयी - सुनी भी नहीं गयी। कठोर होना पड़ता है। किमती चीज के लिए आप क्या करते हो? बिना सोचे ही हव कह देते हो? नहीं।

समय को दिया नहीं जा सकता। समय है तो हमारे पास फिर क्या कमी है। फिर तो बेड़ा पार हो जाते हैं। हम नाव का महत्व ही नहीं समझते। समझने का पुरुषार्थ भी करते तो भी बात बहुत अच्छी है। कल पर्व का दिन नहीं था फिर भी हमने दो दिन पर्व मना लिये। ये तो ठीक है दो दिवसीय - त्रिदिवसीय ही क्या जीवन पर्यन्त चाहे तो भी नहीं मना सकते।

गलती हो जाती है। आप लोग मना रहे हैं। एक वर्ष क्यों जीवन पर्यन्त क्यों नहीं मना सकते? (संयम मोहे सब) । महाराज व्यवस्था ही ऐसी कर रखे हैं। गड़बड़ी हो गयी। जीवन पर्यन्त त्योहार मनाने में क्या बाधा है? ताली की जरूरत नहीं है। एक वर्ष में एक बार मना लेते हैं। इसलिए भगवान को न हर्ष है और न ही विषाद। हमेशा शांत बैठे रहते हैं।

धन्य हैं वे अकम्पनाचार्यादि मुनि एवं धन्य हैं वे विष्णु कुमार मुनि जिन्होंने वात्सल्य के साथ पूरे संघ का उपसर्ग

दूर किया। आपके पास वात्सल्य है तो विष्णुकुमार मुनि जरूर आपके पास आयेंगे। गठबंधन है ऐसा उन मुनिराज का।

गठबंधन सदैव हो का होता है। राजा है तो प्रजा भी है। वात्सल्य के बांध को हमेशा आपके पास इसे रखो फिर देखो। सम्यग्दर्शन स्वभाव है। स्वभाव का अर्थ ही जो सदैव साथ रहे। आप सभी अंगों से विभूषित रहेंगे। अत: ऐसे भाव हमेशा-हमेशा रखने की जरूरत है। मध्याह्न में आप लोगों ने कार्यक्रम रखा है लेकिन व्यवस्थित कार्यक्रम हो ऐसा हमारा कहना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

10-8-17 "जो मिला वह कम नहि" प्रात: ७:२०

सुनो। अब और नहीं सुनाओ। यहाँ पर तीन-चार थाली जैसे सजाकरके - सजाकरके रख गये हैं। मैं सोचता हूँ इसके बाद भी कमी क्यों है? क्या कमी है? कोई भी भ्रमर भ्रमित होकर के भी गुंजायमान क्यों नहीं कर रहा है? समझ में आया। नहीं आयेगा। अब युग पलट गया है। फूलों की जगह बनावटी फूलों ने ले ली है।

आज सही फूल कौनसा, गंध कौनसी यह पहचान भ्रमर भी नहीं कर पा रहा है। केसर - मकरंद की खुशबू ही नहीं आ रही। या तो भ्रमर का पेट भर चुका है या नासा में कुछी उड़ गयी है ज्ञात तो हो गया है भोक्ता के पास सब कुछ है पर भोग्य के पास सुगन्धी नहीं तो उसकी परिक्रमा क्यों? आपने दृश्य को तैयार तो किया है किन्तु भ्रमर को बुलाने का और भी पुरुषार्थ करना पड़ेगा। [illegible]

भावात्मक होता है। द्रव्य तो द्रव्य है और भाव-भाव ही है। ये प्लास्टिक के फूल बड़े-बड़े हैं पर गंध नहीं।

रंग तो अच्छा-अच्छा पर रंग के साथ गंध भी तो होता है। वह गंध प्रायः करके आज घटता जा रहा है। "मैं मानता हूँ कि पंचमकाल है, हुण्डावसर्पिणी है, अवसर्पिणी है बिल्कुल ठीक है पर उस काल का प्रभाव जीव तत्त्व पर पड़े जरूरी नहीं।" एक-आध तो भ्रमर होता है। मैं आ गया हूँ क्यों कि कुछ गंध की उपस्थिति है।

समवशरण में देव असंख्यात होते हैं और मनुष्य संख्यात फिर भी मनुष्य का अस्तित्व अलग ही है। वे मनुष्य मात्र ढाईद्वीप में ही रहते हैं फिर भी तीन लोक को गुंजायित कर देते हैं। मनुष्यों में जो तीर्थंकर होते हैं, पूरा तीनलोक उनसे सभी देवी-देवता आदि प्रभावित होते हैं। भावों की प्रीति उन्हें देख स्वयं ही कर लेता है। हम उनकी भक्ति कर लेते हैं, इसलिए वे प्रसन्न होते हैं।

होते तो होंगे? इसलिए मेरे बाद में परम्परा इन्हीं से चलेगी। आज साक्षात् भगवान नहीं पर वाणी के माध्यम से तीर्थ, उनका वह पथ, आज भी विद्यमान है। भले ही उस पथ पर से कम, लोग [illegible] रहे हैं। जैसे आसमान बहुत बड़ा है फिर भी उस विशाल आसमान में कोई जुगनू गुजरता है तो अपना अस्तित्व बता रहा है। उस अस्तित्व के कारण हम बता सकते हैं कि आज भी ऐसे विरल धर्मात्मा हैं। भले ही एक-आध हो।

यही सहारा है जो कुछ है उसे सार्थक बना सकते हो। बड़ी-बड़ी विभूतियों के दर्शन हो जायें इतना हमारा पुण्य नहीं। न ही वे आ सकते हैं। पुराण ग्रन्थों को पढ़ने से ज्ञात होता है। आज

देवी - देवता क्यों नहीं आते हैं? वैमानिक आदि देवी-देवता अथवा महापुरुषों का आना होता था आज यहाँ कोई महापुरुष नहीं है। जहाँ महापुरुष है सारे देवी-देवता वहीं चले जाते हैं। उन्हें वे उपलब्ध है।

हमारे पास सातिशय पुण्य का अभाव है। पंचम काल में सम्यग्दृष्टि जन्म नहीं लेता है जन्म लेकर सम्यग्दर्शन प्राप्त कर सकता है। विदेह क्षेत्र में सम्यग्दर्शन के साथ चले जाते हैं। वहाँ क्षायिक स० द० के साथ जन्म और यहाँ क्षयोपशम के साथ भी जन्म नहीं। तीर्थ में जन्म लेकर अन्तिम वैभव (केवली) को पा लेता है।

भव्यों को सोचना है जो मिला है उसे देख ले तो बात अलग है। बात करते रहो, एक दिन आयेगा हम उसका दर्शन कर पायेंगे। इन फूलों के माध्यम से रंग क्या मालूम हो जायेगा, इसमें गंध नहीं है। साक्षात् मिलने पर क्षायिक स० द० हो जायेगा। भ्रमर को तो यही उपलब्धि चाहिए। बस 3-4 भव से मुक्त होने का सौभाग्य, इतनी तो भावना कर सकते हैं।

जो पुराण ग्रन्थों में बताया है, उसका पान करते रहे। वह भी अलौकिक कारण होता है। इतना ही पर्याप्त समझता है। हम भ्रमर तो बन गये परन्तु सुगन्धी नाक से नहीं अन्य इन्द्रियों से कर रहे हैं। रंग देख रहे हैं। जिसका अभाव तो नहीं भावों का अभाव है। भावों को उत्कर्ष की ओर ले जाने का प्रयास करिये। एक बात और कहना चाहता हूँ जिस पर आप लोग चिंतन करना। इस पंचम काल में भी श्रुतकेवली हुए जिनका सम्यग्दर्शन क्षायिक है या नहीं यह नियम लागू नहीं हो रहा है। यह प्रश्न [illegible]

एक जिज्ञासु के तौर पर कर रहा हूँ।
इससे आप समझो।
इतना ज्ञान होने पर भी क्षायिक सम्यग्दर्शन बहुत दुर्लभ है। अथवा वो ऊपर (स्वर्ग) से या नीचे (नरक) से क्षायिक सम्यग्दर्शन लाये हो। तीर्थंकर को भी तब जब वे दीक्षित हो जाते हैं। भद्रबाहु आदि श्रुतकेवली आचार्य उन्हें क्षायिक सम्यग्दर्शन था या नहीं मैं यह कह रहा हूँ। यह बहुत दुर्लभ है।
वर्तमान में क्षायिक तो है ही नहीं क्षयोपशम की दशा उस बुड्ढे की लाठिया की तरह है। वह थुं थुं लकरा चल रहा है। अच्छे ढंग से पकड़ो। छूट जायेगा तो एक कदम भी नहीं रख पाओगे। ऐसी हीनहिन दशा है। पंचमकाल है। फिर भी भक्ति वशात विश्वास के साथ आगे बढ़ रहे हैं। भले ही जुगनू बहुत छोटा सा है पर विशाल आकाश मे भी अपना अस्तित्व तो बता रहा है।
उसके माध्यम से प्रकाश का क्या स्वरूप है हमें देखकर ज्ञात हो जाता है। अंधकार मे भी वह जुगनू ऐसा चमकता है तो तीन लोक का प्रकाश कितना अचीक होगा। इन्हीं क्षणों से - भावों से इस सूर्य का साक्षात दर्शन होगा। उसका दर्शन हो, इन्हीं भावनाओं के साथ।
अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

Notes -
- अभी आप अज्ञान मिश्रित धर्मात्मा हैं अब ज्ञानी धर्मात्मा बने। तभी कर्म निर्जरा हो पायेगी।
- रोगी की चिकित्सा नहीं, रोग की चिकित्सा हो अन्यथा वह प्रज्ञापराध है।

11-8-17 "मझदार में है समझधार" प्रातः 9:20

जब तक घड़ा मिट्टी का कच्चा रहता है तब तक वह घड़े का का रूप लेकर कार्य को पूर्ण नहीं करता है। अब आकार दे दिया, खूब सुन्दर भी लगने लगा अब वह मात्र मिट्टी का लोंदा नहीं रहा फिर भी जब तक वह तपता नहीं तब तक आप उसमें पानी आदि भर नहीं सकते।

अब जब वह तप गया ज्यों का त्यों बना रहा। कच्चा रहने पर तो जैसे ही पानी डालते बिखर जायेगा पका दिया तो एक बूंद भी बाहर नहीं जा सकती। वह पानी ज्यों का त्यों बना रहता है। ऐसा कौनसा परिवर्तन हो गया जो इस प्रकार की शक्ति आ गयी। वह कहलायेगी मिट्टी ही। मिट्टी में ऐसा पूरा परिवर्तन आ गया। ज्ञात करने की जरूरत है।

पहले यदि पानी डाल देते तो पूरी मिट्टी ही बह जाती अब एक बूंद भी लेना नहीं चाहता है। इतना ही नहीं एक गुण और है। जो कोई भी नदी पार करना चाहता है। सुन रहे हो आप। जिस मिट्टी पर अभी आप चलकर आये उस मिट्टी द्वारा आपकी प्यास बुझाना तो ठीक अब पार करना चाहते हैं वह घड़ा कहता है हमारे पास एक बूंद भी मत रखो। सामने एक लाइन बना लो उस घड़े में एक बूंद भी न आने पायें पकड़कर एक-दूसरे की लाइन बना लो।

वह कहता है-विश्वास रखो, घबराओ नहीं। कोई तैरने वाला नहीं है। हमें छोड़ दोगे तो गड़बड़ हो जायेगा। हम आपको पार नहीं करा पायेंगे। वह मिट्टी जो पैरों से कुचली जाती है जब घट का रूप धारण कर लेती

अब उस मिट्टी के सहारे क्या नहीं, पार भी कर जाते हैं।

हम सभी भी अपने जीवन को इस प्रकार का बना सके। जब मिट्टी इतनी तपस्या कर सकती है तो आप तो इतने बड़े हैं। हम दूसरों की प्यास को बुझा नहीं सकते हैं। हाँ यदि उससे सीधा दिया तो [illegible] और बढ़ जायेगी। यदि नमक खिला दिया तो बढ़ जाती है। मोह के कारण हम पंचेन्द्रिय विषयों की ओर आसक्त होते हैं परन्तु तृप्ति नहीं होती।

जैसे लवण मिश्रित जल से प्यास ज्यादा हो जाती है वैसे ही पंचेन्द्रियों के विषय से और ज्यादा बढ़ती जाती है। रात-दिन उसी कार्य में लगे रहते हैं। आपकी इन इच्छाओं को भगवान भी पूरी नहीं कर पायेंगे। हाँ, मानेंगे तो समाप्त कर सकते हैं। बुझा नहीं सकते हैं - पंचेन्द्रिय विषयों की प्यास को। जब की आज पंचेन्द्रिय के विषयों के संग्रह में दुनिया लगी हुई है।

यदि वह छूटने को हो त्यों ही परेशानी लगती है। परेशानी का कारण पंचेन्द्रिय के विषय हैं। यह बात विश्वास में आना जरूरी है। हम आपको जबरदस्ती विश्वास नहीं दिला सकते हैं। 80 वर्ष के दादा जी को अविश्वास हो सकता है और 8 वर्ष के पोता को विश्वास हो जाता है। गोद में जो है उसे विश्वास एवं जिसकी गोद में है उसे अविश्वास। क्या हो गया? बच्चा समझता नहीं अतः तुरन्त त्याग कर देता है आप ज्यादा समझने लग जाते हैं।

आपका ज्ञान आपके लिए अभिशाप सिद्ध होता है, उसे ज्ञान नहीं तो वरदान सिद्ध हो गया। दादा जी को देख, नाती-पोते क्या कहेंगे। थोड़ा सोच

सोचो तो ! महाराज ऐसा आशीर्वाद दें कि जीवन मे शांति आ जाये। शान्तिनाथ भगवान का नाम लेओ। जीवन का ठीकाना नहीं है अतः शान्ति चाहते हो तो अशान्ति के कारण को दूर करें।

इस पौद्गलिक शरीर की उम्र को न देख आत्मा की उम्र के बारे में सोचो। आत्मा की उम्र बहुत बड़ी है। वह ना जन्म लेती है और जन्म नहीं, तो मरण भी नही होता। आत्मा की ओर दृष्टि जाते ही पंचेन्द्रिय के विषय भी फीके लगेंगे। उन्हीं के कारण परेशानी हो रही है। विश्वास हो जाये तो सब ठीक हो जायेगा। बड़े का सहारा याद रखना। स्वयं भी पार और जो विश्वास करता है उसे भी पार लगा देता है वह डूब नहीं सकता है।

जीवन से पार हो सकता है। सकुते की बात आ गयी। क्यों की ऐसा न सोचें कोई आयेगा, हमें उठा ले जायेगा। शरीर के प्रति विश्वास रखें, शरीर मैं नहीं हूं। परिवर्तन आत्मा के भावों के आधार पर आता है। जो शरीर को ही सब कुछ मानता है वह अज्ञानी एवं शरीर को जो पर माने वह ज्ञानी है।

अभी तक तो हमने अज्ञान का ही पाठ पढ़ा। अज्ञान की ओर ही दृष्टि रखी। प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि आप भी अज्ञानी से ज्ञानी बन सके। हमें भी तैरने की कला सीखा दो ताकि हम भी उस पार पहुंच जायें।

अहिंसा परमो धर्म की जय !

नया हाइकू -

"मनानुकूल - आज्ञा दो, कैसे दे दूं - विधि से बंधा !!"

passion

12-8-17 "भेदज्ञान का प्रतीक श्रीफल" प्रातः 9:20

आप लोगों को श्रीफल खरीदना है, नारेल (नारियल) लेना है। दुकानदार के पास गये। उसने कहा, हाँ-हाँ अभी ही श्रीफल बाहर से आये हैं। हमें बहुत सारे लेना है। हाँ 1-2 नहीं पुरी बोरी भी ले सकते हैं। हमारे पास मात्रा काफी है। लेकिन....। लेकिन क्या? हम देखकर लेंगे। दुकानदार कहता है हमने भी खरीदा है- जाँचा है। हमने पहले ही विचार कर लिया क्यों कि आप जैसे हजारों आयेंगे।

अब इसमें से आप कोई भी उठा लिजिए। चुनना नहीं है क्यों की चुनकर लेना है तो भाव अलग है और ऐसे ही क्रम से लेओ तो भाव अलग है। चुनने का भाव क्या है? चुनने के उपरान्त देख सकते हैं। आप भी बाहर है, हम भी बाहर हैं श्रीफल का भाव तो नहीं जान सकते हैं। उठाया घुमाकर देखा अच्छा लगा। इसके उपरान्त छोटा सा पत्थर लेकर बजाकर देखा। कच्चा है तो अलग आवाज, पका है तो अलग आवाज आती है। किसी - किसी में पानी है या नहीं आवाज से जान लेते हैं।

फोड़कर चढ़ाते हैं, पानीदार है या नहीं भगवान जाने। इसके उपरान्त यु-युं कर लिया। दुकानदार कहता है हमारी सुन लिजिए युं-युं करने की क्या आवश्यकता है। भीतर का गोला कहता है मैं बोल रहा हूँ। ले जावो। दूसरा उठायेगा तो छोड़ेगा नहीं। दुकानदार सोचता है भीतर का गोला भी मेरा पक्ष ले रहा है। ग्राहक गोले से बोलता है क्या कह रहे हैं।

वह कहता है श्रीफल कितने भी चढ़ाओ भगवान के चरणों में तुम्हें मुक्ति तभी मिलेगी जब मेरी तरह ऊपर का कवच अलग कर दोगे। किसी से लगाव नहीं

नरेही से अब कोई संबंध नहीं रहा।

मैं बोलना नहीं चाहता पर भगवान के चरणों में बोल रहा हूं क्यों की मोक्षफल है, जामफल या आमफल नहीं। इसीलिए आप लोग मोक्षफल प्राप्ति हेतु चढ़ाते हो। इसका अर्थ बाहरी पदार्थों से गोले के भांति सम्बन्धों को छोड़े। वह राग को नहीं स्वीकारता हम भी नहीं स्वीकारेंगे। मोक्षफल चढ़ा रहे हो तो बाहर-बाहर से नहीं, नाटक क्यों कर रहे हो? राग को भगवान को चढ़ायेंगे नहीं तब तक राग रहता है।

उसको चढ़ायेंगे तभी राग मिटेगा। बहुत दिन से चढ़ाते आये हैं फिर भी राग मिट नहीं पाया है। थोड़ा-थोड़ा चढ़ा रहे हो ना इसलिए। भगवान जानते हैं कितना बढ़ रहा है और कितना चढ़ रहा है? दुकान पे होता है बढ़ भी रहा है-चढ़ भी रहा है। एक व्यक्ति चढ़ा रहा है सब लोगों का हाथ लगवा लेते हैं। कभी-कभी थाली घूमकर मेरे पास आ जाती है। क्यों ठीक कह रहा हूं ना, हां तो कहो। हां-महाराज।

मोक्ष सबको जाना है। इसलिए एक ही में सब लोगों का हाथ लग जाता है। इस प्रकार फल की इच्छा से फल चढ़ाते हैं। गोला कहता है- मैंने संबंध छोड़ दिया है। आप लोग नारियल भी चढ़ाते हैं- गोला भी चढ़ाते हैं। उस गोले को भी कुछ लोग ऐसे ही नहीं अपितु चाकू से उसके ऊपर का कत्थई रंग का बकला दूर कर मतलब भावों की और विशुद्धि के साथ बाहर के सब बंधन छोड़कर भगवान के चरणों में हाथ जोड़कर चढ़ाता है। इस प्रकार से स्वरूप का बोध हुये बिना रह नहीं सकता है। ये प्रतीक मात्र है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

रविवार
13-8-17 "शुभोपयोग से होता भवरोग नष्ट" प्रातः 9.20

आज आप लोगों को ये ज्ञात होना चाहिए। कि आज रविवार है। मध्याह्न मे प्रवचन होता है, रविवार को। सुबह जो थोड़े लोग आते है रोजाना उन्हें थोड़ा बहुत दे दिया जाता है। पर आज अभी भी सभाभवन खचाखच भरा हुआ है। हम सुबह मे जितना देते है उसी मे बाँट-चूट कर हिस्सा लगा लेना।

एक व्यक्ति एक दुसरे व्यक्ति के पास गया। बोला- बहुत कष्ट हो रहा है, भयानक रोग हो गया है। वैद्य जी ने उसकी नाड़ी का परिक्षण किया और अंग परीक्षण आदि भी किया कहा- आप बहुत विलम्ब से आये है। वह कहता है- हाँ पहले कार्य अच्छे से कर लेता था। अब कार्य करने मे दिक्कत होने लगी है। कार्य करने मे व्यवधान नहीं होता तो मैं नहीं आता। जब कार्य करते है तो रोग तो अपने आप ठीक-ठीक हो जाता है। आप लोगो को भी सदैव अपना कर्तव्य करते रहना चाहिए।

शरीर भी कर्तव्य करते रहो तो ठीक रहता है। विश्राम करोगे तो रोग की मात्रा बढ़ती जायेगी। तो वैद्य जी ने कहा- आपका रोग बढ़ गया है- विशेष पुरुषार्थ की आवश्यकता होगी। ठीक नहीं होगा ऐसा मैं नहीं कह रहा किन्तु जल्दी से ठीक हो जाये ऐसा भी नहीं कह रहा। जो बताया जाये उसका पालन करना होगा। जो अपथ्य है उसका त्याग करना होगा। ये दवाई जोखिम है किन्तु आस्था के साथ उपयोग करना है। वह कहता है हमारा आप पर भरोसा है और दवाई पर भी भरोसा है।

वैद्य जी ने कहा आपके शरीर में विष का फैलाव हो गया है। परहेज की आवश्यकता है। दवाई दे दी है। कैसे लेनी दवाई? रोग का निवारण तभी होगा जब

Notes Date

यह औषधी लेलो। वैद्य साहब जीभ बहुत कडवी है।
अभी तक जीह्वा ने मीठी मीठी बात चखी है अब
कडवी का भी स्वाद ले लो। कडवी में भी तो स्वाद
ही है।

आपके पास ज्ञान है। जो भी आता है कडवा-मीठा
उसे ले लेना चाहिए। आपने कहा है, तो ले लूंगा। अब
लेना प्रारम्भ हो गया, वैसे-वैसे रोग निकलना प्रारम्भ
हो गया। पूर्व की स्थिति आती गयी और रोग की सत्ता
धीरे-धीरे जाती गयी। जैसे अंग्रेज लोग धीरे-धीरे
यहां से चले गये। किन्तु अब सावधानी रखो कहीं
दोबारा अटैक न कर दे।

हाँ! वैद्य जी ऐसा ही करूंगा।
आप जैसा कहेंगे। अब मुख मीठा क्यों हो रहा है?
आपने क्या दिया था। रोग को दूर करने के लिए दवाई
दी थी। दवाई में क्या था? दवाई में विष था। विष
को विष मारता है। आपको धतूरा के बीज दे दिया।
जो धतूरा जीवों को मार सकता है वही धतूरा जीवन
भी प्रदान कर सकता है।

उस धतूरा के साथ कुछ और
भी औषधी लेते हैं। एक माह तो उसे भीगोना पड़ता
है। भीगोना जानते हैं आप लोग। हां उस धतूरा को
ऐसा औषध का रूप दिया जाता है जो प्राणों का हरण
नहीं करता रोग को हटा देता है। मारक शक्ति तो धतूरे
में अभी भी है किन्तु ऐसा औषध रूप की वह प्राणों
को नहीं रोग को निकाल देता है। सुन रहे हैं न आप
लोग। जी।

इसी प्रकार आपके पास भी अनन्तकालीन
रोग है। यदि निकालना चाहते हो तो जैसा मैं कहता
हूं वैसा करो। हम सच्चे देव-गुरु-शास्त्र की औषधि

करेंगे। उन्हीं की शजन करेंगे। महाराज! पूजन करने से तो बंध होता है न!

वही तो हम कह रहे हैं। जैसे धतूरे से प्राण नहीं जाते हैं और रोग नष्ट हो जाता है वैसे ही पूजन आदि पुण्य कार्यों से पुण्य बंधता है जिससे पाप रूपी रोग दूर हो जाता है। जब पाप रूपी रोग दूर होगा तभी आत्मा का स्वाद ले सकोगे। 8-10 मिनिट में हमने आप लोगों के लिए ये दे दिया। इस नुस्खे को कभी भूलना नहीं।

ये नुस्खा सबके लिए है। हमारे यहाँ एक दवाई-सौ रोगों को मिटा देती है। आपके यहाँ भिन्न-भिन्न रोग की भिन्न दवाई होती है, हमारे यहाँ ऐसा नहीं। दुनिया में भटकाने वाले रोग बहुत हैं। हमने जो औषधी बतायी उसकी जैसे-जैसे मात्रा बढ़ाते जायेंगे पूरा रोग समाप्त हो जायेगा। आप भी एक दिन पूर्ण स्वस्थ हो सिद्ध परमेष्ठी बन जायेंगे, बनें इन्हीं भावनाओं के साथ!

अहिंसा परमो धर्म की जय!

[स्वतंत्रता दिवस]

15-8-17 "सेना का संदेश" प्रात: 9.20

आप लोगों ने पढ़ा भी होगा और सुना भी होगा। जब कभी भी बाहर का आक्रमण होता है, उसको रोकने के लिए देश में अनिवार्य रूप से कुछ न कुछ व्यवस्था होती है। जैसे-नाव में पानी आ रहा है तो वह अतिक्रमण हो रहा है उसको रोकने के लिए डाट लगा देते हैं। पानी जहाँ कहीं भी चला जाता है, अपना अस्तित्व कायम रखता है।

इसी प्रकार देश की व्यवस्था होती है। अड़ोस-पड़ोस वाले जब कभी भी जगाते रहते हैं तो आप क्या करते हैं? आप लोग घड़ी की व्यवस्था रखते हो। घड़ी तो अपनी जगह है उससे कह देते हो-

देखो मैं सो जाऊँ तो उठा दिया करो। अब समय पर वह उठाती है तो बंद करके पुनः सो जाते हैं। आप ने अलार्म लगाया तो उठाती है पर बंद कर दिया ये आपका प्रमाद है, मोह है, अज्ञान है। एक प्रकार से रक्षा के प्रति उपेक्षा है।

एक छोटा शतरंज की बात करता हूँ। अनेक प्रकार की सेनाओं की व्यवस्था होती है। उस सेना में हाथी, घोड़े, ऊँट ही नहीं वजीर आदि भी सम्मिलित है किन्तु सबकी चाल में अन्तर है। जैसे हाथी सदैव आगे की ओर ही चलेगा पीछे नहीं आजु-बाजु जा सकता है। ऊँट सदैव टेढ़ी चाल चलता है। पुनः पीछे भी जाता है और मार्ग प्रशस्त है तो। आजु-बाजु नहीं जाता। वजीर चारों तरफ आजु-बाजु भी - सीधा भी, टेढ़ा भी एक घर - दो घर छोड़कर भी चलता है ये अधिकार है।

अब सभी पर नजर गयी - सभी का कार्यक्षेत्र देखा। सभी जहाँ भी शरण मिले घुस जाते हैं। अब आपका नम्बर आ गया। पैदल / सेना कैसे चलती है। सेना हमेशा सामने ही चलती है। दो कदम नहीं चलती ध्यान रखना। एक-एक कदम मजबूत करके चलती है। अगर कोई वार करने आया है तो टेढ़ी भी एक ही कदम चलकर अपनी रक्षा करती है। ये ध्यान में रखना है आजु-बाजु नहीं जाता और सामने कभी रुकेगा नहीं। पीछे कभी नहीं आयेगा।

यह उसका साहस नहीं समर्पण है। वह सोचता है मैं भी यदि पीछे हट जाऊंगा तो राष्ट्र की रक्षा कोई नहीं कर पायेगा। शासन, शासन होता है पर रक्षा के लिए प्रशासन की आवश्यकता

होती है। इसे देख लगा की सेना का वह अंग एक मौन साधक है जिसका पूरा जीवन देश के लिए समर्पित होता है।

जीवन इसी का नाम है। अड़ तो अड़ और खड़ा तो खड़ा ही रहेगा। इस तरह से समर्पण होने पर जब अवसान होता है तो सभी लोग उसकी स्मृति एवं समर्पण के लिए अपनी गर्दन को तो झुकाते हैं ही ध्वजा को भी झुकाते हैं। आप क्या सुनते हो? आप क्या समझते हो? जो ध्वजा कभी झुकती नहीं, राष्ट्र की शान मानी जाती है उसे भी उस सैनिक की शोक सभा - मौन सभा में झुकाते हैं जो प्रतीक मानी जाती है।

राष्ट्र उसके उस समर्पण द्वारा आगे बढ़ जाता है। उसके सामने अभिमान नहीं यह समर्पण है उसका। भगवान का शासन भी ऐसा ही होता है। उन्हें कह देते हैं आपके बिना चलना संभव नहीं है। वीर-शासन माना जाता है। आप लोग भी उस सैनिक की भाँति हिंसा को पछाड़कर अहिंसा की ध्वजा गाड़ने का सम्यक् पुरुषार्थ करें। वर्षों पुराना वह वीरशासन पुनः आ जाये। अहोभाग्य मानकर करें। आज का व्यक्ति धन देकर करना चाहता है। धन तो जड़ वस्तु होती है। तन-मन-सर्वस्व भी यदि लगा देंगे तो बाधा नहीं।

ध्वजा चलता रहेगा तो जीवन बना रहेगा। ध्वजा झुक जायेगी आक्रमण चालू ही रहेगा। अपनी परम्परा, अपनी संस्कृति के योगदान को प्रयोग में लाने की आज परम आवश्यकता है। समय पर और अधिक कहूँगा अभी तो इतना ही। शतरंज के बिना खेल नहीं। यह छल नहीं है। दक्षिण में इसे बुद्धि-बल के नाम से जाना जाता है। आज वही खेल मुझे याद आ रहा है जो शतरंज

की रक्षा के लिए अनिवार्य है।

अभी यहाँ आ रहे तो पहले बताया नहीं। मार्ग परिवर्तित कर दिया। कदम चला तो पता लगा (डारोहण)। हमारी स्वतंत्रता तो सदैव महावीर शासन में है। किसी भी राष्ट्र के लिए हिंसा नहीं अहिंसा का मार्ग ही जरूरी है। हम अहिंसा परमो धर्म की जय बोलते हैं। अतः चाहे राजनीति हो, अर्थनीति हो, धर्म नीति हो सभी में अहिंसा की ही ध्वजा फहराना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

16-8-17 "कैसे उतरे कर्म रूपी सर्प का जहर" प्रातः 9.20

एक व्यक्ति जो घूमने के लिए गया और वह पगडंडी से गया। अब पगडंडी से जाने पर आजू-बाजू घास ज्यादा मिली अतः काफी घूमकर गया। आते समय उसे एक सर्प सामने से काट लिया। अब घर तो जाना ही है। पर घर जाते-जाते यदि बेहोश हो गया तो क्या होगा? घर पर पहुँचा घर वालों को बता दिया। (ए क्या कर रहे हो? मंगलाचरण हो गया, सुनने बैठे हो या ये करने - mob. से फोटो लेने पर कहना)

घर वाले घबरा गये। अब क्या करें? पर वह नहीं घबरा रहा है। डाक्टर/वैद्य भी दूर थे। तभी एक ग्रामीण व्यक्ति ने कहा - थोड़े से नीम के पत्ते ले आओ। हम बता देंगे। तब तक जीभ में भारीपन आने लगा था फिर भी होश-हवाश से बोल रहा था। अब नीम की पत्ती खाया ऐसे जैसे आप रसगुल्ला खाते हैं। ग्रामीण ने कहा - ये ही इसकी पहचान है। इसके शरीर में विष फैल गया है। इसीलिए इसे कड़वी चीज मीठी

लग रही है।

इस पर जहर का प्रभाव पड़ा है। अब इसे कैसे उतारें। उसने कहा उतारने में समय लगेगा। पहला तो यह की ये घबड़ाये नहीं। दूसरा सो जाये तो फिर कुछ नहीं होगा जाग्रत रहना जरूरी है। सुन रहे हैं आप लोग। समय लगेगा इस रोग को ठीक करने में। हम सभी अज्ञान दशा में ऐसे काम कर जाते हैं। कर्म रूपी सर्प ने काट खाया बेहोशी में आ जाते हैं। शब्द कटु (कडवे) लगते हैं किन्तु भीतर ऐसे गये रग-रग में पहुँच जाते हैं। नचाना प्रारम्भ किया नाचना प्रारम्भ कर देते हैं।

लोग कह रहे हैं जो नृत्य करने वाला होता है उसी से नृत्य कराया जाता है। सेवन किया नाचने लग जाता है। बस उसी जहर के पास रहता है। इधर से उधर और इधर से इधर नशे में ही रहता है। इसी प्रकार की अवस्था मोह के कारण होती है। अभी विषय अच्छे लग रहे हैं इसका अर्थ सम्यग्दर्शन का प्रभाव नहीं दिख रहा। नहीं पड़ता- ऐसा नहीं है। जो हो रहा है वह नहीं होना चाहिए। संसार शरीर और भोगों से बचने का भाव होना चाहिए। बच नहीं पाता ये अलग बात है।

व्रत- नियम - संयम आदि लिये जाते हैं। दो-तीन दिन पूर्व मध्याह्न में कार्तिकेयानुप्रेक्षा के समय कहा था अनन्तानुबंधी एवं अप्रत्याख्यान दोनों ही अप्रशस्त प्रकृति है। ज्यों ही संयमासंयम ग्रहण कर लेते हैं शुभ लेश्या ही मात्र रहती है। सर्प ने काट लिया है। थोड़ा व्रत - संयम लेलो, आवश्यक है।

(फिर से फोटो लेने पर -

प्रतिदिन कहते हैं। हम कहना चाहते हैं आप कोर्ट में जाते हैं तो ऐसा करते हैं। ईमानदारी से बताना। महाराज जी

ऐसा नहीं करते। करेंगे तो फाइन अथवा कारावास हो जायेगा। पक्का - जानते हैं।

वहाँ पर मूर्ति-देवता-खास में रखते हैं। यहाँ पर। यहाँ पर तो देखने ही नहीं। आवाज भी कर रहे हैं और ये तो। प्रतिदिन का काम है। फिर भी मन्दिर में - प्रवचन में आदि में तो ऐसी बातें नहीं होना चाहिए। विदेश में ऐसा नहीं होता। (यद्यपि मैं विदेशी संस्कृति को अच्छा नहीं मानता परन्तु इस मामले में वे ठीक हैं। किसी भी व्यक्ति की फोटो बिना अनुमति के नहीं ले सकते हैं। पूछकर ले सकते हैं किन्तु मैं आज्ञा दूँगा तब तो।

थोड़ी दया कर दूँगा तो मुश्किल में पड़ जायेंगे। भगवान के मन्दिर में ऐसा नहीं करो। मन्दिर में तो हाथ जुड़े रहें, मुख से नमोऽस्तु निकले। एवं एकाग्रता के साथ दर्शन-स्तुति आदि करें। ये बात जहाँ से आये हो सभी तक पहुँचा देना। ऐसा करने पर ही गुरुओं के प्रति विनयभाव / नम्रता आयेगी, जो सम्यग्दर्शन की भूमिका भी बना सकते हैं। बहुत बड़ा काम होगा। इतना ही पर्याप्त समझता हूँ।]

नीम जब तक मीठी लग रही है समझ लेना जहर अभी काम कर रहा है। इस जहर से बचने के लिए असंयम से संयम की ओर आना होगा। भले ही थोड़ा चले किन्तु जीवन में कुछ नियम - संयम से लिखें लेश्या में भी परिवर्तन निश्चित होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। हिं

व्याहस्ह -
"दोनों न चाहो, एक-दूसरे को या, दो में से एक"
(कोई भी एक)

प्रकार से नहीं। उसको तो किचड़ आदि उतार जा सकता है। आप पर पक्का रंग चढ़ चुका है। अब हमारा रंग चढ़ाना चाहते हो तो पहले जो चढ़ चुका है उसे घिसकर उतार दो।

फिर हमारा रंग चढ़ाओ। हमारा रंग ऐसा पक्का है एक हाथ में ही काम हो जायेगा चार हाथ की आवश्यकता ही नहीं। पहले समझ लो। आप लोगों का हाल होली के रंग जैसा है। वह रंग डामर जैसा चढ़ गया है उसे उतारने के लिए घासलेट तेल की आवश्यकता होगी। घासलेट डाल दो तो डामर भी उतर जाता है। पर हम घासलेट कहाँ से लायेंगे सुनते हैं बहुत महंगा हो गया है। दूसरा उससे हाथ जलने लग जाता है।

ऐसा रंग छुड़ाने में चमड़ी भी दर्द करती है। मिट्टी ऊपर से लगा दो फिर तेल लगा दो निकल जायेगा। फिर छुड़ाकर उस पर दूसरा लेप कर सकते हैं। अनादि से मोह के संस्कार चढ़े हैं। बार-बार पुरुषार्थ की आवश्यकता है, हमेशा पुरुषार्थ करते रहें। प्रतिदिन का यह पुरुषार्थ ही उस अनादि के संस्कार को हटा सकता है। थोड़े बहुत से प्रभाव नहीं क्यों की प्रतिसमय मोह का प्रभाव इतना गाढ़ा है कि जो चिपका है वह उतरता ही नहीं।

अब इसका अनुपात बढ़ाओ। उसका अनुपात बहुत कम हो तो संभव है आपकी दीवार भी देखकर हैरान हो जायेंगे। जिन्होंने अनुभव किया है इनको देखो। जिन कुसंस्कारों को धारण कर लिया है अनंतकाल भी नहीं उतरने वाला। नवीन बना रहता है। यह संस्कार चारों गति में मिलता है। फिर वैसी ही संगति (कुसंगति) मिल जाती है और

17-8-17 "कैसे चढ़े धर्म का रंग" प्रात: 9.20

आप लोगों को ज्ञात होगा, ज्ञात होगा क्या ज्ञात है ही। दिवाली के आस-पास अपनी दुकान आदि में रंग-रोगन आदि लगाकर साफ-सुथरा बनाकर रखते हैं। एक बात समझ में आती है। रंग लगाते हैं किन्तु जल्दी-जल्दी नहीं, उसे पहले साफ-सुथरा बनाते हैं, जिससे रंग चढ़ सके। बात समझ में आ रही है न। समझते तो बताने की क्या जरूरत थी।

बताना ये चाहते हैं कि कि जब रंग चढ़ता नहीं तो आप सोचते हैं एक बार नहीं दो बार लगा देंगे। रंग बैठ जायेगा किन्तु वह नहीं हुआ बाहर भीतर जो भी गंदगी/किचड़ था वह भी फूटकर बाहर आने लगा। पड़ोसी ने कहा - ज्यादा पैसे हो गए क्या? पहले साफ-सुथरा थोड़ी घुटाई आदि कर लो। घुटाई समझते हैं आप लोग। समय ज्यादा भी चला जाए कोई बात नहीं एक दिवाली न भी हो पर घुटाई पहले आवश्यक है।

अब घुटाई करके रंग फिर से लगाया गया, वह चमकने लगा। अब चाहे तो कुछ भी एक और लगा दो। समझ में आ गया। ये व्यवस्था है, ये क्रम है, पहले कौनसा - बाद में कौनसा आदि-आदि के बारे में अभ्यस्त हो जाते हैं। इस प्रकार आप ही सोचो आपकी जो आत्मा की दीवार है उस पर दिवाली नहीं उस पर तो होली ही दिख रही है। होली समझते हो? वहाँ रंग नहीं वे हटाने के रंग हैं। आप समझे। धार्मिक अनुष्ठान में बाहर के आवश्यकों के साथ भीतर जो कीचड़ हो गयी पहले उसे हटाने का प्रयास करें।

तभी धर्म का रंग चढ़ने को दिया जायेगा। अन्यथा हमारा तो माथा दुखने लग जायेगा। अभी ये कह रहे थे - हम बोरियाँ भरते हैं। दिवार भी इन

चढ़ जाता है चढ़ता ही रहता है।

हम महसूस करते हैं, फिर भी अन्तरंग के रंग का संवेदन नहीं कर पाते हैं। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि स्वयं का भी और दूसरे के लिए भी अनादि के संस्कारों का रंग कम होता जाए। अन्तरंग और बहिरंग को बहुत अच्छा बनाने के लिए संकल्प करें और रुचि भी बढ़ायें।

अच्छे ढंग से शुरुआत हेतु रुचि की आवश्यकता है। जिसकी जिव्हा नियन्त्रण में नहीं है वह कहता है- वो भी दे देना - वो भी दे देना। बच्चों के जीवन में ही ऐसे संस्कार डाले जो प्रौढ़ जीवन में काम आयें। इसमें प्रमाद नहीं करें। अपने जीवन को आगे बढ़ायें इन्हीं भावों के साथ अपनी - अपनी दीवारों को भी देख लेना, ध्यान से।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

१४-४-१७ "प्रकाशित लेखा - जोखा है कर्मों का" प्रातः ९-२०

अपने - अपने किये हुए कर्म के अनुसार संसारी प्राणी को क्षेत्र मिलता है, द्रव्य मिलता है, सम्पर्क मिलते हैं और भाव भी मिलते हैं। जब जन्म लेते हैं तो हम इसको भूल जाते हैं क्योंकी अतित में क्या किया था। इसका स्मरण एक गति में तो रहता है परन्तु एक सेकेण्ड भी नहीं लगता वह दूसरी गति में जाते ही भूल जाता है। उस स्थिति में हमारा सारा लेखा - जोखा फेल हो जाता है।

दूसरा क्षेत्र, दूसरा द्रव्य, दूसरा काल अथवा दूसरे भाव ये सब नया लेखा - जोखा नहीं है अपितु पुराने के साथ ही लगा हुआ है। उस पुराने लेखा-

जोखा में ही यह नया जोड़ दिया जाता है। अगर नहीं जोड़ेंगे तो दीवालिया होने में देर नहीं लगेगी। फिर तो होली के दिन में दिवाली और दिवाली के दिन में होली बनती है।

इन सबको भूल जाने के कारण यह स्थिति होती है। अब शुद्ध अर्हद भी किया हो तो वह कार्य अशुद्ध के रूप में स्वीकृत नहीं होता। क्यों की मान लो नरक में गया। वहाँ भी लेखा-जोखा है, किस-किस के साथ कैसा व्यवहार किया था। नरक में ही एक सामने देखा। हाँ। तू आ गयी। तूने नैन ज्योति बढ़ाने के बहाने ताकि चश्मा न लगाना पड़े मेरी आँखों में काजल लगाया था ना। वो तो मात्र बहाना था तू मेरी आँख फोड़ना चाहती थी।

काजल लगाने के बाद थोड़ी सी चिरचिराहट होती है। ऐसा वह पुत्र का जीव माँ के जीव से नरक में कहता है। भगवान को केवलज्ञानोपरान्त अंजनशलाका का प्रयोग किया जाता है। इससे प्रतिमा में दिव्यता और पूज्यता आ जाती है। नारकी को यह समझ में नहीं आती है। वह हित को अहित एवं अहित को हित के रूप में स्वीकार करने लगता है। यह उसका अज्ञान अथवा अतत्त्व श्रद्धान का परिणाम है। हमने तो खबर की थी, हमारी परम्परा में ही नहीं होता।

परम्परा का अर्थ भवों-भवों से सम्बन्ध जुड़ जाता है। मस्तिष्क में भले ही याद न हो पर आपके (Record) लेखा-जोखा में तो है। कर्मों का लेख सबके ललाट पर लिखा है। भजन बोलते हैं न आप लोग - लिखा है लेख... । भगवान ने कृपा की होगी। कर्म न ही कृपा करते हैं तथा न ही अनुग्रह। कर्म कर्म के आधीन

पश्चाताप नहीं करते। हाँ! कर्म करने वाला पश्चाताप करते हैं। कर्म कहता है- मैं क्यों करूँ?

मैंने तो जिसने किया जैसा किया- वैसा ही फल दे दिया। ऐसा दृढ़ श्रद्धान होना चाहिए। इसी आधार से भविष्य उज्ज्वल बनेगा। अज्ञान में बांधे कर्मों का जब फल मिलता है तो पश्चाताप होता है। इसी तरह सम्यक्त्व (ज्ञान) होने पर पश्चाताप होता है। उस समय उसे लगता है कि मेरा इतिहास कितना लम्बा-चौड़ा है। अभी हम 5 मिनिट भी बात भूल गये।

दूसरे के द्वारा किया हमें फल नहीं देखा, अपना कर्म ही फल दे रहा है। यह श्रद्धान हमें आगे बढ़ाता है। नष्ट किया जाता है। अब आगे भी नष्ट होना जारी रखोगे तो वह कभी पूरा नहीं होगा। तो उसे नरक में यही दिखता है कि मां मेरी आँखों को फोड़ना चाहती थी। क्यों की नरक क्षेत्र का ही ऐसा प्रभाव है। जैसा क्षेत्र जैसा द्रव्य, जैसा काल तो भाव भी वैसे ही हो जाते हैं। यहाँ का क्षेत्र आपको मिला है उसे अपने पास संभालकर रखो।

कर्म का प्रभाव समाप्त हो जायेगा। ऐसा अवसर मिला है। जो अशुभ का बहिखाता धीरे-धीरे समाप्त हो जायेगा और शुभ की प्रशस्ति लिख रहे हो। यदि ऐसे क्षेत्र में रहकर भी अशुभ की प्रशस्ति लिखोगे तो बहुत ही पश्चाताप होगा। ज्ञानी उस पश्चाताप से बचता है। अज्ञानी उसे पहचान ही नहीं पाता। किया हुआ हमारा है। हमारे खाते में लिखा है, दूसरे को बुरा कहने की बात ही नहीं है। हमारी दिमाग की कसरती ही कसरत चलती रहती है।

कसरत तो विकास में कारण होती है शक्ति आती है परन्तु कभी-कभी गलत कसरत रोग में भी कारण होती है। इसमें हमारा अज्ञान ही मुख्य है। यद्वा-तद्वा करोगे तो फल गलत ही मिलेगा। गलत न करें। देव-शास्त्र-गुरु पर दृढ़ श्रद्धान रखें। दूसरों के भले के बारे में न सोचो कोई बात नहीं है परन्तु दूसरों की बुराई के बारे में कभी मत सोचो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

19-8-17 "योग्यता को समझो" प्रातः 9.20

उपादान कारण के बिना कार्य नहीं होता है। उपादान के साथ-साथ निमित्त कारण होना भी आवश्यक है। वे बहुत प्रकार के होते हैं। योग्यता की उपस्थिति का होना भी अनिवार्य है। आम के पेड़ में आम ही लगते हैं। कलम पद्धति से आम लग सकते हैं किन्तु आम जब भी लगेगा तो आम के पेड़ पर ही लगेगा। ये कौन महानुभाव? (कोई नये सज्जन आये दिखते हैं, लाइट जलाकर फोटो ले रहे हैं। प्रकाश पर्याप्त है आप बिना लाइट फोटो ले सकते हैं।) तो मैं कह रहा था आम के पेड़ पर ही उसको देख सकते हैं। कोई व्यक्ति कह दे हम आम के बिना भी लगा सकते हैं। हाँ, लगा सकते हैं पर जड़ में नहीं टहनी पर ही लगा सकते हैं। जब भी आम लगेगा टहनी-शाखा पर ही लगेगा। आपने नीम के पेड़ पर आम लगाया कलम पद्धति द्वारा। मैं कहना चाह रहा हूँ नीम की शाखा पर आपने आम की शाखा लगायी तो आम जब भी लगेगा आम की ही शाखा पर लगेगा। नीम की शाखा पर आम नहीं

Passion

लगेगा।

जो आम कलम पद्धति से लगाया वह अपनी वंश परम्परा को नहीं भूलेगा किन्तु नीम के पेड़ पर लगाया अतः थोड़ा बहुत स्वाद नीम का जायेगा नहीं। कलम पद्धति से चल रहे हो आज। वह नहीं रहेगा पर वैसा न हुआ था, न हुआ है, न होगा।

जो कारण जिसके लिए कार्य उत्पत्ति में निमित्त है वह उसी कार्य को करे, आम कम समय में उत्पन्न न करे अथवा अन्य कारण से भी न करे। उपादान के बिना कार्य नहीं मूल तो उपादान माना जाता है। आपने देखा होगा नीम का वृक्ष था। उसके कोटर आदि में किसी तरह आम का बीजत्व पहुँच गया। अंकुरित होकर फूट गया। नीम के वृक्ष पर आम का वृक्ष उग गया ऐसा कहना गलत होगा। ऐसा श्रद्धान भी सदोष माना जायेगा।

कहीं-कहीं पर इस प्रकार की तब्दिलियाँ होती हैं। आचार्यों ने कहा उपादान की अनिवार्यता परम आवश्यक है। ये हम कहना चाहते हैं जैसे- गुलाब का फूल खिल गया खिलने की योग्यता आये बिना खिल नहीं सकती। आज का कोई भी विज्ञान नहीं जो इस प्रकार कली को खिला सके। यदि ऐसा कोई कला हो तो हम उसे देखना चाहेंगे/मिलना चाहेंगे। हाँ यह अवश्य है कि जो कली न रहकर फूल की ओर विकासोन्मुख रहता है तो 2-3 दिन पहले उसे खिला सकते हैं।

योग्यता आ चुकी हो (यह योग्यता उसकी अपनी है। योग अलग है, संयोग अलग एवं उपयोग तो अलग ही है) उपादान नहीं तो कार्य रूप में परिणत होने की क्षमता भी नहीं। क्षमता सबके साथ। प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि इनकी क्षमता किसी निमित्त को लेकर उद्‌घाटित हो जाये।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

No. 33 रविवार
२०-४-17 "आओ हटाये अज्ञान रूपी ग्रहण" प्रातः ९:२०

सो सव्वणाणदरिसी कम्मरएण णियेण वच्छण्णो।
संसारसमावण्णो ण विजाणदि सव्वदो सव्वं।
समयसार - १६०

यह गाथा आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित समयसार की है। जानना और देखना स्वभाव है। इस आत्मा के पास सब कुछ जानने - देखने की क्षमता विद्यमान है किन्तु कर्मरूपी रज से आच्छादित होने के कारण अधूरा जानता है और अधूरा जानने वाला अपने आपको कैसे जान सकेगा। यह आ० कुन्दकुन्द का भाव है। अज्ञान के कारण ऐसा हो रहा है। आपका ज्ञान अपनी ओर न देखकर पर की ओर दृष्टि रखता है।

सूर्य के पास अद्वितीय प्रकाश-प्रताप की क्षमता है। तीन लोक को प्रकाशित करने की क्षमता है किन्तु यदि ग्रहण लग जाए तो। राहू और केतू उस प्रताप का काम नहीं होने देते। आप लोगों को ज्ञात होगा की ग्रहण क्या है? दिन में ऐसा होता है कि दिन ढलने लगता है। ऐसा वह बाधक कारण उपस्थित हो जाता है। आप लोगों की भी यही दशा है। यह सूर्य ग्रहण कभी भी शाश्वत नहीं है। ऐसा नहीं हुआ की एकबार सूर्यग्रहण हो गया और वह बना ही रहे फिर आप अपने अज्ञान को कब तक ले जाना चाहते हो।

सूर्य ग्रहण को हटाना नहीं चाहते हो क्या? ग्रहण को हटाया नहीं जाता, सूर्य भी नहीं हटा सकता। वह कुछ समय के लिए ही होता है। हम अपने आप की ओर देखने लग जायेंगे तो ये अन्धकार दूर हो जायेगा। विश्वास की जरूरत है। विश्वास नहीं करते तो अज्ञान रूपी अंधकार का ग्रहण आज तक चला आ रहा है। कब तक चलेगा पता नहीं। यह हमारा दुर्भाग्य है।

अज्ञान है।

हमे विश्वास करना है। किस पर? जो बताया है हमें जिनवाणी में उस पर विश्वास करना है। ये खोज हमारे गुरुओ एवं परम गुरु सर्वज्ञ देव से मिली है। आज सर्वज्ञ नहीं है, उनसे छोटे गुरु भी नहीं है पर नहीं होते हुए भी उनके द्वारा प्ररुपित ग्रन्थ तो है। आचार्य कुन्दकुन्द ने 2000 वर्ष पूर्व जो लिखा वह आज हम सबके लिए दीपस्तंभ का काम कर रहे हैं। उनको देखने से मेरे पास वह क्षमता क्यों नहीं आ रही है, विचार करें।

ग्रहण तो मात्र अमावस्या अथवा पूर्णिमा को ही लगता है। बीच के दिनों में ग्रहण नहीं लगता। आज तक तो नहीं सुना। पूर्णिमा को लगेगा तो रात में ही लगेगा और अमावस्या को लगेगा तो दिन में ही लगता है। भिन्न-भिन्न क्षेत्र के अनुसार समय भी भिन्न-भिन्न हो सकता है। जो ग्रहण अनादिकाल से लगा है, एकबार छूट जाए फिर दोबारा नहीं लगेगा। हमारा कर्त्तव्य है उस ग्रहण को दूर करने का पुरुषार्थ करेंगे जरूर छूट जायेगा। हम हटायेंगे तो जरूर हटेगा।

आज तक तो हटा नहीं? क्यों की आपने हट नहीं की इसलिए हटा नहीं। छोटे बच्चे जब हट कर लेते हैं तो फिर देखो। किन्तु हम बहुत जल्दी कमजोर हो जाते हैं। यह आप की नहीं। धीरे-धीरे कमजोरी को हटाओगे, शक्ति बढ़ाओगे तो निश्चित रुप से अनंतकालीन राहु के ग्रहण को हटा सकते हो। संसार समापन्नो अर्थात संसार दशा में सब कुछ धुंधला-धुंधला जान रहे हैं। इसकारण न पर की सही पहचान और न ही स्व की पहचान हो रही है।

सब तो सर्वज्ञ जानते हैं, आप क्या जान पाओगे। हट करो पर गलत...

करो, सही हट करो। उसे हटना ही पड़ेगा। आज तक नहीं हट पाया इसमें गलती किसकी। अभी तक पुरुषार्थ नहीं किया अब सही पुरुषार्थ अनिवार्य है। तभी हटना सम्भव हो सकेगा।

अज्ञान दशा दूर होने पर जरूर सम्यग्ज्ञान प्रकट होगा। जो विधी बताथी उसी अनुसार करना होगा तभी अवश्य होगा। किन्तु हम अपनी ओर देखते है इसी को सब कुछ मान बैठे है। जो पूर्व के शाता है वे स्वाभिमान - अभिमान - से मुक्त होते हैं और प्रमाण से युक्त होते है। उसी प्रमाण के आधार पर अपने को पूर्णता तक पहुंचाने का पुरुषार्थ करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

इर्या पथ में →

- अधिक मात्रा में भोजन विष का काम करता है। जो मात्रा निर्धारित है उससे भी कम ले तो स्वास्थ्य अच्छा रहता है। [छींक-जंभाई]
- वेग को रोकना प्रज्ञापराध है। अतः लघुशंकादि वेग को कभी न रोके। हाँ! क्रोध - मान आदि कषायों के वेग को पुरुषार्थ पूर्वक रोको।
- वात-पित्त-कफ में असमानता होने पर उपघात कर्म का बंध होता है। - धवला जी

हम अपने से स्वयं का घात कर रहे है। दूसरों का घात हो तो परघात होता है पर स्वयं द्वारा स्वयं का ही घात होना उपघात कहलाता है। इसे स्मरण में रखें।

passion.

23-9-17 "आओ हटायें भूल" प्रात: 9.20

आप लोगो ने सुना होगा, पढ़ा भी होगा। ऐसही बात है की एक वह मणी होती है, जिसको चन्द्रकान्तमणी बोलते हैं। जैसे स्फटीक मणी और भी मणी होती हैं किंतु इस मणी की अपने आप मे और ही विशेषता है। वह यह है कि जब चन्द्रमा की चाँदनी शुक्ल पक्ष मे इस मणी पर पड़ जाती है, ज्यों ही चाँदनी का स्पर्श मणी से होता है त्यो ही उस मणी जो पत्थर की है उसमे से शुद्ध जल की धारा बहने लग जाती है।

यह सोचने की बात है कि एक मणी में से, शुद्ध जल की धारा बहने लग जाती है। ये निमित्त-नैमित्तिक संबंध है। वह मणी मे ऐसा उपादान है जो चन्द्रमा की चाँदनी का निमित्त पाकर जल छोडती है। इसको टाल नही सकते है लेकिन यदि बादल आ जाये तो, वर्षा हो गयी तो वह पानी नही आयेगा। इन दोनों का निमित्त-नैमित्तिक संबंध है। अत: मणी के होते हुए भी नहि होता यह एकान्त नहीं।

यह जैसे सिद्ध होता है, वैसे ही भगवान बहुत दूर है। भगवान को अपने ध्यान मे ला रहे है, हम उनको अपने ध्यान मे लाते है (सुन रहे हो।) वे। वे नहि आयेगे, हम भगवान को याद करते है तो निश्चित सम्यग्दर्शन आदि भी सहज रूप मे हो जाते है। भीतर से होना चाहिए, बिना उपदेश की धारा बहने लग जाती है। संसार मे कई प्रकार के व्यक्ति रहते है। देव आदि भी है पर उन्हें इस [illegible] नहीं होता।

[illegible] अब भगवान तो है पर आप दूसरे कार्य मे व्यस्त है तो नही होगा। आप अत्यन्त व्यस्त हो गये। भगवान तो भगवान मे ही रहते है किन्तु आप अपने में नहीं। दूरी चाहे कितनी भी हो आप सच्चे मन से भावना कर

Notes Date

कर रहे हैं। अपनी भक्ति द्वारा उस व्यक्तित्व को
याद करेंगे तो कर्मों की निर्जरा होती है।

एक स्थान पर ऐसा भी लिखा
है, आप बैठे हैं रसोईघर में आपका मन भक्ति में
है तो आप पर रसोईघर का प्रभाव नहीं पड़ेगा। और
आप यहाँ बैठे हैं और मन में आ रहा है कि दुकान
पर घाटा लग रहा है तो आपकी कर्म निर्जरा में
भी घाटा लग रहा है। पक्का। आप सामने बैठे हैं
तो भी काम होने वाला नहीं है। आपके परिणामों के
आधार पर फल मिलेगा। ये तो बहुत कठिन है। हाँ,
कठिन तो है। हम बहुत दूर से आये हैं

दूरी आपने कहाँ तय की है। मात्र शरीर
को पहुँचा दिया है। यहाँ बैठा दिया, और आप वापस
दुकान पर चले गये तो वो ही सौदा मिलेगा जो आपने
किया है। कार्य तो अपने ढंग से होता है। भक्त को
बहुत चतुर होना चाहिए। उसे हम कहाँ हैं, क्या है,
कैसा संबंध रखना है इन सबका ध्यान रखना चाहिए।
ऐसा सिद्धान्त बनाकर चलें। अपनी चाह - रुचि को
बनाये। इससे सांसारिक कार्यों में आप अपने आप ही
गौण हो जायेंगे।

जो भी कार्य करें संसार, शरीर, भोग
निर्विण्ण होकर करें। अनिच्छा पूर्वक संसार के कार्य करें।
भगवान के वचनों पर विश्वास हो गया तो आपके पास
जो कमी है उससे कर्मों की निर्जरा अवश्य होगी।
मैं न जोड़ूं ऐसा नहीं और स्क... रहा है यह भी ठीक
नहीं है। तत्व को समझकर करें। यह उदाहरण - उदाहरण
है। निमित्त - नैमित्तिक संबंध क्या है। इस उदाहरण
को अभी भूलना नहीं। आपके भीतर बहुत सी मूर्तियाँ
हैं वे अभी धूल - धूसरित हो रही हैं अतः इससे ओरवा PASSION

से तो पानी की धारा नहीं बहेगी।

आपको देखना है। उनका संबंध आत्मा-परमात्मा से है अथवा दुनिया से है। यह सभी आपके पास है आप उसे देख सकते हैं। जहाँ है, वहीं रहेगी उसकी कोई चोरी नहीं कर सकता है। आप ओर नहीं लगा रहे हैं उसकी उपलब्धि बहुमूल्य होती है। उसे गौण करके दुनिया की मणी के पीछे पड़े हैं। दुनिया पीछे है आप तो पीछे मत भागो।

अपनी-अपनी रुचि अनुसार काम होता है। एक सम्यग्दृष्टि ही ऐसा करता है। कई लोग प्रश्न पूछते हैं- भगवान कहाँ है? भक्त कहीं भी रहे भगवान तो सदैव उसके पास ही रहते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नैं

कुछ हटके —

- मन का न स्थान निश्चित है न ही विषय निश्चित है। अतः द्रव्य मन बनता और गिरता रहता है। पूरे शरीर के प्रत्येक भाग पर हमें अनुभव में आता है जैसे- सुई चुभाई गयी वहाँ- द्रव्य मन बना अगले समय में विषय भी हो जाता है।

New Ura
- पुरुष भोक्ता, नारी भोक्ती न मुक्ति, दोनों से परे"

- क्रीम निकालने के बाद सेपरेटा को दूध कहना गलत है।

- ट्यूशन की आवश्यकता क्यों? प्रमाणपत्र विद्यालय का और पढ़ाई ट्यूशन से यह गलत पद्धति है। इसमें गलती शिक्षक एवं अभिभावक दोनों की है।

- कान में गुड़ अथवा शक्कर की चासनी डालने से ठीक करना।

"What do You Want?"

२५-८-17 प्रातः ९:२०

आप लोगो को प्रायः यही बात ज्ञात होगी की सर्प हमेशा- हमेशा जहर ही उगलता है। ये आपकी अपनी धारणा हो सकती है अथवा किसी के कहने से विश्वास हो गया होगा और ये विश्वास आपका सुनने के कारण हुआ है। मात्र सुनने के कारण ही नहीं, ये ही सही है ऐसा स्वीकार कर लिया है। तभी कहते हैं- भैया सर्प तो प्राण लेवा है।

सर्प भी सोचता होगा कि ये मेरा गलत विज्ञापन किसने किया। सभी गलत ही सोच रहे हैं। मेरे बारे में ऐसा विज्ञापन की एक भी व्यक्ति सही नहीं सोच रहा। जब की इससे ठीक विपरित मेरा स्वभाव है। मैं किसी पर जहर उगलूं अथवा काटूं ये मेरे ऊपर आधारित है। सर्प से आप डरते हैं, ध्यान रखना आपसे भी हजार गुना वो डरता है। हजार गुना क्यों डरता है याद है आपको? हाँ। नाखुन लग गया आपका किसी को और वह पक गया। जहर है तभी तो पकता है। यह अलग कषायिकी का जहर है। यह जन्मजात है, जब पर्याय जायगी तभी जायेगा।

तो वह सर्प कहता है कि मेरे बारे में भले ही आपकी जो भी धारणा हो पर मैं समझदार हूँ, काटने पर ही जहर चढेगा और काटना मुझ पर निर्भर है। फिर मेरे पास मात्र जहर ही नहीं मौलिक मणि - नागमणि भी है। आपने प्राप्त करने हेतु साधना की होगी? नागमणी का मतलब हजारों लोगो पर भी यदि जहर चढ गया हो तो उस मणी को पानी अथवा दूध में रखकर बाहर निकाल कर तथा उसे पीला दें तो हमेशा- हमेशा के लिए जहर से रहित हो जायेगा। यह कार्य करने से नहीं होगा/ होता

Passion

Notes Date:

वह यह भी आपको दे सकता है।

जैसे कर्म करते हैं वैसे ही भाव होते हैं। हमेशा-हमेशा इन भावों को सही रखने का प्रयोग करते रहना चाहिए। इससे गलत नहीं गलत धारणा भी सही हो जाती है। ये उदाहरण मैं इसलिए दिया हूँ। कि सर्प जिसके मुख में दांत होते हैं वे जहर का काम करने वाले हैं उसी सर्प के शिर में मणी होती है जो जहर उतारने के काम आती है। जीवन देने वाला भी वही है जीवन लेने वाला भी वही है।

आपके पास भी दोनों हैं। मुख में जिव्हा इन्द्रिय होती है। कहाँ पहुंचा देती है अनेक बार मौत के मुंह में धकेल देती है। इस जिव्हा के बस में होने से चक्रवर्ती भी नरक चला जाता है। 6 खण्ड और नव निधी का स्वामी सब भूल गया इस जिव्हा के वश होकर। जिस जिव्हा इन्द्रिय से लोग नरको में चले जाते हैं उसी जिव्हा के माध्यम से यदि भगवान की स्तुति करे तो अनादि का जहर भी निकल जायेगा। कौनसा काम करना चाहते हो?

फोकट में हो रहा है। एक टका भी नहीं मांगेंगे हम। अभी ब्रह्मचारी कह रहे थे "संवर टका" असली में सौ टका को संवर टका कहते हैं। इसमें कोई शक नहीं दोनों काम हो सकते हैं। इधर करे तो बंध और इधर करे तो संवर-निर्जरा। सागरोपम काल तक वह संवर होता रहता है जिन्होंने बात नहीं सुनी उसके मन में भी आस्था हो सकती है। दर-दर भटकने की आवश्यकता नहीं। विश्वास एक बार हो जाये तो क्या नहीं कर सकता।

जितना बने उतना करो जो नहीं कर पा रहे हो उसको करने की भावना रखो

उस पर विश्वास रखो। ज्ञान के माध्यम से उपयोग करो। करते जाओ - करते जाओ एकदिन पूरी शक्ति बाहर आ जायेगी तो कर्म अपने आप ही हल्के पड़ेंगे। कर्म हल्के करने के लिए यह पुरुषार्थ है।

जहर वह सर्प क्या सोचता होगा? मेरे पास है तो मणी भी है। डरता क्यों है। दोनों क्षमता तेरे भीतर है आचार्य कहते हैं किसकी आराधना कर रहा है। भावों का नियन्त्रण ही मोक्षमार्ग में सबकुछ है। हमारे जैसे कर्म का उदय होता है भाव वैसे हो जाते है यह ठीक है पर भावों में थोड़ा सा हल्कापन आ जाये तो मन्त्र सिद्ध कर सकते हैं। स्मरण मात्र से भी मंत्र-सिद्ध कर सकते हैं और उस मणी को हासिल कर सकते है।

संयम से सब कुछ हो सकता है। शास्त्रों में आता है जो संयम धारण नहीं किये है पर सम्यक्त्वाचरण चारित्र जो अविरत दशा में है उससे भी असंख्यात गुणी निर्जरा कर सकते है। यहाँ का अलग धर्म है और यहाँ से जब धर्मशाला में चले जाते हो तो वहाँ का धर्म कुछ अलग है। दोनों में बहुत अन्तर क्यों? वहाँ जाने पर भाव अलग हो जाते है।

इसलिए हमेशा-हमेशा सात्विक भाव रखो। संगति अच्छी रखो। दूसरों पर निगाह मत रखो। और फिर भी कर्म उदय में आ जाये तो उसे स्वीकार कर लो, यह तो मेरा ही कर्म है। यह क्रम सतत जारी रहेगा। पुरुषार्थ करते रहें, इसी पुरुषार्थ के माध्यम से हम बहुत कुछ कर सकते हैं। यहाँ आप बनी-बनाई रसोई की आदत नहीं करें। यह कर्म भूमी है, यहाँ तो पुरुषार्थ करने पर ही प्राप्त हो सकता है। [illegible]

नहीं लेना।

करें नहीं और मिलेगा - और मिलेगा की रट लगाओगे तो कुछ नहीं मिलेगा, धक्का मिलेगा। भावों को नियन्त्रण में रखो। तो एक ही भाव से मणी भी और जहर भी प्राप्त कर सकते हैं। इस सर्प ने भी एक ही भाव से तिर्यन्च आयु का बंध कर लिया पर तिर्यन्च आयु में भी मणी पायी। आप जब भी उसे लेने का प्रयास तो वह बिल में घुस जाता है।

कर्म उदय में ही पुरुषार्थ किया जाता है। मिथ्यात्व के उदय में ही मिथ्यात्व का नाश किया जाता है। पुरुषार्थ करने का सदैव ध्यान रखो। अभी पूजा में भी कुछ पंक्तियाँ ऐसी ही सुना थी - ऐसा ही काल आ गया है। क्या बोल रहे थे? हाँ। "क्या हो गया भगवान" भगवान कहीं नहीं गये वो वहीं हैं। बस दृष्टिपात करते जाओ अपने भावों पर निश्चित है आप भी पार हो जायेंगे। भाव सदैव आगे बढ़ने वाले हों।

हम निमित्त पर ही दृष्टि रखते हैं, उपादान पर भी दृष्टि रखना चाहिए। ये कमजोरी कहाँ से आयी। आप डरेंगे तो कर्म डरायेंगे। कर्मों से डरो नहीं। "तू चेतन यह देह अचेतन यह जड़ तू ज्ञानी" ज्ञानी होकर फिर इनसे क्यों डरता है चल पुरुषार्थ कर। जहरदार सर्प है तो उस जहर को समाप्त करने की मणी भी सर्प के पास ही है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। है

passion

25-4-17 "दीपक अथवा टॉर्च नहीं, रत्नदीपक बनो" प्रातः 9:20

आपने सुना होगा जितने भी दीपक हैं वे सब अपने तल में अंधेरा रखते हैं। इर्द-गिर्द चारों तरफ ऊपर भी प्रकाश फैल जाता है किन्तु "दिया तले अंधेरा" आत्मा ज्ञान स्वभाव वाला है वह आत्मा स्व-पर प्रकाश वाला है अर्थात स्व एवं पर को प्रकाशित करने की क्षमता है। दीपक स्व-पर प्रकाशक नहीं है। सुन रहे हैं आप!" आप लोगों को बीच-बीच में यह संबोधन जगाने के लिए देता रहता हूँ।

आज दसों दिशाओं से जैसे पक्षी आते हैं उसी प्रकार आप सब भी आ गये हैं कब से पंच चालू हो जायेंगे। जिधर आकर्षण होता है उसी ओर दृष्टि चली जाती है। आप लोगों ने Touch (टॉर्च) देखी होगी। कैसे प्रयोग करते हैं। आज तक ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो अपने आपको टॉर्च के सामने रखता हो। अब बताओ आप तक आप लोग टॉर्च का मूल्य नहीं समझे, खरीदना सब चाहते हैं तो आ जाओ हम तो मुफ्त देने के लिए तैयार हैं।

इसी प्रकार एक रत्न दीपक भी होता है। आप लोग उसका मोल नहीं समझते हैं - अनमोल है ये इसलिए इसके तल में अंधेरा नहीं होता है। पुराने समय में भजनकार - पूजनकार इसी प्रकार की पंक्तियाँ जिनमें रत्नदीपक का उल्लेख करते थे। यह रत्नदीपक आपके पास नहीं है तो कोई बात नहीं भजन में तो आ ही जाता है। मैं भगवान की पूजा रत्नदीपक से करता हूँ क्यों? क्यों कि उसका प्रकाश किसी एक तरफ नहीं चारों तरफ रहता है। उसकी लौ अद्वितीय होती है कितना भी तूफान आ जाये पर उसमें कोई भी स्पंदन नहीं होता है।

उस रत्न दीपक का

Notes Date

आँखो पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता अपितु नेत्र ज्योति और बढ़ती है। जैसे चन्द्रमा को देखने से आँखो में शान्ति मिलती है।

रत्नदीपक को भी छोड़कर स्वपरप्रकाशक उस आत्म तत्व की ओर निगाह करें। धीरे-धीरे लोग आना शुरु हो गये हैं। कल पर्व आना है। पर्व को भी सभी याद करते हैं। ब्रह्मचारी जी भी उदयपुर को छोड़कर आये हैं। अन्यत्र जाते हैं तो रखने के भाव होते हैं और यहाँ आने के उपरान्त छोड़ने का भाव होता है। अभी 15 दिन से वर्षा नहीं थी इस बार रक्षार वर्षा हो। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं सबके उपवास अच्छे से हो जायें। (रात्रि में मूसलाधार वर्षा होने पर)

भाव ये रखो की कर्म निर्जरा करना है। भगवान जैसे दाता बन गये, आप लोग भी देने की अपेक्षा सोचो अपने आप शान्ति आ जायेगी। दूसरे के लिए शान्ति के बारे में विचार करना बहुत बड़ी बात है। टॉर्च दूसरे के लिए नहीं अपने लिए होता तो यह रत्नदीपक का उदाहरण याद रखना कभी अंधेरा नहीं रहेगा। आत्मा में भी इसी तरह ज्ञानोपयोग एवं दर्शनोपयोग के माध्यम से प्रकाश फैलता है।

जैसे आकाश में सूर्य-चन्द्रमा होते हैं उसी प्रकार विशाल आत्मा रूपी गगन में ज्ञानोपयोग-दर्शनोपयोग है। वह उपयोग अनंतकाल उदय को प्राप्त हो इन्हीं भावनाओं के साथ। कल पर्व का प्रारम्भिक दिन है, हमने भी आज स्वाध्याय के दौरान अधिकार ही पूर्ण कर लिया। अभी मध्याह्न में स्वाध्याय और होना है। पर्व के इन दिनों को शान्ति के साथ आप लोग सानन्द सम्पन्न करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

passion

दिनांक - 26-8-17 से 5-9-17 तक पर्युषण पर्व पर त.सू. एवं प्रवचन अलग डायरी में है।

संस्मरण - (वैयावृत्ति में) एक बार आ०श्री गृहस्थ घर में थे। 1957 की बात है। बाल्यावस्था में 4-5 लोगों के साथ पूना पंचकल्याणक में गये थे। बारिश इतनी ज्यादा हुई की गर्भ-जन्म कल्याणक हुआ ही नहीं वैसे की 4-5 मंजील तक पानी भर गया। गाय-भैंस चौथी-पांचवी मंजिल में फंस गयी थी। अट्टे ने दीक्षाकल्याणक हो गया। लौटकर वापस आये तो बोरगांव से अपने गांव तक दूरी तो बहुत कम थी किंतु नाव से बैठकर आये। घुमकर आये तो दूरी ज्यादा हो गयी। पुरी नाव लोगों से भरी थी। बिना उपवास के उपवास हो गया। मूंगफल्ली-गुड़ अकेले खा लिया। रात में 12 बजे घर पहुंचे।

ईर्या पथ में -

- रे, अरे, यार आदि शब्दों का प्रयोग मुनिमहाराज के लिए वर्जित है।
- मरजा, हरव, गधा आदि मर्मछेदक वचन कभी न बोले।
- किसी भी व्यक्ति का नाम (चाहे महिला हो या पुरुष) लेकर नहीं बुलाना चाहिए।
- यदि मैं आशीर्वाद देता हूँ और कुछ गड़बड़ होता है तो उस असंयम का दोष मुझे लगेगा। असंयम का समर्थन करना।

जंगल जाते समय मार्ग में चर्चा -

- ज्यादा भोजन करना उपघात नाम कर्म में आयेगा। स्वयं के प्राणों का हनन करते हैं

passion

Notes Date

6-9-17 "विषयों के मीठे जहर से बचें" प्रातः 9.20

पर्व का समापन कल हो गया। उपासकों ने उपासना के माध्यम से इन दिनों में प्रभु के प्रति एवं आप्त तत्त्वों के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की है। ये अवश्य है संसारी प्राणी ज्यादा सुविधा चाहता है। सुविधा चाहना ही आपकी दुविधा का कारण होता है। जो कर्म निर्जरा करना चाहता है वह कभी सुविधा की मांग नहीं करता है। सुविधा के कारण कर्म निर्जरा रुक जाती है। हाँ बिना श्वास के शक्ति नहीं हो सकती पर श्वास लेने से पूर्व श्वास छोड़ना भी आवश्यक है।

इसलिए आचार्य समन्तभद्र महाराज ने कहा "दुःखैरन्तरितोदये......" कैसे है संसार के विषय - सुख जैसा लगता है पर ऐसा सुख जिसमें हमेशा-हमेशा दुःख ही घुला हुआ है। एक विष होता है - कड़वा एक विष होता है - मीठा। कड़वे विष से तो सब परहेज करते है पर मीठे से कोई नहीं। पदार्थ में मीठा जैसा स्वाद आ रहा है बोध ही नहीं हो पा रहा है जब खा लेता है तो वह पदार्थ भीतर से अपनी प्रक्रिया प्रारम्भ करता है। अब कैसे निकाले? वह कहता है थूक देता हूँ। थूकने से तो मात्र मुंह का पदार्थ ही बाहर वह तो ऊपर-ऊपर ही होगा। उल्टी करवा दे?

जो भीतर गया है उसकी उल्टी भी नहीं हो पाती। बड़ा दुर्लभ है यह। बस कुछ ही समय में अपना प्रभाव प्रारम्भ कर देता है। क्या चाहते है आप? जीवन चाहते है तो जहर क्यों खाया? पहले क्यों नहीं बताया। सुनो तब तो - आतम के अहित विषय-कषाय

जो इन्द्रिय संयम रखता है वह बहुत काम कर रहा है। मन का संयम रखता है। इन पांचों इन्द्रिय और मन सबको बांधकर रख देता है। इन्हें मुनिमहाराज के मूलगुणों

में से 6 मूलगुण स्वीकारा है।

ऐसा भी नहीं है कि पर्व के दिनों में तो चला ले बाद में नहीं। उनके तो सदैव रहते हैं। जैसा अभी आपका मुकाम अस्थायी था - अब स्थायी मुकाम की ओर जाओगे परन्तु यहां सभी अस्थायी मुकाम वाले हैं स्थायी मुकाम वाला कोई नहीं है। विचित्रता सी लगती है। आचार्य कहते हैं इन्द्रियों का उपयोग ज्ञान की अपेक्षा से करोगे तो कर्म निर्जरा होगी और विषयों की अपेक्षा से करोगे तो कर्म बंध। आप क्या चाहते हैं? उदाहरण के लिए अभी देख लो इन्होंने श्रीफल चढ़ाते समय नारियल तो नहीं चढ़ाया और इन जटाओं को (जटा श्रीफल) चढ़ा दिया। इसका प्रबन्ध कौन करेगा। इतनी जगह कहाँ है जो इन जटाओं को रखेंगे।

साधना वालों से कह दो, इसे साथ ही ले जाओ। इसलिए बड़ा काम तो करो। पर ये बड़ा नहीं माना जायेगा। बड़ा फल नहीं होता नहीं है। अच्छा चोलपट्टी खुल गयी। हम तो अन्तर्यामी नहीं हैं। आप ही जानो। इन्द्रिय विषय का ज्ञान और इन्द्रियज्ञान दोनों में बहुत अन्तर है। इन्द्रिय विषय हानिकारक हैं फिर भी इन्हें छोड़ नहीं पा रहे हैं। जो ऐसा हानिकारक की झट से छोड़ दो परन्तु इन्हें नहीं छोड़ते। केवल ज्ञान था सिद्ध अवस्था में जीवत्व का भी अभाव हो जाता है। होगा तभी सिद्धत्व का अनुभव होगा। उसी को ज्ञान चेतना कहते हैं।

आपके पास चेतना तो है पर ज्ञान चेतना नहीं है। उस ज्ञान चेतना को चाह रहे हो तो धीरे-धीरे उस चोलपट्टी को हटाना प्रारम्भ कर दो। अन्यथा यह सब भ्रममय है। क्या जीवन है ये अभी ज्ञात नहीं हो रहा बाद में ही ज्ञात होगा। आँखों के द्वारा ज्ञान

नहीं होगा न ही हाथों से छू सकते हो।

हमारे कौन है? कोई भी नहीं। साहेरा की बात पर ताली बजा रहे हो जो सिद्ध बने है उनके लिए तो ताली बजाओ। दुनिया के सामने दिखाना नहीं है। महाराज – इसी का नाम तो दुनिया है। यह दुनिया तो सदैव रोती – चिल्लाती रहेगी। धर्म हमारा दिखावट का नहीं है। इसके लिए धर्म नहीं है। फिर क्या है? ये नहीं है बाकी सब है। अन्यथा काहे के लिए साधना कर रहे हो। छूटेगा वही जो अपना नहीं है। जोड़ा है तो छोड़िये।

अपने हाथों से नहीं छोड़ पा रहे तो दवाई ले लो तभी वह भीतर जो चला गया है बाहर निकलेगा। आपने निरिहता से नहीं विषयों को चाव से ग्रहण किया है। निरिहता से अथवा सेवन के समय ग्लानि हो तो फिर भी जल्दी निकल जाये पर आपने ग्लानि से नहीं अपितु जीवन का तत्त्व मानकर सेवन किया है। अब वह ऐसा चिपक गया है – ३, कैसा चिपक गया है? जैसे थोड़ी सी चमड़ी उखाड़ो (घाव के समय) पसीना आ जाता है, खून आयेगा बोल उठते हैं – मारना चाहते हो क्या?

क्या मारना है पता ही नहीं है। इसको छोड़कर कौनसी साधना करना चाहते हो। मोटा होने की साधना। १० दिन उपवास किये किन्तु १० मिनिट में ही सब ठीकठाक कर लेंगे। अनन्त काल से आया है एक बार छान लो तो हो सकता है। इसे साधक बनकर ही चख सकते हैं। साधना का माध्यम बन गया तो कल्याण हो सकता है। शुद्ध ही वेतन हैं जो हम इसे क्यों दी यह हमारा काम करता है।

ज्यादा वेतन मांगो और काम कम करो तो राष्ट्र के लिए खतरा है। सुन रहे हो देखा। आज ऐसे ही करोड़ों – अरबों की संख्या में खड़े हैं। ऐसे में

Name ________ Date

भारत दिवालिया बन जायेगा। दिवालिया होना अलग है और दिवाली मनाना अलग है। आप क्या चाहते हो। भारत में और कोई कमी नहीं।

मात्र अपव्यय करना छोड़ दें तो विश्व में भारत के सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता। इतना समर्थ है भारत। शास्त्रों में इसी अपव्यय को अनर्थदण्ड की संज्ञा दी है। आप दूसरे की ऑक्सीजन को लेओ यही घोटाला है। प्राणवायु को लेकर कहाँ रखेंगे कार्बनडाई ऑक्साइड को छोड़ रहे हैं। आप भारत में यही हो रहा है। यदि ये सब ठीक हो जाये तो भारत में चार चाँद लग जायेंगे अभी तो एक चाँद की प्रतीक्षा है। सब लोगों के सिर में चाँद आ गया है। पहले सूर्यनारायण थे अब चन्द्रमा आ गया। तो कितना श्रम किया यह पता लग जाता है। मीठा जहर अद्भुत हो गया अब कड़वा खाओ तभी जाकर मंजिल तक पहुँच पाओगे। मंजिल तक पहुँचे इन्हीं भावनाओं के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

वैयावृत्ति में →

- जैसे माँ बच्चों को खिलाती-पिलाती सब है उसके बाद वह नजर भी उठाकर उन्हें नहीं देखती। नहीं तो अभी रोटी नहीं बनाने देगा अथवा काम नहीं करने देगा। करना है क्या नहीं? है।
- तुम्हें तो 14 वर्ष मिले हों तो 5 ही वर्ष मिला (गुरु वाक्य)
- 1½ घण्टे में जितनी निर्जरा उतनी। मंदिर में प्रभावना से निर्जरा हो जायेगी।
- जो गिर रहा है उसे उठाना भी जरूरी है।
- निर्णय लेने की क्षमता आती है। (व्यवहार कैसा है यह पता चलता है)

Notes

Date:

9-9-17 खेत में खाद कितनी ? प्रात: 9.20

खेती करने वाला किसान हमेशा-हमेशा अच्छी फसल आये इस हेतु योग्य खाद उसमें डालता है। जितनी आवश्यक हो उतनी डालता है और जिस समय आवश्यक हो तभी डालता है। इस बात को ध्यान में रखकर वह योग्य पूर्ति करता है। अब वर्षा होती है जो खाद डाली थी उसे फैला न करके एक ही जगह (स्थान) पर रख देता है। उस ढेर में भी बीज डाल देता है।

मिट्टी में तो बीज उग (अंकुरित) सकते हैं पर खाद में बीज जल जायेंगे। खाद जब मिट्टी में मिली रहती है तब तो बीज के अंकुरण होने में सहायक है अन्यथा जलाने में कारण। ठीक इसी तरह पैसे ही सब कुछ नहीं वो भी उस खाद की तरह जलाने में कारण हो जायेंगे। समय पर सदुपयोग करना चाहिए मात्रा के अनुसार ही करना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं महाराज! हमें बता दो - हमें बता दो। पूछते हैं। ये ज्ञाता का कर्तव्य है किन्तु आकुलता के बिना करो।

जब धरती में भी इस तरह का हो सकता है तो फिर आप यदि आकुलता करोगे तो ... । बिना कहें भी तो हो सकता है। सुन रहे हो या नहीं? हव। ये बुंदेलखण्ड का मूल मंत्र है। मोह को कम करने हेतु दान की घोषणा होती है। जिसका जितना अधिक मोह है उसका लेना मात्रा उसकी उतनी ही अधिक है। कभी-कभी यह अन्यथा भी फल जाती है। 1-2 लाख लगाने वाला था, कुछ ऐसा हुआ 25 लाख का घाटा हो जाता है। होता है या नहीं बोलो। हाथोंहाथ फलते हैं। जितना मोह की मात्रा कम करोगे उतना ही फल मिलेगा। प्रभु से प्रार्थना करता रहूँ, की सभी समय पर श्वांस लेते रहें और भगवान का भजन करते रहें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

रविवार

10-9-17 "पारदर्शी जीवन" प्रात: 9.20

आज रविवार है। मध्याह्न में प्रवचन होने की संभावना है। संभावना इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मध्याह्न अभी बहुत दूर है। आप लोगों को एक उदाहरण इस तरह देकर अपने स्वयं के आत्म चिंतन हेतु विषय देता हूँ। दूध है प्रतिदिन गिलास में देखते हैं। उसके भीतर क्या है आप नहीं देख पाते। भगोनी आदि में वह दूध है किन्तु दूध में क्या है यह नहीं दिखेगा मात्र दूध दिखेगा।

अब उसी भगोनी में दूध के स्थान पर घी डाल दिया जावे। घी जमा हुआ नहीं तरल होना चाहिए। अब उसमें देखो, वह घी हिल नहीं रहा हो, सीधे दृष्टि अंतरंग में पहुँच जायेगी। चूँकि इसमें कोई मिश्रण नहीं, दृष्टि भीतर तक चली जाती है। अब मान लो अपनी निगाह को भीतर नहीं भेजते, ऊपर-ऊपर ही देखें तो क्या दिखता है? उसमें आप अपने स्वयं का चेहरा देख लेते हैं। दृष्टि को अंतरंग से हटा उसकी सतह पर देखेंगे तो आप अपने को देख पायेंगे।

शरीर में आत्मा है यह श्रद्धान का विषय होता है। आँखें बंद भी कर लो तो भी दिखता रहता है। हाँ, स्मृतियाँ आती हैं जो वर्तमान को विस्मृत कर देती हैं। आप कहते हैं - महाराज आप तो अच्छी - अच्छी याद आ रही है। याद क्या आ रही है, वर्तमान को विस्मृत कर रहे हो। सोचो। वह पुरानी स्मृतियाँ छोड़ रही हैं और आपको हकाते (हाँकते) जा रही हैं। आप हकते चले जाते हैं। हम चाहते हैं, वह हो नहीं पाता।

पुरुषार्थ न जाने कहाँ चला जाता है। जहाँ से भी आये हैं उसका स्वाद नहीं रह पाता है।

मोक्षमार्ग में जो बैठा है वह पुराना सुख जाता है यह
भूलकर भी दुनिया में नहीं आता है। इतना ही पर्याप्त
समझता हूँ। जैसे ब्रह्मचारी जी कह रहे थे ये कलशी देखेंगे
तो आपको याद दिलायेगी, इसी तरह हमारी बात को भी
याद रखीयो। बोली को तो याद रखता है पर हमारी बोली
कोई याद नहीं रखता।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

15-9-17 "अन्तर चक्कर - फेरी - परिक्रमा में" प्रातः 9.20

अभी जो शब्द आपने सुने उसमें दो शब्द आये चक्कर
दूसरा फेरी। हम इसी में एक और जोड़ देते हैं परिक्रमा।
सुना आपने। तीनों एक जैसे दिख रहे हैं पर एक नहीं हैं।
पहला शब्द चक्कर है जैसे कहते हैं न ये तो उसके चक्कर में है।
इसका अर्थ है। फेरी का अर्थ अलग है- ये तो एक-दो साल में
फेरी लगाता है। फेरी का अर्थ दुकान-ठेला से भी लगाते हैं ये
तो फेरी लगाते हैं।

परिक्रमा करना यह पूज्यता का प्रतीक है।

दो शब्द सुना था। कह रहे थे आज सभी लोग इंगलिश के
चक्कर में हैं। अभिभावक उस चक्कर में विद्यार्थियों को
फंसा रहे हैं। भोगना उसे ही पड़ता है। आपको कभी सुना
किसी को स्वप्न इंगलिश में आया हो? स्वप्न तो बुंदेली
हिन्दी में या अपनी मातृभाषा में ही आते हैं। आप यदि
जाग्रत होंगे तभी इन छात्राओं और छात्रों को बचा सकते
हैं। यदि चाहते हैं तो अन्यथा...।

इतना ही पर्याप्त समझता
हूँ क्यों की 2 मीनिट हेतु बोला था 2 मीनिट से ज्यादा
ही हो गया होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

passion

Notes Date

23-9-17 "आराधना वितराग की" प्रातः 9:20

कई व्यक्तियों के मन में ये भाव आ सकता है कि भगवान पद्मासन में बैठे हैं अथवा खड्गासन में खड़े हैं और उनको धूप लग रही होगी इसलिए उनके ऊपर छत्र लगाया जाता है अन्यथा लगाने का क्या प्रयोजन? इसका उत्तर इतना ही है कि उनको धूप-छाया से कोई प्रयोजन नहीं रहता है। पीडाकारक- बाधक कारण उपस्थित होता है किन्तु उससे प्रभावित हो ही कोई नियम नहीं छत्र लगाने का उनकी छत्र छाया हमें हमेशा प्राप्त होती रहे इसलिए उनकी छाया हमारे ऊपर बनी रहे।

वैसे भगवान की छाया नहीं पड़ती, हाँ! छत्रों की छाया पड़ती है। संसार रूपी घाम से बचकर हम प्रभु की छाया में आ जाते हैं। इसी कारण भगवान् के ऊपर छत्र चढ़ाते हैं। दूसरी बात भगवान के दोनों ओर चंवर ढुराये जाते हैं। उन्हें कैसे हवा की आवश्यकता पड़ गयी? वैसे वे वितरागी हो गये न हवा की जरूरत है और न दवा की। और कोई हवा लग न जाय/ उपरीलू हवा की बाधा न लग जाये इसीलिए हाथों में चंवर ले प्रभु के दोनों ओर हिलाये जाते हैं। हवा की बाधा न लग जाये।

प्रभु का प्रभाव चित्त में बना रहे दुनिया का आकर्षण न लग जाये इसीलिए हम वितराग देव की उपासना करते हैं। कहीं हम राग की आग में जल न जाये इसीलिए राग और द्वेष (आग) से बचना चाहते हैं और वितराग प्रभु का सहारा लेते हैं। आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने वासुपूज्य भगवान की स्तुति करते हुए लिखा है कि "न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे, न निन्दया नाथ विवान्त वैरे, तथापि ते पुण्य गुण स्मृतिर्नः, पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः।।"
अर्थ है- हे भगवन् आपको मेरी पूजा से कोई

प्रयोजन नहीं क्योंकी आप राग से अतीत हो, इसी तरह आपको दुनिया की आलोचना से भी कोई मतलब नहीं क्योंकी आप द्वेष से ऊपर उठ गये हो। ऐसे मे पूजा वंदना से क्या लाभ है?

आचार्य कहते हैं तथापि हे भगवन्! हमारा मन जो अनादि काल से पापी है, पाप में लगा है आपके गुणगान करने से मन/दिल साफ होता है। हम पतित को पावन करने की अपेक्षा में आपकी भक्ति मे लगा हूं। हमारे पास ऐसे गुण नहीं हैं, आपकी स्तुति से वे गुण हमारे भीतर भी आ जायेंगे। इसी उद्देश्य को लेकर आप सभी प्रतिदिन देवदर्शन - स्तुति - पूजा आदि करते हो।

यह छोटा सा हमारा व्यक्तव्य हुआ। सम्यग्दर्शन की खूब पहचान है और कोई भावना नहीं। आप अपनी यह पहचान हमेशा-हमेशा बनाये रखें, इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय ॐ

ईर्यापथ में →

- मांसाहारी से आहार नहीं लेते फिर दवाइयों में अथवा भोजन में जो मिलावट हो गयी है उसेये ग्रहण क्यों करते हो। केवल मन शुद्धि-वचन शुद्धि और काय शुद्धि बोलने मात्र से शुद्ध नहीं होता। मात्र कैसेट की तरह बोलते है और आप लोग ले लेते हो ये ठीक नहीं है। शख्त होना चाहिए। पुद्गलाहार करना चाहिए।
-

२५-९-१७ "अनुशासन कठोर नहीं होता" प्रातः

आज रविवार है और मध्याह्न में प्रवचन होता है फिर भी आप लोगों ने प्रार्थना की है उसके अनुसार थोड़ा सा प्रारम्भ कर देता हूँ। फिर शेष मध्याह्न में देख लेना। डाक्टर साहब ने कहा इस दवा को ले लेना उसने बन्द शीशी को ले ली। ये भी कहा लेते समय सावधानी रखना। लेते समय हिलाकर लेना। जब चला गया तब औषध प्रारम्भ कर दी। उसने दवा न हिलाकर उस रोगी को पिला दिया।

आप ताली बजा रहे हैं। उस रोगी की क्या दशा हो रही होगी। ऐसा हमारा काम हो रहा है। हम कार्य प्रारम्भ कर देते हैं किन्तु दिशा एवं दशा को भूल जाते हैं। उस दिशा का ध्यान रखना चाहिए चाहिए शब्द भी आज के लौकिक में गड़बड़ है, इससे काम नहीं होने वाला है। मैं कहना चाहता हूँ कि उस शीशी में दवाई - घी अथवा अन्य कोई भी पदार्थ है तो उसे सुरक्षित रखने के लिए डाट का प्रयोग करते हैं। डाट नहीं लगाओगे तो सामग्री गिर जायेगी।

इसलिए शीशी पर डाट लगाना अनिवार्य है। कसकर डाट लगाये तो क्या होगा? डाट शीशी में घुस जायेगी। क्या होगा? अब सामग्री बाहर निकालोगे तो पहले वह डाट ही गले में आ जायेगी। अतः डाट लगाना चाहिए पर ज्यादा जोर से नहीं लगाना चाहिए। उसी प्रकार अभी भजन में नाम लगाये पर उनका अर्थ ज्ञात ही नहीं। वे लिखना किस अर्थ को लिये हैं। उन्होंने कहा - "कठोर अनुशासक" अनुशासक तो ठीक कठोर अनुशासक कहना, क्या कहना?

Notes Date:

अभी प्रधानमंत्री जीने किया था, देखलो क्या दशा हो गयी। थोड़ा सा कठोर तो ठीक उन्होंने कुछ भी नहीं किया। बस थोड़ी सी डॉट को कसकर लगाया।

आप सभी को उन्हें धन्यवाद देना चाहिए। मात्रा के अनुसार ही करना चाहिए। जिस प्रकार शीशी के लिए डॉट उसी प्रकार शिष्य के लिए भी डॉट आवश्यक है। बीच-बीच में उन्हें याद दिला करो ताकि अनुशासनहीनता नहीं आयेगी। चाहे देश हो या मोक्षमार्ग हो दोनो के ही संचालन मे सावधानी की जरूरत होती है, अनुशासन की जरूरत होती है। अनुशासनहीनता स्वयं के लिए ही अभिशाप सिद्ध हो जाती है।

आपका समय हो गया। सारे के सारे अर्घ्य मुम्बई वालो की ओर से ही चढ़ाये गये और भी तो आये हैं। सभी के कर्मो का नाश हो मात्र हमारे ही कर्मो का नाश हो ऐसा नहीं कहना चाहिए। सभी को मुक्ति मिले ऐसी भावना हो तभी आपका नम्बर आयेगा।

जैसा करेंगे उसी के अनुसार फलश्रुति होगी। मध्याह्न मे देख लेंगे। बहुत ज्यादा भीड़ नहीं हैं- अव्यवस्था के कारण ऐसा होता है। समोशरण मे असंख्यात जीव रहते हैं किन्तु सभी शांति से बैठते हैं क्यो कि सभी अपने-अपने मे व्यवस्थित रहते हैं। अभी सभी मुनिराज चर्या के लिए निकलेंगे। आप सभी अपने-अपने निर्धारित स्थान मे व्यवस्थित खड़े रहेंगे, ज्यादा हो हल्ला नहीं करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

passion

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	11/07/2017	मन्दिर नहीं ज्ञान मन्दिर	रामटेक क्षेत्र	1
2.	13/07/2017	आशीर्वाद		5
3.	14/07/2017	बच्चे सुनते नहीं		5
4.	16/07/2017	गुरुवर होले-होले आयेन्गे (प्रातः 09.20)		9
5.	16/07/2017	लक्ष्मी चली सरस्वती के पास (मध्याह्न 04.41)		12
6.	17/07/2017	आनन्द भीतर में है		21
7.	18/07/2017	विषयों की ईमली से बचें		22
8.	19/07/2017	प्रभु का राग - बुझायेगा आग		25
9.	20/07/2017	कैसे उतरे पपड़ी परिग्रह की		27
10.	21/07/2017	बचें कषाय की कणिका से		30
11.	24/07/2017	नियन्त्रण हो वेग पर		34
12.	25/07/2017	कर्म वेग में बहना नहीं		37
13.	25/07/2017	प्रज्ञापराध		40
14.	26/07/2017	बंध काटने का साधन अनुबंध		42
15.	28/07/2017	आस्था का गन्धोदक		46
16.	29/07/2017	अब क्रान्ति की जरूरत है		48
17.	30/07/2017	बच्चों ने जगाया बड़ो को		50
18.	31/07/2017	खुशबु भारत की		51
19.	1/08/2017	आओ बनें भविष्य वेत्ता अपने		54
20.	3/08/2017	धान के भीतर चावल		56
21.	4/08/2017	आओ भीतर चलें		58
22.	4/08/2017	जीवन्त मंत्र है वात्सल्य		62
23.	5/08/2017	अनमोल पाना है तो.....		65
24.	6/08/2017	आओ बचे महाभारत से		66
25.	7/08/2017	स्वाश्रित भक्ति करें		68
26.	10/08/2017	जो मिला वह कम नहीं		71

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
27.	11/08/2017	मझदार में है समझधार	रामटेक क्षेत्र	75
28.	12/08/2017	भेदज्ञान का प्रतीक श्रीफल		78
29.	13/08/2017	शुभोपयोग से होता भव रोग नष्ट		80
30.	15/08/2017	सेना का संदेश		82
31 .	16/08/2017	कैसे उतरे कर्म रूपी सर्प का जहर		85
32.	17/08/2017	कैसे चढ़े धर्म का रंग		89
33.	18/08/2017	व्यवस्थित लेखा-जोखा है कर्मों का		90
34.	19/08/2017	योग्यता को समझो		93
35.	20/08/2017	आओ हटायें अज्ञान रूपी ग्रहण		95
36.	23/08/2017	आओ हटायें धूल		98
37.	24/08/2017	What do you want?		101
38.	25/08/2017	दीपक अथवा टॉर्च नहीं - रत्नदीपक बनों		105
39.	6/09/2017	विषयों के मीठे जहर से बचें		108
40.	9/09/2017	खेत में खाद कितनी?		112
41.	10/09/2017	पारदर्शी जीवन		113
42.	15/09/2017	अन्तर जानें चक्कर-फेरी-परिक्रमा में		114
43.	23/09/2017	आरधना वितराग की		115
44.	24/09/2017	अनुशासन कठोर नहीं होता		117